शिक्षा का अधिकार
सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें
उत्तराखण्ड

प्रवाह

Azim Premji Foundation

अप्रैल – जून 2014

उधमसिंह नगर विशेष

बांग्ला समाज का सांस्कृतिक वैभव

उत्तराखण्ड की तराई में स्थित उधमसिंह नगर समुदायों की विविधता का एक अनूठा संगम है। मूल थाडू–बुक्सा जनजातियाँ, पूर्वी और पश्चिमी पाकिस्तान से आये बांग्ला और पंजाबी भाषी लोग। कुमाऊं और रुहेलखंड के लोग। इस तरह यह विविध नाक–नक्श, रंग–रूप, वेशभूषा, भाषा–बोली, आभूषणों, व्यंजनों और गीत–गान का अनोखा सम्मिश्रण दर्शाता है। शिक्षा में बदलाव को लेकर प्रयासरत अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन के लिए यह भू–भौतिकी निश्चित ही ज्ञान निर्माण की अनोखी कार्यशाला है। परिवेश को ज्ञान प्रक्रिया का माध्यम बनाना हमारा प्रमुख ध्येय है। फाउंडेशन समाज और शिक्षा की वास्तविक समझ हासिल करने के लिए प्रतिवर्ष इन समुदायों में से एक समुदाय के साथ 'संगम' उत्सव आयोजित करता है। अब तक कुमाऊंनी और थाडू–बुक्सा समुदायों के साथ ये आयोजन किया गया है। इस बार हम बांग्ला समुदाय को समझने की कोशिशों में लगे हैं। इसके तहत इस समुदाय के सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक वजूद को जानने और व्यक्त करने के प्रयास हो रहे हैं। दिनेशपुर, ट्रांजिट कैंप, सितारगंज आदि स्थानों में जाकर कई मेल–मुलाकात हुई हैं। यह सब प्रयास एक बड़े आयोजन की ओर ले जायेंगे। तैयारी के ही क्रम में हमने शक्तिफार्म के रतनपुर गाँव में शिक्षकों की मदद से एक कार्यक्रम किया। समुदाय के लोगों से हमें बाउल, रवींद्र संगीत, नजरूल संगीत के साथ सूफी शैली के कई गीतों और नृत्यों का ज्ञान हुआ। यह जानना सुखद आश्चर्य था कि विभाजन और विस्थापन का दंश झेलने के बाद भी बांग्ला समुदाय ने अपनी भाषा और संस्कृति को संजोये रखा है। नयी पीढ़ी इस जीवंत धारा को आगे भी बढ़ा रही है।

बदलाव की ओर

शिक्षा का अधिकार कानून (आरटीई 2009) के वजूद में आने के बाद 6 से 14 आयु–वर्ग के बच्चों के लिए शिक्षा एक बुनियादी अधिकार बन गया। इस परिस्थिति में, प्रत्येक बच्चे को शिक्षा की परिधि में लाना देश के लिए एक चुनौती बनकर सामने आया। इस बड़े लक्ष्य को हासिल करने का साझा जिम्मा सरकार, अभिभावकों, समाज और सिविल सोसाइटी पर आया। पहली पीढ़ी में पढ़ना–लिखना सीख रहे बच्चों को समझना और गुणवत्ता कायम रखना, सभी बच्चों को सर्वांगीण शिक्षा जैसी बातें विशेष ध्यानकर्षण की हैं। सबसे अधिक वंचित और संवेदनशील बच्चों की शिक्षा के लिए जिम्मेदार सरकारी शिक्षा तंत्र से उत्कृष्ट प्रदर्शन की अपेक्षा रहती है। यह एक तरह से न्यायपूर्ण, मानवीय और समतामूलक समाज के निर्माण से सीधा जुड़ा मामला है।

इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए ऐसे शिक्षा तंत्र की दरकार है जिसमें पर्याप्त ढांचागत सुविधाएँ हों, शिक्षक–शिक्षा का पुख्ता इंतजाम हो और श्रेष्ठ संस्थान हों जो देश के सबसे पिछड़े जिलों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने का काम कर सकें। इस संदर्भ में अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन देश के ऐसे कई राज्यों में काम कर रहा है, विशेषकर उधम सिंह नगर जनपद में जहाँ पारंपरिक रूप से सुविधाओं और पहुँच से वंचित बच्चों और उनके शिक्षकों को उनके सांस्कृतिक परिवेश से जोड़कर विश्व स्तरीय शिक्षा सेवाएँ और सुविधाएँ देने का प्रयास हो रहा है।

फाउंडेशन जैविक दृष्टि के साथ, व्यवस्थागत सुधारों को अंजाम देने के काम में जुटा है।

यह दृष्टि इन संदर्भों में देखी जा सकती है–

1. शिक्षक–शिक्षा तंत्र में प्रशिक्षणों, कार्यशालाओं, सेमिनारों के माध्यम से गुणवत्ता लाने का प्रयास हो रहा है और प्रधानाध्यापकों और शिक्षा कर्मियों में नेतृत्व और प्रबंधन का गुण विकसित किया जा रहा है।
   - प्रधानाध्यापकों, शिक्षक–प्रशिक्षणों, क्लस्टर स्तर के शिक्षकों, प्रधानाध्यापकों की बैठकों, सीआरसी बैठकों आदि में और मौजूदा सेवाकालीन प्रशिक्षणों को और समृद्ध करने के रूप में यह काम हो रहा है।
   - विकास खंड स्तर पर शिक्षकों और प्रधानाध्यापकों के स्वैच्छिक समूह गठित कर यह काम हो रहा है। ये समूह शिक्षकों, प्रधानाध्यापकों को केन्द्रित होने, साझा करने और एक–दूसरे के व्यक्तिगत प्रयासों से लाभान्वित होने का मौका दे रहे हैं।

   शिक्षकों के बीच से रुचि संपन्न और समर्पित शिक्षक, प्रधानाध्यापक और शिक्षाकर्मी सामने आ रहे हैं। ऐसे शिक्षकों का समुच्चय 'चेंज लीडर्स' के आकार में सामने आ रहा है जो जिले में शिक्षा उन्नयन की पहल को निरंतरता प्रदान करने का काम करेगा।
2. जनपद में वर्तमान परंपरागत ज्ञान तंत्र का संश्लेषण। ऐसे नवाचारों का सृजन करने में सफल हो पाना जो जिले की शैक्षणिक प्रक्रियाओं में मददगार साबित होंगी।
3. सार्वजनिक शिक्षा व्यवस्था में गुणवत्तापरक शिक्षा की जरूरत महसूस हो सके, इसके लिए युवाओं, अभिभावकों और समुदायों से साम्य स्थापित कर पाना।
4. अज़ीम प्रेमजी स्कूल को इस क्रम में प्रदर्शनात्मक बनाना जहाँ गुणवत्तापरक शिक्षा के उन बिन्दुओं को दर्शाया जा सके जिनकी शिक्षा व्यवस्था में वकालत की जा रही है। यह स्कूल बच्चों को उसी तरह से देखता है जैसे सार्वजनिक शिक्षा तंत्र में देखा जाना चाहिए। यह स्कूल उन उपायों को अपनाने का प्रयास कर रहा है जो जिले का कोई भी सरकारी स्कूल वंचित समुदाय के बच्चों को श्रेष्ठ मानदंडों की शिक्षा देने के लिए कर सकता है।

शुभकामनाओं सहित
बिजॉय शंकर दास

गुणवत्तापरक शिक्षा के लिए आपसी समन्वय जरूरी

कमलेश चन्द्र जोशी

अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन शिक्षा के क्षेत्र में 2001 से काम कर रहा है। संस्था शिक्षा को सामाजिक बदलाव का महत्वपूर्ण औजार मानती है। फाउंडेशन का मानना है कि शिक्षा के द्वारा ही समाज में समता, न्याय जैसे संवैधानिक मूल्यों को पोषित किया जा सकता है। संस्था ने अपनी स्थापना के उपरांत 2005 से उत्तराखण्ड में अपना कार्य शुरू किया। कार्य के शुरुआती दौर में उसके काम के फोकस में दो कार्यक्रम – 'कम्प्यूटर एडेड लर्निंग' और 'लर्निंग गारंटी कार्यक्रम' रहे।

कम्प्यूटर एडेड लर्निंग के तहत जहां कम्प्यूटर टेक्नोलॉजी द्वारा प्राथमिक शालाओं से परिचित कराना था, वहीं लर्निंग गारंटी कार्यक्रम के द्वारा प्राथमिक शालाओं में मूल्यांकन प्रणाली में सुधार पर ध्यान केन्द्रित रहा। लर्निंग गारंटी कार्यक्रम में यह बात निहित थी कि अगर स्कूल की परीक्षा प्रणाली में सुधार होता है तो उसका असर कहीं कक्षा की प्रक्रियाओं के सुधार पर भी पड़ेगा। इसके अंतर्गत प्राथमिक विद्यालयों में वार्षिक परीक्षाओं में प्रश्नपत्रों में 'केवल याद करने' की बजाय 'समझ आधारित प्रश्नों' के पूछने पर तरजीह दी गई और मूल्यांकन को शिक्षकों के अपने सीखने का स्रोत भी माना गया।

इस कार्यक्रम के अंतर्गत प्राथमिक स्तर की वार्षिक परीक्षाओं में दक्षता आधारित मूल्यांकन की बात की गई तथा कार्यक्रम को राज्य के दो जिलों उधम सिंह नगर और उत्तरकाशी में लगातार तीन वर्षों तक संचालित किया गया। आगे के वर्षों में इस तरह की मूल्यांकन प्रणाली राज्य के सभी जिलों में लागू करने के प्रयास भी किए गए। लर्निंग गारंटी कार्यक्रम के संचालन से यह बात समझ में आने लगी कि केवल दक्षता आधारित मूल्यांकन से ही स्कूलों में बच्चों के सीखने–सिखाने और कक्षा की प्रक्रियाओं में सुधार की उम्मीद नहीं की जा सकती, जब तक कि स्कूल से जुड़ी संदर्भ संस्थाओं को प्रभावी न बनाया जाए तथा शैक्षिक कार्मिकों व शिक्षकों के सतत क्षमतावर्धन के प्रयास न किए जाएं।

इसके लिए 2008 में लर्निंग गारंटी कार्यक्रम के दूसरे चरण में डायट, बी.आर.सी. व सी.आर.सी. के साथ काम शुरू किया गया और बी.आर.सी. को प्रभावी बनाने के प्रयास शुरू किए गए। बी.

आर.सी. स्तर पर अकादमिक गतिविधियों का कैलेंडर तैयार किया गया। इस कार्यक्रम के संचालन के दौरान फाउंडेशन के अंदर यह बात भी उठने लगी कि अगर वास्तव में शिक्षा व्यवस्था में कुछ बदलाव लाना है तो एक दीर्घकालिक विजन के साथ जिले में काम करना होगा। इसके लिए जिले में एक शैक्षिक संस्थान की स्थापना की बात सोचनी होगी। अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन को कार्यक्रम के अप्रोच से उभरकर संस्थानिक मोड में काम करना होगा।

इस प्रकार 2011 से अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन संस्थान की शुरुआत हुई। इन्हें राज्य व जिले में एक शैक्षिक संस्थान के रूप में विकसित करने का प्रयास आरंभ किया गया। इस संस्थान के फोकस में शिक्षक–शिक्षा और शैक्षिक नेतृत्व व प्रबंधन के कार्यक्रम रखे गए।

वर्तमान में शिक्षक शिक्षा के तहत शिक्षकों के क्षमतावर्धन के कार्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं। वहीं जिले में उनके लिए सकारात्मक वातावरण उपलब्ध कराने व सतत पेशेवर विकास के लिए विभिन्न तरह की गतिविधियां आयोजित की जा रही हैं। क्षमतावर्धन कार्यक्रम को लेकर सेवापूर्व शिक्षक प्रशिक्षण व सेवारत शिक्षक प्रशिक्षण आदि में संस्थान की सक्रिय भागीदारी रहती है। इसके अलावा शिक्षकों के सतत विकास को ध्यान में रखकर ब्लाक स्तर पर शिक्षकों के स्वैच्छिक समूह स्थापित किए गए हैं तथा पुस्तकालयों की स्थापना की गई है। प्रत्येक ब्लाक में

शिक्षकों के स्वैच्छिक समूह में करीब पन्द्रह–बीस सदस्य हैं, जिनके साथ नियमित रूप से अकादमिक बैठकें आयोजित की जाती हैं। ब्लॉक स्तर पर अकादमिक वातावरण विकसित करने के लिए शिक्षक सेमिनार आयोजित किए जाते हैं। जिले स्तर पर विषयगत शिक्षकों का समूह तैयार करने की दृष्टि से डायट के साथ मिलकर संदर्भ शिक्षक विकास का काम भी शुरू किया है। इसके लिए विभिन्न विषयों– गणित, अंग्रेजी, विज्ञान, हिन्दी आदि से जुड़ी कार्यशालाएं भी आयोजित की गई हैं तथा शिक्षकों के साथ नियमित संपर्क कार्यक्रम भी शुरू किए गए हैं।

इसी तरह डायट के सहयोग से शैक्षिक नेतृत्व व प्रबंधन कार्यक्रम के तहत चयनित स्कूलों के प्रधानाध्यापकों के साथ पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम भी संचालित किए गए हैं, जिन्हें आगे चलकर शैक्षिक कार्मिकों के साथ भी संचालित किया जाना है। इसके साथ ही कुछ चयनित प्रधानाध्यापकों के साथ नियमित स्कूल अनुसमर्थन की योजना भी बनाई गई है।

जिले में डायस डाटा के अनुसार इस समय जिले में 772 राजकीय प्राथमिक विद्यालय और 2759 शिक्षक हैं। इन विद्यालयों में 94081 बच्चे नामांकित हैं। विगत वर्षों से जिले में शिक्षा का अधिकार बिल के प्राविधान लागू किए जाने के प्रयास भी किए जा रहे हैं। फिर भी यह सुनने में आता ही है कि जिले के कुछ विद्यालयों में अभी भी एकल शिक्षक हैं, इसलिए यह जरूरी है कि इस दिशा में पर्याप्त कदम उठाएं जाएं। विद्यालयों में छात्र–शिक्षक अनुपात मानक के अनुरूप हों। सवाल ये भी है कि शिक्षकों को कक्षाओं में पढ़ाने के पर्याप्त दिन नहीं मिलते। अब भी उन्हें बीएलओ डयूटी में जाना पड़ता है। इन समस्याओं का निराकरण जरूरी है।

शैक्षिक समुदाय में एक बड़ा मुददा यह भी दिखता है कि शिक्षा प्रणाली का शिक्षकों के प्रति विश्वास कैसे पैदा हो। इस दिशा में सोचा जाना चाहिए। इसके साथ स्कूलों की सुधार प्रक्रिया में उन्हें सक्रिय भागीदार बनाना चाहिए। इस पर उनसे नियमित बात की जानी चाहिए। इसके साथ ही शिक्षा व्यवस्था को भी बच्चों के पढ़ाई–लिखाई के मुद्दों के प्रति संवेदनशील बनाने की जरूरत है। ऐसा सुनने में आता है कि स्कूल अनुश्रवण के दौरान बच्चों से केवल पहाड़ा पूछकर ही कक्षा की गुणवत्ता की जांच की जाती है। जबकि इसे एक संपूर्णतावादी नजरिए से देखा जाना चाहिए।

जिले की शैक्षिक चुनौतियों को देखें तो यह भी जरूरी लगता है कि जिले की शैक्षिक व्यवस्था का फोकस स्कूल के सीखने–सिखाने पर किस तरह से बने। इस दिशा में डायट व जिला परियोजना कार्यालय द्वारा रणनीति बनाई जानी चाहिए। अकसर फील्ड में शिक्षकों से यह बात उभरकर आती है कि हमें अन्य कार्यों में व्यस्त रखा जाता है, इस कारण स्कूल की पढ़ाई–लिखाई बाधित होती है। कभी भवन निर्माण के काम में लगाया जाता है। कभी सूचनाओं के संकलन में। उनका कहना यह होता है कि कभी यह बात नहीं होती कि उनकी कक्षाओं में क्या पढ़ाई–लिखाई हो रही है? बच्चे क्या सीख रहे हैं? कितना सीख रहे हैं? ''कौन बच्चे नियमित स्कूल आ पा रहे हैं?'' कौन नहीं आ पा रहे हैं? आदि–आदि। इसके लिए जरूरी है कि शिक्षा व्यवस्था की अकादमिक व प्रशासनिक व्यवस्था साथ मिलकर समन्वय के साथ काम करें।

इस साल से प्राइवेट विद्यालयों की प्रतिस्पर्धा में कुछ सरकारी विद्यालयों को अंग्रेजी माध्यम बनाने के प्रयास किए जा रहे हैं। इस पर शिक्षकों के साथ कोई गहराई से विचार–विमर्श भी नहीं किया गया है। इससे लगता है कि सभी स्कूलों की गुणवत्ता से ध्यान हटाकर सरकारी विद्यालयों की एक और श्रेणी तैयार की जा रही है। यहां ध्यान देना जरूरी है कि सभी स्कूलों की गुणवत्ता को ध्यान में रखकर काम किया जाना चाहिए। इसके साथ ही विभिन्न रिपोर्टों में यह बात भी उभरी है कि पांचवी कक्षा उत्तीर्ण करने के उपरांत भी बच्चे पढ़ने का अपेक्षित स्तर हासिल नहीं कर पाते। इस दिशा में ठोस प्रयास किए जाने की जरूरत है। इसके साथ ही स्कूलों की अनुसमर्थन प्रणाली किस तरह से सुदृढ़ हो, इस दिशा में भी प्रयास किए जाने की जरूरत है। बारहवीं पंचवर्षीय योजना के तहत डायट को शिक्षकों के पेशेवर विकास पर काफी जोर दिया गया है, इस दिशा में ठोस योजना बनाने की जरूरत है। यह मुद्दा हाल के वर्षों में काफी शिद्दत से उभरा है और यह माना जा रहा कि पाठ्यचर्या और पाठ्य–पुस्तकों के बदलाव की दिशा में कुछ काम किया गया है। अब जरूरत है ऐसे शिक्षक तैयार करने की जो एन.सी.एफ–2005 की दिशा में काम कर पाएं।

यह कहा जा सकता है कि जिले की शैक्षिक गुणवत्ता पर फोकस ढंग ही से। सभी संस्थाओं को मिलकर एक सुविचारित योजना के अनुसार काम करने की जरूरत है। इस दिशा में शिक्षा व्यवस्था द्वारा पहल की जानी चाहिए। इस पहल में शिक्षकों की भी पूर्ण भागीदारी होनी चाहिए।

तराई में मिनी हिन्दुस्तान उधमसिंह नगर

विवेक सिंह

उधमसिंह नगर जिले का नाम स्वतंत्रता संग्राम सेनानी उधम सिंह के नाम पर पडा है, जिन्होंने जलियांवाला बाग हत्याकांड का बदला, उसके मुख्य आरोपी जनरल डायर की हत्या कर इंग्लैंड में लिया। जिले के दक्षिण में बिजनौर, मुरादाबाद रामपुर, बरेली व पीलीभीत हैं। नैनीताल और चम्पावत जिले भी जिले से उत्तर में सीमा बनाते हैं। पूर्वी सीमा पडोसी देश नेपाल से मिलती है। यह कुमाऊं की तराई का हिस्सा है।

इस जिले को सामाजिक सौहार्द का प्रतिबिम्ब कहें तो अतिशयोक्ति न होगी, जिसमें हिन्दू, मुस्लिम, सिख, इसाई, कुमांऊनी, गढ़वाली, पंजाबी, पूर्वांचली लोगों के साथ–साथ थारू व बुक्सा जनजातीय समुदाय साथ–साथ रहते हैं। इसकी सपाट भौगोलिक संरचना तथा उपजाऊ भूमि की वजह से जिले का कृषि उत्पादन में देश में अग्रणी है। चावल, गन्ना तथा गेहूं इस जिले की प्रमुख फसलें हैं। दुग्ध उत्पादन तथा निर्यात योग्य चावल के उत्पादन में भी यह अग्रणी है।

उधमसिंह नगर प्रमुख तथ्य

प्रशासनिक खंड	7
ग्राम पंचायत	309
न्याय पंचायत	27
संकुल	44
नगर पालिका परिषद्	8
नगर पंचायत	6
ग्राम	688
पुलिस सर्कल	5
पुलिस स्टेशन	12
पुलिस पिक्केट	34
दमकल केंद्र	6
डाक घर	108
अधिकतम तापमान	40.8 डिग्री से.
न्यूनतम तापमान	1.7 डिग्री से.
कुल क्षेत्र	2542 वर्ग किमी
जिले की लम्बाई (पूर्व से पश्चिम)	170 किमी
जिले की चौड़ाई(उत्तर से दक्षिण)	15 किमी
कुल जनसंख्या	1648367
साक्षरता	72.97
कुल वन क्षेत्र	97738 हेक्टयर
बंजर क्षेत्र	3513
कुल कृषक	85649
नहरों की लम्बाई	1067.97 किमी
सिनेमा घर	10
होटल	45
स्टेडियम	2
नगर निगम	2

विकास की रोचक यात्रा

29 सितम्बर 1995 में अस्तित्व में आने से पहले उधम सिंह नगर नैनीताल का भाग था तथा अपने विकास के विभिन्न चरण में यह क्षेत्र कई नामों से जाना जाता था। जैसे कुमाऊँ सरकार, माल, मढ़ी का माल, नौलखा माल, चौरासी कोस, तल्ला देश, तराई तथा क्राउन लैंड इत्यादि। क्षेत्र को 'धान का कटोरा' भी कहते हैं। खटीमा से जसपुर तक इस जिले के दो छोर करीब 170 किमी पश्चिम से पूर्व की ओर तथा 95किमी (अधिकतम) उत्तर से दक्षिण की ओर फैले हुए हैं, जिसे तराई कहते हैं।

कभी यह क्षेत्र घने जंगलों तथा दलदली भूमि से आच्छादित तथा कठिन जलवायु युक्त होने के कारण निर्जन था। दलदली भूमि, अत्यधिक गर्मी, महीनों तक होती वर्षा, हिंसक जंगली जानवर से पूर्ण, बीमारी तथा दुर्गम रास्ते एवं परिवाहन की कमी की वजह से इस क्षेत्र ने मानव सभ्यता के बसने पर अंकुश लगा रखा था। इतिहासकारों के अनुसार, मुगल सम्राट अकबर के साम्राज्यकाल में इस भूमि को सन 1588 में राजा रूद्र चन्द को हस्तांतरित किया गया।

राजा ने तराई क्षेत्र में हो रही लगातार घुसपैठ को रोकने के लिए यहाँ स्थाई सैनिक छावनी स्थापित की। उसके उपरांत रुद्रपुर

नाम के गाँव का विकास अनवरत रूप से मानव गतिविधियों के माध्यम से अनेक चरणों में होता रहा तथा भिन्न प्रकार के रंगों से सुसज्जित इस गाँव ने आज रुद्रपुर शहर का रूप धारण कर लिया है ऐसा मानना है कि रुद्रपुर नाम राजा रूद्र चन्द् के नाम पर पड़ा तथा अंग्रेजों के शासन काल में यह एक उपनिवेश था। ऐसा भी मानना है की इस क्षेत्र का सम्बन्ध पांडव साम्राज्य के साथ भी था और कालांतर में यह कत्युरी राजवंश के शासन में आया तथा उसके उपरांत मुगलों ने इस क्षेत्र पर अपना आधिपत्य स्थापित कर निर्वाध रूप से शासन किया।

19वीं शताब्दी के शुरुआत में आईन खान, नाईन खान, थोरुब खान जैसे घुमंतू तथा बदनाम लूटेरों ने इस क्षेत्र पर अपनी दहशत तथा लूट का साम्राज्य स्थापित किया। बाद में कालू गुज्जर तथा सुल्ताना डाकू ने भी यहाँ के लोगों पर बर्बरता एवं निर्बाध रूप से अघोषित तथा आतंकित शासन किया। तब कृषि आधारित अर्थव्यवस्था अपने शैशव काल में थी।

क्षेत्र कई बार बसा तथा कई बार उजड़ा है। घटनाओं की सूची इस प्रकार है:

1335 में फिरोज तुगलक द्वारा, 1569 में हुसैन तुगादिया द्वारा, 1665 में औरंगजेब द्वारा, 1721में मोरादाबाद के वजीर कमरुद्दीन खान द्वारा तथा 1743 में हाफिज खान, पैदा खान तथा बक्शी खान इत्यादि द्वारा। 1790 में गोरखा लोगों ने तराई क्षेत्र के साथ–साथ कुमाऊं पर अपना कब्जा स्थापित किया, जोकि अवध के शासन में था। इस घटना ने अवध के नवाब को कुपित कर दिया, जिसपर अंग्रेजों की मध्यस्थता के बाद सहमति बन पायी। 1802 में नवाब मंसूर अली खान तथा ईस्ट इंडिया कंपनी के बीच एक सहमति पत्र पर हस्ताक्षर हुए, जिससे इस क्षेत्र का पूर्ण अधिकार कंपनी के हाथ में आ गया। 1835 में तराई क्षेत्र को दो भिन्न शासन में बाँट दिया गया। जिसमें एक का नाम तराई रखा गया तथा दूसरे का नाम भावर रखा गया और सन 1840 में तराई जिला अपने अस्तित्व में आया। इसके उपरांत 15 अक्टूबर सन 1891 में नैनीताल क्षेत्र को जिला बनाया गया और इस जिले में सन 1892 में तराई जिले को सम्मिलित कर लिया गया। समेकन के वक्त तराई जिले में कुल 473 गाँव थे। 1894 में इस जिले के कुछ क्षेत्र को कुमाऊं कमिश्नरी के अधीन कर दिया गया, जिससे एकत्र आय को सीधे इंग्लैंड में वेल्स के राजकुमार को उनके पॉकेट खर्च के लिए हस्तांतरित कर दिया जाता था। इस वजह से इस क्षेत्र को 'क्राउन लैंड' कहा जाने लगा। क्षेत्र में प्रमुख रूप से थारू जनजाति के लोगों का वास था तथा बाद में अन्य जाति के लोग जैसे बुक्सा, कुर्मी, राजपूत, ब्राह्मण तथा लोध भी यहाँ आकर बस। 1901 की जनगणना के अनुसार तराई क्षेत्र में 75282 हिन्दू तथा मुस्लिम एवं 97 सिक्ख, जैन और बौद्ध धर्म के अनुयाइयों का वास था।

> इस जिले के विकास की कहानी 1948 से शुरू मानी जाती है। जब हजारों शरणार्थी बंटवारे के बाद यहां लाये गए। शरणार्थियों का पुनर्वास 'उपनिवेश योजना' के अंतर्गत 164.2 वर्ग किमी के क्षेत्र में किया गया। आज यह जिला प्रमुख रूप से औद्योगिक क्षेत्र के रूप में अपनी पहचान बना रहा है।

1802–1947 के अपने उपनिवेश काल में अंग्रेजों ने इस क्षेत्र की प्राकृतिक सम्पदा का अत्यधिक दोहन किया। कृषि के लिए अनेक नहरों का जाल बिछाया।

थारू एवं बुक्सा जनजातियां इस क्षेत्र में कब और कैसे आयीं, इस पर इतिहासकारों के कई मत हैं, पर यह प्रमुख मान्यता है कि ये जनजातियां राजस्थान से अकबर के काल में पलायन कर यहाँ पहुँचीं। ये जनजातियां मानती हैं कि वे महाराणा प्रताप के वंशज हैं।

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान 1943 में यह निर्णय लिया गया कि युद्ध से प्रभावित सैनिकों के परिवार को यहाँ बसाया जाय। परन्तु भारत के आजाद होने तथा विघटन के समय इस परिकल्पना 1947 में रद्द कर दिया गया। इसके उपरांत यह निर्णय लिया गया कि इस क्षेत्र में पश्चिमी तथा पूर्वी पाकिस्तान से विस्थापित परिवारों को बसाया जाय। इस प्रकार अनेक अंतर सांस्कृतिक तथा अंतरजातीय परिवार यहाँ आकर बसे तथा इस क्षेत्र को एक मिश्रित एवं विविधताओं से परिपूर्ण स्थान बना दिया। इन्हीं विविधताओं के कारण इस क्षेत्र का अलंकरण 'मिनी हिंदुस्तान' के रूप में हुआ।

बच्चों का कोना

मेरी मन की बात

मैं बड़ी होकर अपनी जिंदगी संवारना चाहती हूँ कि मैं बड़ी होकर अपने माता–पिता का नाम रौशन कर सकूँ फिर मैं अपने गाँव या शहर में खूब नाम कमाऊँ फिर मैं अपनी जिंदगी खुलकर जिऊँ और मेरी जिंदगी में कभी भी संकट न आए और मेरे परिवार में भी न आए। क्या पता मेरी जिंदगी में भी एक ऐसा मौका आए कि मैं एक बड़ी सी ट्रॉफी जीत कर ला सकूँ और मेरे माता/पिता मुझसे इतना खुश हों कि मैं अपने पिता या माता से एक किस ले सकूँ।

कनिका, कक्षा– 5
राजकीय प्राथमिक विद्यालय, गुड़खुड़ा, खटीमा

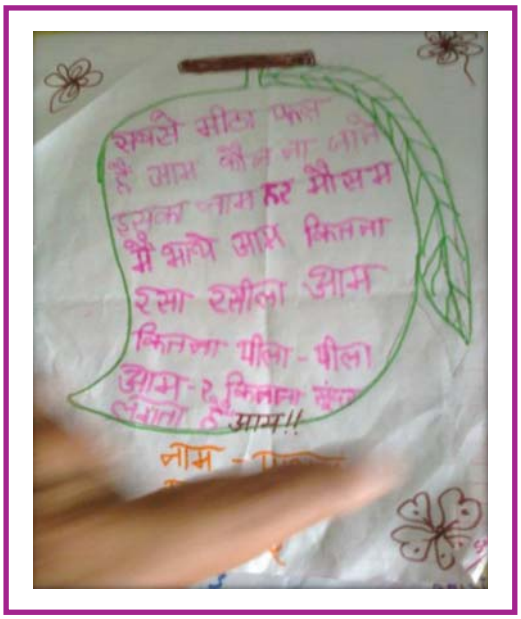

मेरा परिचय

मेरा नाम सोनम वर्मा है। मैं कक्षा पांच में पढ़ती हूँ। मेरे माता जी का नाम श्रीमती रीता देवी है। मेरे पिता जी का नाम श्री कृष्ण वर्मा है। हम चार भाई–बहन हैं। मेरे विद्यालय में तीन टीचर और एक सर हैं। मेरे स्कूल में दो भोजन माता हैं। वह खाना बनाती हैं। मुझे गणित पढना अच्छा लगता है। मुझे फल में केला, सेब पसंद है। मुझे खाने में खीर, पूरी, छोले, हलवा पसंद है। मुझे पक्षियों में मोर, तोता, कबूतर अच्छा लगता है। मुझे पशुओं में गाय और छोटे आकार के कुत्ते अच्छे लगते हैं। मुझे जानवरों में शेर, हाथी अच्छा लगता है। मुझे रंग में लाल, गुलाबी, जुगनू अच्छा लगता है। मुझे फूल में गुलाब, कमल, लाल वाला गेंदा अच्छा लगता है। मुझे डाक्टर बनना अच्छा लगता है। और मुझे लड़ना, झगड़ा और गाली देना अच्छा नहीं लगता है। मेरी प्रिय दोस्त प्रीति है।

– सोनम

मेरा मन पसंद त्योहार

मेरा मन पसंद त्योहार दीपावली है। दीपावली मुझे बहुत अच्छा लगता है। दीपावली हम इसलिए मनाते हैं, क्योंकि जब राम जी अयोध्या लौटे थे तभी अयोध्या वालों ने दीए जलाए थे। तभी से दीपावली मनाते हैं और दीपावली में हम लक्ष्मी माता की पूजा की

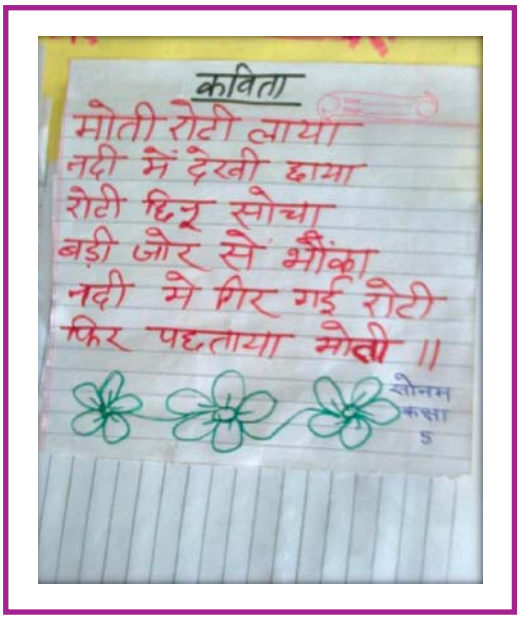

जाती है और गणेश जी की पूजा की जाती और सरस्वती माता की पूजा की जाती है। हम अपने घर को दीए से सजाते हैं। हम दीए दीवार पर भी रखती है। फिर हम पटाके जलाते हैं। जैसे– मुर्गा छाप, अनार, चकरी और भी बहुत पटाके जलाते है। फिर हम परसाद खाते हैं। पकोड़ी खाते हैं और पूड़ी, खीर, हलुआ खाते हैं। फिर हम सो जाते है। फिर सुबह उठकर हम दीए उठाते हैं। फिर हम दीए से खेलते है।

अकादमिक संदर्भ समूह

सांस्थानिक बदलाव की शुरूआत

उत्तराखण्ड सरकार के साथ अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन द्वारा संचालित "लर्निंग गारंटी कार्यक्रम" के दूसरे चरण मे उधमसिंह नगर के सभी शैक्षिक संस्थानों का प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करते हुए "अकादमिक संदर्भ समूह" का निर्माण करना एक महत्वपूर्ण कदम था। 2008–09 मे पहली बार इस समूह का निर्माण किया गया, जिसमें एसएमसी सदस्य से लेकर जिला शिक्षा अधिकारी (वर्तमान मे मुख्य शिक्षा अधिकारी) तक सभी संस्थानों से कुल 30 सदस्यों को अकादमिक संदर्भ समूह के सदस्य के तौर पर चुना गया। तब से अब तक इस समूह की लगभग 9 बैठकें हुई हैं और अपने उद्देश्यों के सापेक्ष इस समूह ने संतोषजनक सफलता हासिल की है।

संस्थानों के बीच संवादहीनता को तोड़ना, बाल शोध मेले की अवधारणा से राज्य का परिचय कराना, प्रत्येक ब्लॉक मे अनौपचारिक शिक्षकों का समूह बनना, विकास खंड स्तर पर शिक्षक समस्या निवारण शिविर लगाना और किसी विशेष कार्य को शेष लोगों तक लेकर जाना आदि कार्यों को इस समूह की उपलब्धियों के रूप में देखा जा सकता है। चूंकि इस समूह के अधिकांश सदस्य विभिन्न संस्थानों के प्रतिनिधि होते हैं इसलिए इनके चयन मे यह प्राविधान किया गया था की प्रत्येक दो साल बाद इसके सदस्यों का "रोटेशन बेस" पर दोबारा चयन किया जाएगा। इसी कड़ी को आगे बताते हुए जुलाई 2013 में नए अकादमिक संदर्भ समूह का गठन किया गया, जिसकी पहली बैठक 26 व 27 जुलाई को आयोजित की गई।

समन्वयक जिला परियोजना कार्यालय नवीन पंत द्वारा प्रतिभागियों का स्वागत किया गया। फाउंडेशन के पुष्कर ने द्वारा परिचय गतिविधि करवाई। मुख्य शिक्षा अधिकारी सुषमा सिंह ने कहा कि हम जहां कहीं भी बैठकों में जाते हैं वहाँ पर सरकारी शिक्षा व्यवस्था को बहुत ही खराब बताया जाता है। जिले की शिक्षा की जिम्मेदारी होने के नाते यह सब सुनना पड़ता है, परंतु खराब भी लगता है। अतः इस समूह से यह अपेक्षा है की निम्नलिखित तीन चार बिन्दुओं को आप अपनी चर्चा मे अवश्य

शामिल करेंगे–

1. आरटीई हमसे बहुत कुछ अपेक्षा करता है, जैसे अभी स्कूल के समय को बनाने की बात की जा रही है और गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा की बात की जा रही है। हमारा प्रत्येक कार्य बच्चों की सीख के रूप में हमारे सामने आता है, इसलिए हम जो भी करें वह उस सीखने को ध्यान मे रखकर करें।
2. विद्यालय में शैक्षणिक माहौल बनाना बहुत जरूरी है। शिक्षकों के साथ हमें classroom behavior and multiple intelligence की बात करनी चाहिए क्योंकि बच्चे में सबसे ज्यादा जवाब देने की क्षमता होती है और वे विभिन्न प्रतिभाओं में धनी होते हैं।
3. तीसरा बिन्दु है एमडीएम। हमें इसको बहुत ही संवेदनशीलता के साथ लेने की जरूरत है। आए दिन अखबारों मे इसकी अनियमितताओं की खबर आती रहती है। इस बिन्दु पर आप कोई विशेष कार्ययोजना बनाएं।

अकादमिक संदर्भ समूह की अवधारणा

अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन के राज्य प्रभारी अनंत गंगोला द्वारा अकादमिक संदर्भ समूह की अवधारणा पर विस्तार से प्रकाश डाला गया। उन्होंने कहा कि पिछले 20–25 सालों में हमारा

सरकारी सिस्टम कमजोर हुआ है, जैसे आज हम चिट्ठी भेजने के लिए सरकारी डाक विभाग के पास नहीं जाते बल्कि कूरियर के पास जाते हैं। यही हाल स्वास्थ्य सेवाओं का भी है हम इलाज के लिए किसी पीएचसी में नहीं जाते बल्कि प्राइवेट अस्पताल मे जाते हैं और इससे हमारी शिक्षा भी अछूती नहीं है। आज जिसकी पहुँच में थोड़े से भी संसाधन हैं वह अपने बच्चे को सरकारी विद्यालय में नहीं भेजना चाहता। उन्होंने विकसित राष्ट्रों का उदाहरण देते हुए कहा कि हम प्राइवेट स्कूल खोलने के मामले में विश्व में नंबर एक पर हैं। अमेरिका में प्राइवेट स्कूल 8% हैं और फ्रांस में 12% जबकि हमारे यहाँ 25% से अधिक प्राइवेट स्कूल हैं।

आरटीई के रूप में हमने सर्वशिक्षा की गारंटी मिली है। सर्व शिक्षा भारतीय संस्कृति में एकदम नया विचार है। हमें इस बात पर गर्व होना चाहिए कि जो कार्य पिछले 2000 सालों में नहीं हुआ, उसे हमने पूरा करने का बीड़ा उठाया है और जिसकी शुरुवात ही इस बात से हो जाती है कि अब हमारे विद्यालय में ऐसे परिवारों के बच्चे आने लगे हैं, जिनके दरवाजे तक औपचारिक शिक्षा कभी पहुंची ही नहीं। पिछले 2000 वर्षों में ऐसा कभी नहीं हुआ जो हम अब करने जा रहे हैं। परंतु इसके साथ–साथ हमें यह भी समझना होगा कि कानूनी रूप से तो हमने ऐसा कर लिया है पर मानसिक रूप से सर्वशिक्षा के लिए अभी हम तैयार नहीं हैं।

सर्व शिक्षा को लेकर न तो हमारे पास पर्याप्त समझ है, न हमारे सरोकार पर्याप्त हैं, न समय और न ही संसाधन। अभी हमे इन चारों पर कार्य करना है लेकिन हमे निराश नहीं होना है।

हम सब एक साथ मिलकर अपने इन उद्देश्यों को प्राप्त करें इसीलिए हम सब आज एक साथ बैठें हैं। हम सब अलग अलग संस्थाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं जैसे इस बैठक मे कुछ सीआरसी हैं, कुछ शिक्षक हैं, कुछ बीईओ हैं, कुछ प्रधानाध्यापक हैं और एसएमसी अध्यक्ष भी हैं और इसी प्रकार डायट व डीपीओ का भी प्रतिनिधित्व है। देखने में तो हम सब अलग–अलग संस्थानों से आए हुए लोग लगते हैं, परंतु हम सब के होने की वजह एक ही है और वह है "बच्चा"। मतलब हम सब का उद्देश्य एक ही है। और चूंकि हम सब का उद्देश्य एक है मंजिल एक है और हम जिले में विभिन्न जगहों से संचालित होने वाले संस्थान हैं इसलिए यह जरूरी है कि शिक्षा को लेकर हमारी साझा समझ हो, हमारी बातों मे समरूपता हो। इसलिए इस समूह का गठन किया गया है जिसमें मुख्य शिक्षा अधिकारी इसके अध्यक्ष होते हैं और प्राचार्य डायट इसके उपाध्यक्ष। जिला शिक्षा अधिकारी बेसिक इसके सचिव होते हैं।

अकादमिक संदर्भ समूह के उद्देश्य

- सभी शैक्षिक संस्थानो के बीच संवाद स्थापित करना
- शैक्षिक अकादमिक मुद्दों को चर्चा मे लाना
- कार्यों के दोहराव से बचना
- जिले की शिक्षा को लेकर एक साझा समझ विकसित करना
- जिले में सकारात्मक वातावरण का निर्माण करना
- अकादमिक संदर्भ समूह क्या–क्या नहीं है– अकादमिक संदर्भ समूह की अवधारणा पर बात करते हुए अनंत जी ने कहा की इस समूह की कुछ सीमाएं भी हैं जिनको हमेशा ध्यान में रखना पड़ेगा जैसे–
- यह किसी संस्थान विशेष की समीक्षा का मंच नहीं है उदाहरण के लिए यहाँ पर किसी बी आर सी के कार्यों की समीक्षा नहीं की जा सकती।
- यह कोई निर्णायक समिति नहीं है। यह एक सलाहकार के रूप मे कार्य करती है जिसके सुझावों पर अन्य संस्थान अपने निर्णय ले सकते हैं।

- यहाँ पर जो भी लोग हैं वे किसी प्रसाशनिक शक्ति के रूप मे नहीं बल्कि प्रतिनिधि संस्थान के रूप मे हैं।

प्रतिभागी संस्थानों की एक दूजे से अपेक्षाएं

अकादमिक संदर्भ समूह की अवधारणा पर चर्चा करने के उपरांत प्रतिभागियों की और से कुछ प्रश्न और टिप्पणियाँ भी की गई जो इस प्रकार हैं –

1. आप ने जो भी बताया उस सब से पूरी सहमति है परंतु ये सब कार्य होगा कैसे?
2. अकादमिक संदर्भ समूह की अवधारणा में विभिन्न संस्थानों के बीच समन्वय स्थापित करने की बात की गई है परंतु कई बार एक ही संस्थान के लोगों के बीच समन्वय नहीं बन पाता उसे कैसे सुनिश्चित करेंगे?
3. कई बार स्वयं सेवी संस्थाओं के साथ विचार नहीं मिल पाते ऐसी स्थिति में क्या किया जाए?
4. इस पूरी चर्चा से एक बात यह समझ में आती है कि बच्चों की पढ़ाई की बात कैसे स्कूल से बाहर निकलते हुए सीआरसी/बीआरसी आदि मुख्य शिक्षा अधिकारी तक पहुंचें।
5. क्या इस बैठक में विषय विशेषज्ञों को भी बुलाया जा सकता है?

विद्यालय प्रबंधन समिति की अपेक्षाएं

शिक्षकों से– शिक्षक बच्चों को पढ़ाएँ, स्कूल समय से खुले व बंद हो, बच्चे को कक्षा के अनुसार पढ़ना लिखना आए, शिक्षक बच्चों का ध्यान रखें, समय समय पर बच्चों की प्रगति से अभिभावकों को अवगत कराएं।

समुदाय से– एसएमसी के अध्यक्षध्सदस्य नियमित रूप से स्कूल जाएं, स्कूल की व्यवस्था मे सहयोग करें, बैठकों मे नियमित रूप से भाग ले,अभिभावकों को प्रेरित करें,बच्चों को साफ–सफाई के साथ स्कूल भेजें।

शिक्षकों की अपेक्षाएं

विद्यालय प्रबंधन समिति से– बच्चों की उपस्थिती, नामांकन व एम डी एम व्यवस्था मे सहयोग करें, विद्यालय विकास योजना बनाने मे सहयोग करें, मासिक बैठकों मे भागीदारी करें व शिक्षण मे स्थानीय व्यक्ति का सहयोग जैसे फसल को समझाने के लिए कोई किसान विद्यालय आकार समझा सकते हैं।

सी आर सी से– सूचनाएँ सही समय से व सही प्रारूप मे मिले, एक ही सूचना बार–बार ना मांगी जाए, माह मे एक बार विद्यालय आकर शिक्षण कार्य करें, समय समय पर विषय संबन्धित कठिनाइयों का निवारण करें।

संकुल समन्वयकों की अपेक्षाएं

शिक्षकों से– पाठयोजना बना कर शिक्षण कार्य करें, समय पर सूचना भर कर दें, समय से स्कूल जाएँ, संकुल की बैठकों मे प्रतिभाग करें।

बी.आर.सी. से– सूचनाओं का संकलन इस प्रकार से करें की हमे बार बार बी आर सी न आना पड़े, बी आर सी स्तर पर अकादमिक बैठक का आयोजन किया जाए, गैर अकादमिक कार्य कम से कम लिए जाएँ, तीन माह मे एक बार बी आर सी व डायट के साथ बैठक हो, सी आर सी को मिलने वाली धन राशि समय पर मिले, संकुल स्तर पर होने वाली बैठक मे बी आर सी भी प्रतिभाग करें।

बी.आर.सी. की अपेक्षाएं

सी.आर.सी. से– सेवित क्षेत्र के सभी विद्यालयों का अनुश्रवण करें व शिक्षकों का सहयोग करें, अच्छे शिक्षकों को प्रोत्साहित करें, दिये गए कार्यों को समय से पूरा करें, सभी विद्यालयों की सूचनाओं को डायरी मे लिखकर रखें।

बी.ई.ओ. से– केवल अकादमिक कार्य ही कराए जाएँ प्रधान अध्यापकों के साथ मासिक बैठक का आयोजन करें, खंड कार्यालय मे उपलब्ध सूचनाओं को बी आर सी से न मांगा जाए, अच्छे शिक्षकों को सम्मानित किया जाए।

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान की अपेक्षाएं

डी.पी.ओ. से– वार्षिक योजना के निर्माण मे डायट के साथ प्रभावी समन्वय हो, शैक्षिक आंकड़ों को नियमित रूप से अपडेट करें व डायट के साथ साझा करें ताकि प्रशिक्षणों के आयोजन मे मदद मिले, प्रशिक्षणों की सूचना यथा समय उपलब्ध कराएं।

बी.आर.सी. से– नियमित रूप से प्रशिक्षणों मे प्रतिभाग कर ब्लॉक स्तर पर प्रभावी अनुसमर्थन प्रदान करें, स्वयं एक रिसोर्स

व्यक्ति के तौर पर कार्य करे, ब्लॉक स्तर पर शैक्षिक सेमिनार व गोष्ठियों का आयोजन करें, सूचनाओं व आंकड़ों के रख–रखाव मे तकनीकी का प्रयोग करें, अनुश्रवण आख्याओं का विश्लेषण करें व डायट से साझा करें।

सहयोगी संस्थाओं की अपेक्षाएं

शिक्षा विभाग से– स्कूल ना जाने वाले व ड्राप आउट बच्चों का नामांकन आर.टी.ई. के तहत सत्र के शुरुवात, मध्य या परीक्षा से पूर्व किया जाए, कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालयों मे मानकों के अनुसार नामांकन किया जाए, शैक्षिक सत्र की शुरुवात मे नामांकन पर बैठक होनी चाहिए, एस.एम.सी. की बैठकों के लिए रणनीति बनानी चाहिए, सहयोगी संस्थाओं के आमंत्रण पर प्रतिभागिता सुनिश्चित होनी चाहिए, आपसी पत्र व्यवहार का समय से पाला होना चाहिए।

दूसरे दिन सभी प्रतिभागियों को शिक्षा के उद्देश्यों पर प्रोफेसर कृष्ण कुमार का वीडियो दिखाया गया जिससे सभी को आगे बढ़ने की प्रेरणा मिली। वीडियो देखने के बाद अब बारी थी जिले के लिए साझी कार्ययोजना बनाने की। साझी योजना कैसे बनाई जाए, उसमे किन–किन बातों का ध्यान रखें, इसकी निरंतरता कैसे बनेगी, हम किन बिन्दुओं का चयन करें आदि बिन्दुओं पर अनंत जी ने अपने विचार रखते हुए कहा कि हमे यह ध्यान रखना होगा कि यह नया समूह है जिसका गठन कल ही किया गया है और दूसरा यह कोई प्रशासनिक बॉडी नहीं है इसलिए हमें योजना बनाने के लिए अपनी प्राथमिकताएँ तय करनी होंगी। उदाहरण के लिए हम शिक्षकों की नियुक्ति कैसे होनी चाहिए इस बात विचार करें या सूचनाओं के बोझ को कम करने के लिए। शिक्षकों की नियुक्ति कैसे होनी चाहिए इस मुद्दे पर हम सिर्फ अपनी चिंता जाहीर कर सकते हैं मगर सूचनाओं वाले मसले मे हम बहुत कुछ कर सकते हैं मसलन क्या हम यह देख सकते हैं कि यदि स्कूल तक एक माह मे 20 सूचनाएँ जाती हैं तो उनमे से कितनी सूचनाओं को जिले स्तर पर ही निपटाया जा सकता था और इसी तरह से सी आर सी स्तर तक कितनी। इसलिए हम वही चुने जो हम कर सकते हैं।

दूसरी बात जगह बदल–बदल कर हम अगली बैठकों का आयोजन कर सकते हैं जैसे कभी खटीमा मे या कभी काशीपुर मे और उस बैठक मे वहाँ के शिक्षकों की संख्या ज्यादा हो सकती है। "बेस्ट प्रक्टिसेज" को साझा किया जा सकता है।

तीन बिन्दुओं पर कार्य करने का निर्णय लिया गया

1. सूचना प्रबंधन प्रणाली को कैसे मजबूत बनाएं
2. एम.डी.एम. के क्रियान्वयन हेतु समुचित रणनीति
3. एस.एम.सी. का गठन और विद्यालय से उसका परस्पर संबंध

सूचना एवं प्रबंधन प्रणाली पर दिये गए सुझाव

उपर्युक्त बिन्दु पर समूह के सुझाव– विकास खंड स्तर पर बी.आर.सी., सी.आर.सी. एवं कंप्यूटर ऑपरेटर के क्षमता संवर्धन की प्रक्रिया चलाई जाए जिसमे डायट एवं ए.पी.एफ. का सहयोग लिया जाए।

सूचनाओं का प्रेषण जिला से समय रहते किया जाए, अपने–अपने स्तर से सूचनाओं का निपटारा करने की पहल शुरू की जाए, सूचनाओं पर कोई शोध कार्य किया जाए और आगामी बैठक मे उसका प्रस्तुतीकरण किया जाए।

समूह की स्वयं के लिए योजनाः लघु शोध

विषय– संकुल से मांगी गई सूचनाओं पर एक लघु शोध– कितनी सूचनाएँ मांगी गई, कितनी जिला स्तर से दी जा सकती थी, कितनी डायट से कितनी बी आर सी से, कितना समय खराब हुआ, शिक्षकों का, सी आर सी का आदि।

सूचना प्रबंधन प्रणाली पर मोहन रावत ने अपने द्वारा किए गए डाइस डाटा के विश्लेषण का भी प्रस्तुतीकरण किया। उन्होंने दिखाया कि किस प्रकार "टीचर डॉट एक्सल–स" व "स्कूल डॉट एक्सल–स" से नई सूचनाओं को निकाला जा सकता है। दोनों प्रकार की डाटा शीट में कुछ डाटा एक दूसरे से नहीं मिल रहा है इसके लिए यदि हम एक बार इस डाटा का सत्यापन कर लें तो उसके बाद सिर्फ उसको अपडेट करने की जरूरत होगी। सभी ने उनके द्वारा किए गए डाटा विश्लेषण की सराहना की और उनसे जल्द ही डाटा सत्यापन की प्रक्रिया शुरू करने की अपील भी की।

एम.डी.एम. के बेहतर क्रियान्वयन हेतु समूह के सुझाव

समूह ने एम.डी.एम. व इसके समुचित रखरखाव हेतु 7 बिन्दुओं का चयन किया और उनके आधार पर जिम्मेदारी तय करने का

भी सुझाव दिया। सुझाए गए बिन्दुओं का विवरण इस प्रकार है–

1. चावल– सही गुणवत्ता में आए, पूरी मात्रा मे आए व समय पर आए।
2. मीनू का निर्धारण सब्जियों व मौसम के आधार पर होना चाहिए।
3. बच्चे को निर्धारित मात्रा मे भोजन मिले।
4. मसाले और ईंधन सही जगह से लिए जाएँ।
5. रसोई घर– प्रत्येक विद्यालय मे रसोई घर की उपलब्धता सुनिश्चित की जानी चाहिए।
6. रखरखाव (राशन व बर्तन)।
7. पानी साफ होना चाहिए।

एस.एम.सी. का गठन एवं उसके साथ विद्यालय का परस्पर संबंध

1. विद्यालय की स्थिति– में सुधार करके एस एम सी सदस्यों के साथ संबंध बेहतर किए जा सकते हैं।
2. विद्यालय समय समय पर ऐसे कार्यक्रम आयोजित करे जिसमे समुदाय को आमंत्रित किया जाए।
3. एस एम सी सदस्यों के प्रशिक्षण को बेहतर बनाया जाए इसके लिए अच्छे प्रशिक्षकों का चयन किया जाए।
4. अच्छा कार्य करने वाली एस एम सी को सम्मानित किया जाए।
5. विद्यालय विकास योजना के निर्माण मे एस एम सी सदस्यों का पूरा सहयोग लिया जाए।

'हाँ मैं सावित्रीबाई फूले'

– प्रियंवद

दिनांक 28 अप्रैल 2014 को उधमसिंह नगर के जिला कार्यालय के सभागार मे अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन ने इस एकल नाट्य प्रस्तुति का आयोजन किया था। इस आयोजन की शुरुआत एक डॉक्यूमेंट्री फिल्म के साथ की गयी। 'उत्तराखण्ड मे महिलाओं की दिनचर्या' नाम की इस डाक्यूमेंट्री मे महिलाओं के रोजमर्रा के जीवन और उनकी कठिनाइयों को उद्देश्यपरक तरीके से दिखने की कोशिश की गयी है। जिसे दर्शकों की काफी सराहना मिली। डाक्यूमेंट्री फिल्म के पश्चात कार्यक्रम का संचालन कर रहे जर्फताज खान ने सुषमा देशपांडे का संक्षिप्त परिचय देते हुए सावित्रीबाई फूले के जीवन परिचय को संक्षेप मे रखने की जिम्मेदारी प्रियंवद को दी। सावित्रीबाई फूले के जीवन–परिचय के बाद स्मृति ने सुषमा देशपांडे के जीवन–कर्म से लोगों का विधिवत परिचय कराया। जिसके ठीक बाद सुषमा देशपांडे ने अपनी एकल नाट्य प्रस्तुति 'हाँ मैं सावित्रीबाई फूले' का आरंभ किया।

अपने 70 मिनट की ठोस और कसी हुई नाट्य प्रस्तुति मे सुषमा जी ने पूरे सभागार को मानो 19वीं शताब्दी के बीच ठीक सावित्रीबाई के सामने ला खड़ा किया था। इस नाट्य प्रस्तुति की स्क्रिप्ट भी सुषमा जी ने ही तैयार की है। शायद इसीलिए स्क्रिप्ट के हर हर्फ, हर भंगिमा पर सुषमा जी का अभिनय और भी भाव–प्रवण, मर्मस्पर्शी एवं बेहद प्रभावशाली था। इस प्रस्तुति के प्रभावोत्पादकता का आलम यह था कि नाटक के समाप्त होने के बाद भी कई मिनटों तक दर्शक एकदम खामोशी की अवस्था में बैठे रहे।

सीखने–सिखाने के तौर–तरीकों में बदलाव

रामनरेश गौतम

सेवारत शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम शिक्षकों को न केवल वर्तमान में हो रहे परिवर्तनों के प्रति तैयार होने में मदद करता है, वरन सीखे हुए ज्ञान का नए संदर्भों में उपादेयता, पुनरावलोकन तथा नई विधाओं से परिचित करवाने का अवसर प्रदान करता है।

राष्ट्रीय पाठयचर्या की रूपरेखा में राष्ट्रीय फोकस समूह शशिक्षक–शिक्षा' द्वारा यह सुझाव दिया गया है कि शिक्षकों को सीखने के अवसरों को बढ़ाया जाए। शिक्षक बदलते सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक परिदृश्यों को समझ सकें, शिक्षा के संदर्भ में इनका विश्लेषण कर सकें और सतत रूप से सीखने की प्रक्रिया में शामिल हो सकें। इससे पूर्व शिक्षक शिक्षा पर बनीं कई समितियों {कोठारी (1960), चट्टोपाध्याय (1983–85), यशपाल कमेटी (1993)) ने शिक्षक–शिक्षा को व्यवस्थित और मजबूत करने पर जोर दिया है, सभी समितियों ने अपने–अपने प्रतिवेदनों में लिखा है कि हमारे शिक्षक–शिक्षा संस्थान संसाधनों और नए ज्ञान की कमी से जूझ रहे हैं। जिनको तत्काल सुदृढ़ करने की आवश्यकता है। शिक्षकों की तैयारी निम्न उद्देश्यों की पूर्ति के लिए की जानी चाहिए।

क) बच्चों को उनके सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक संदर्भों के साथ समझें।

ख) उन तरीकों को समझें जिनसे बच्चे ज्यादा सीखते हैं, वे संभव तरीके खोजें जिनसे सीखने की अनुकूल परिस्थितियां प्रदान की जा सकें, साथ ही यह भी समझें कि बच्चों में सीखने के प्रकार, गति और तरीकों में विभिन्नताऐं होती हैं।

ग) ग्रहणशील और लगातार सीखने की प्रक्रिया में संलग्न रहें, समाज के लिए अपनी जिम्मेदारी समझें और एक बेहतर विश्व के लिए काम करें।

इस लेख में लगभग 300 शिक्षकों और 10 प्रशिक्षकों के अनुभव तथा विचारों को आधार बनाकर प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। शिक्षक साथियों से इस प्रकार के सवाल आए –

- यदि सभी बच्चों में सीखने की क्षमता होती है और बच्चों के सीखने की गतियों में विभिन्नता होती है तो वह कौन–कौन सी प्रक्रियाएं हैं जो एक कक्षा के 100 बच्चों के हिसाब से सीखने–सिखाने के दौरान की जा सकती हैं?

- किताबों पर कैसे एक साथ बच्चों की क्षमताओं और उनके अनुभवों को ध्यान में रखते हुए इन सभी मुददों पर काम करें?
- सीसीई सीखने–सिखाने की एक प्रक्रिया है, पर इसके लिए किस तरह के कार्य किए जाएंगे और किन गतिविधियों को इस प्रक्रिया में शामिल किया जाएगा ?

उपरोक्त तीनों ही सवाल सीखने–सिखाने के सिद्धांतों तथा शिक्षण शास्त्र की समझ से जुड़े हुए हैं। आंकड़ों के हिसाब से यह उत्तर कितने प्रतिशत सटीक होने के नजदीक है, कहना थोड़ा कठिन है पर इसको जांचने के लिए हमने कई शिक्षकों से संवाद किया और इसकी सटीकता को जानने की कोशिश की, जिसमें ज्यादातर शिक्षक इसी उत्तर के आसपास बात कहते नजर आए जोकि शिक्षक–शिक्षा की प्रभावहीनता या असफलता की ओर ही इंगित करते हैं, जिसका उल्लेख 1993 में गठित यशपाल समिति की रिपोर्ट करती है।

हम पिछले दो सालों के प्रशिक्षण के अनुभवों पर नजर डालें तो

सेवारत शिक्षण प्रशिक्षण के दौरान होने वाली चर्चाओं में ज्यादातर शिक्षक अधिकतर समय सीखने–सिखाने के सिद्धांतों के विरोध में अपने तर्कों को रखते थे, और परम्परागत शिक्षण विधियों को ज्यादा बेहतर और कारगर मानने के पक्ष में अपने तर्क प्रस्तुत करते थे। इस बार के प्रशिक्षणों में शिक्षक साथियों के सवालों को तर्कों के आधार पर समझने की कोशिश की तो बदलाव स्पष्ट नजर आया।

बिना वर्णमाला पर काम किए किसी ने भाषा पर काम किया है क्या? इसके जवाब में श्रीमती कमलेश एवं आनन्द सिंह बिष्ट ने हमने शब्दों, वाक्यों जो बच्चे के अनुभवों से जुड़े हों पर काम करते हुए महसूस किया है कि बच्चे इससे जल्दी और अर्थपूर्ण तरीके से सीख रहे हैं। हमने समूह में काम ज्यादा करने को वरीयता दी और एक दूसरे से सीखने के अवसर बढ़ाने की कोशिश की। चुनौती यह है कि ऐसे अनुभवों का संकलन और कार्य कर रहे शिक्षकों को सतत रूप से उनके काम में सहयोग कैसे करें? जिनको सीखने की इन प्रक्रियाओं में स्थान दिया जाए।

चर्चाओं में शिक्षकों द्वारा सक्रिय प्रतिभाग करना यह प्रदर्शित करता है कि सीखने के अवसरों में शिक्षक साथी शामिल होना चाहते हैं और शिक्षा पर चल रहे वर्तमान विमर्श को समझना चाहते हैं। समूह कार्य के दौरान शिक्षक अपने ज्ञान और अनुभव का प्रयोग करते हुए उसकी वर्तमान प्रासंगिकता को भी समझने का प्रयास करते दिखे। एक शिक्षक साथी ने कहा कि सभी शिक्षकों का 'भारत के संविधान' और 'राष्ट्रीय पाठयचर्या के शिक्षा–शिक्षा नामक पर्चे' पर भी प्रशिक्षण होना चाहिए, जिससे शिक्षक इन प्रशिक्षणों की अहमियत को और गंभीरतापूर्वक ले सकें। अब यदि यह प्रशिक्षण शिक्षकों के लिए सीखने के अवसरों के रूप में है तो आगामी प्रशिक्षणों में वह कौन से मुद्दे शामिल किए जाएं, जिन पर काम कर शिक्षक शिक्षा के उद्देश्यों को हासिल कर सकें?

शिक्षकों के सवाल हमारे लिए कुछ और चुनौतियाँ भी प्रस्तुत करते हैं। मसलन सीखने–सिखाने की प्रक्रियाओं को लेकर प्रशिक्षकों की तैयारी किस हद तक है, बच्चों के साथ काम करने को लेकर नए सिद्धांतों और शिक्षण शास्त्र की प्रक्रिया में जोड़कर देखने की समझ तथा उस पर विषेषज्ञता? विषयवस्तु की गहरी समझ।

प्रशिक्षण की गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए दो बातों पर काम करना आवश्यक है। तभी हम इसे सीखने के सही अवसरों में तब्दील कर पाएंगे। प्रशिक्षण से जो हमने सीखा–

- संदर्भ व्यक्तियों की तैयारी के लिए पांच दिन नाकाफी हैं।
- पिछले सत्र में हुई बातचीत का फालोअप और पिछले सत्र में बनी समझ को सतत रूप से आगे न बढ़ा पाना। प्रशिक्षणों के दौरान हुई बातचीत को नियमित रूप से चर्चा का विषय कैसे बनाएं, संकुल स्तरों पर होने वाली मासिक अकादमिक बैठकों को प्रभावी बनाने के उपाय करने होगें।
- यदि बेहतर तरीके से सीखने में मदद की जाए तो लोग पहल करते हैं।

समूह में सीखने का एक उदाहरण

एक शिक्षक साथी ने पूछा कि यदि बाल मैत्रीपूर्ण कक्षा संचालित करनी है तो कक्षा का संचालन करने के दौरान हमें किस तरह की गतिविधि करनी चाहिए? इस पर कुछ महिला शिक्षक साथियों ने अपने अनुभव सुनाए और कहा कि इससे बच्चे ज्यादा सीखते हैं। उदाहरणः हमने शब्दों को लेकर कुछ खेलों पर काम किया और समूह में सीखने की प्रक्रिया अपनाई, और हमने देखा कि बच्चे स्वयं और दूसरों से ज्यादा सीखते हैं। बच्चों की कहानियों को लिखकर दीवाल पर चिपकाया आदि।

इस बीच विषय की प्रकृति कौशल तथा संकेतांक पर विषयवार समूह बनाए गए तथा समूह कार्य करने के पश्चात समूह द्वारा प्रस्तुति दी गई। इस प्रक्रिया के द्वारा कक्षा शिक्षण में होने वाली गतिविधियाँ तथा शिक्षक साथियों के अनुभवों को समझने का भी एक अवसर मिलता है। इन प्रस्तुतियों के दौरान शिक्षण की विषयवस्तु पर समझ कैसी है? इन मुददों पर बच्चों के साथ काम कैसे किया जाता हैं, सीखने–सिखाने की प्रक्रिया को विद्यालय में किस नजरिए से देखा जाता है आदि पहलुओं के बारे में भी जानने को एक अच्छा–खासा अनुभव मिलता है। इसके साथ ही उनके द्वारा शिक्षण प्रक्रियाओं में उपयोग की जाने वाली एप्रोचेज का भी पता चलता है। जरूरत इस बात की लगती है कि प्रशिक्षणों की योजना पूरी गहराई और पूरी तैयारी के साथ बने।

– साथ में अशोक प्रसाद

शिक्षण और प्रयोग के दस बरस

रवि मोहन फुलारा
रा.प्रा.वि. नगला

सरकारी स्कूल। दस वर्ष बीत गए। लगता है कि शिक्षण अब अनुभव रूप ले सकता है। वैसे तो जीवन पर्यन्त भी यह अनुभव विशिष्ट नहीं होता। परन्तु व्यवसाय के दृष्टिकोण से दस वर्ष कम भी नहीं होते। समय बीतने के बाद या कहें एक न्यूनतम अनुभव हासिल करने के आज मैं खुद को लाचार–सा महसूस करता हूँ।

बाहर से शिक्षण जितना आसान लगता है, वास्तव में यह उतना आसान नहीं। हालांकि यह बात स्वीकार करना, कर पाना कम मुश्किल नहीं। परन्तु यह काम कठिन नहीं होता तो सदैव ही गुरुओं तथा विद्यालयों की आवश्यकता समाज और सभ्यताओं को रही होती? आज इस बात पर तर्क करने को हर कोई तैयार रहता है कि शिक्षण एक आसान काम है। मगर 'अच्छे स्कूल' और 'अच्छे शिक्षक' क्यों नहीं मिलते? यदि शिक्षण आसान काम होता तो हम सभी अपने बच्चों को बाहर न पढाकर अपने साथ ही रखते। सबसे अच्छे शिक्षक माता–पिता होते हैं। इसी प्रकार समाज भी एक शिक्षक की ही भांति हमारा निर्माण करता है। जैसे माता पिता होंगे बच्चा स्वतः ही वैसा हो जाएगा। जैसा समाज होगा हम वैसे ही बनते चले जाएंगे।

अब यहां से आगे शिक्षक के दायित्व शुरु होते हैं। शिक्षक के कार्य में सर्वप्रथम सामाजिक अपेक्षाएं शामिल रहती हैं। समाज को जिस प्रकार के व्यक्ति की आवश्यकता होती है, शिक्षक से अपेक्षा की जाती है कि वह वैसे व्यक्ति का निर्माण कर दे। दूसरी अपेक्षा व्यावसायिक कौशलों की। व्यक्ति के जीवन यापन हेतु उसमें कौशलों का विकास करना, शिक्षक का कार्य माना जाता है। वह शिक्षक आज के समय में सफल माना जाता है जो इन दायित्वों की पूर्ति करता है।

सरकारी विद्यालयों में काम करना वास्तव में एक मिशन की तरह है। पिछले कुछ वर्षो में जब हम जैसे युवा इस पेशे में आये तो जोश से भरे होते थे। मैं आज भी उसी तरह के जोश में रहने की कोशिश करता हूँ। संयोग ही था कि एक अच्छे वातावरण और मार्गदर्शन ने उस समय को और भी रोचक बना दिया। हमने एक राजकीय प्राथमिक विदयालय प्राइमरी स्कूल नगला को पीएस नगला में बदल दिया। यह केवल आनुवादिक परिवर्तन नहीं था। अपितु इसके लिए हम सभी ने अपना घरबार, समय तथा अन्य इच्छाऐं–लालसाएं छोड़ीं। यह अच्छी बात है कि आज सभी इस विद्यालय को देखकर खुश होते हैं। गुरुओं के तौर पर हमें सम्मान देते हैं। लेकिन हम उस मोड़ पर खड़े हैं, जहां हमारे प्रयास हमें संतुष्ट नहीं कर पा रहे हैं। कई कमियां और बाधाएँ जस की तस बनी हुई हैं। हमारा मनोबल जवाब दे रहा है। आगे के रास्ते हैं मगर उनके पूर्ण होने में संशय भी कम नहीं।

दरअसल इस लेख की मूल भावना यहीं से आरम्भ होती है।

अपने 10–15 या 20 सालों के अलग–अलग अनुभवों के साथ हम सभी एक दबाव तथा संशय में इस कार्य को कर रहे हैं। इसका स्पष्ट कारण वे समस्याएं हैं जो अक्सर शिक्षण के दौरान हमें डराती हैं। शिक्षा तथा शिक्षण हेतु एक 'आनन्दाई वातावरण' की आवश्यकता होती है। शिक्षण एक खोज के समान है, इसका कोई अन्त नहीं। जिन स्थितियों में आज सरकारी शिक्षक हैं वे अजीब स्थितियां हालात हैं।

जो शिक्षक स्कूल को और बच्चों को प्यार करते हैं, उसके लिए तरह–तरह के यतन–जतन करते हैं, उनकी समस्याओं की कहीं सुनवाई है? मैं खुद के विद्यालय की समस्याओं पर बात करना चाहूंगा। 325 की छात्र संख्या वाले विद्यालय में तीन शिक्षक एक वास्तविकता है। जो पूर्व में भी इसी प्रकार रही है। लगातार शिक्षकों का कम होना विद्यालय और इसमें विद्यार्जन करने के लिए आने वाले 'गरीबों के बच्चों' के लिए दुर्भाग्य के समान है। बीच का एक दौर ऐसा था जब छात्र–संख्या तथा छात्र–अनुपात सही था। वह विद्यालय तथा बच्चों के लिए मेरी नजर में सबसे बेहतर समय रहा। आज की स्थिति बिल्कुल फरक है। आज शिक्षक से तो ढ़ेरों अपेक्षाएं हैं परन्तु जो चीज करने से ये अपेक्षाएं पूरी होंगी, उन पर कोई सुनने–बात करने को तैयार नहीं। जहाँ पहले से ही सुगमकर्ता की भूमिका में कोई नहीं है वहां कई

निरीक्षणकर्ता की भूमिका निभाने लगे हैं। क्या कुछ किये बगैर, कुछ दिखाई दे सकता है ?

बार–बार आकाशवाणी होती है, अतिरिक्त कार्यों (बीएलओ, जनगणना, निर्वाचन, आपदा, पल्स पोलियो आदि से) शिक्षक दूर रहेंगे। परन्तु हम तो हर बार इन सभी कामों को करते आ रहे हैं। करते ही जा रहे हैं। इस सबको करने का असर बच्चों पर पड़ना स्वाभाविक नहीं ? फिर क्यों सवाल किए जाते हैं ? दस साल 'केवल शिक्षण' कराकर देखें, फिर सवाल पूछें तो हम भी जवाब दें। जनहित में जो भी कार्य शिक्षक समाज से कराए गए हैं, उसने उन कार्यों को सदैव ईमान्दारी से पूर्ण किया है। इसका श्रेय कभी उन शिक्षकों को नहीं दिया गया। ये सब काम (जहाँ सरकारी कागज हाथ में होते थे/होते हैं) विपरीत और विषम परिस्थितियों में ही किये गए। परिवार, समाज, स्कूल, शिक्षा प्रशासन आदि के चौतरफा दवाब के बीच। कैसा लगता होगा जब सरकारी शिक्षक को उसका ही परिवार संशयपूर्ण निगाहों से देखता होगा ? लेकिन बड़ा सच तो यही है कि– शिक्षक का काम तो सिर्फ पढ़ाना है, उसका मूल्यांकन भी पढ़ाये हुए से ही होगा !

भोजन व्यवस्था, गणवेश व्यवस्था, छात्रवृति व्यवस्था, शौचालय स्वच्छता, विद्यालय सौंदर्यीकरण, पुस्तकालय व्यवस्था, निर्माण कार्य, प्रशिक्षण आदि–इत्यादि। इस प्रकार विद्यालय से जुड़े अनेकों कार्य हैं, जिसके लिए प्रा. विद्यालय के पास न तो कोई सपोर्टिंग स्टाफ है और न ही वैकल्पिक व्यवस्थाएं। मात्र अपेक्षा करने से क्या हासिल होगा? शायद इस स्थिति को देखते हुए ही आर. टी. ई. में प्रधानाध्यापक के पद को गैर शैक्षणिक कर दिया गया। यहां शिक्षक प्रमोशन के बाद ही प्राथमिक विद्यालयों का प्रधानाध्यापक बन सकता है। यदि यह पद गैर शैक्षणिक है तो इसका अर्थ यह होगा कि अनुभव के बाद शिक्षक पढाने योग्य नहीं रह जाता। ये कैसा मजाक है ? वास्तव में शिक्षक साल भर इन्हीं कार्यों में व्यस्त है और जो समय बच जाता है उसमें वह प्रशिक्षण करता है।

शिक्षक का कार्य क्लर्की कार्य की तरह नहीं होता कि वो बता सके की आज दिन के अन्त तक उसने इतनी फाइलें पूर्ण कर लीं. उसके किए गए कार्य का प्रत्यक्ष प्रमाण दे पाना सम्भव नहीं होता। इसलिए अनुभवी बाल मनोविज्ञान के जानकार ही शिक्षक का निरीक्षण करने योग्य होते हैं. परन्तु ऐसा होता हैं? कहाँ होता है? सालों से शिक्षण से दूर व्यक्ति ही शिक्षक का निरीक्षण करता है। यह व्यवस्था शिक्षा के लिए दुर्भाग्यपूर्ण है। ऐसा करने से शिक्षण के उद्देश्यों और शिक्षक के मनोबल पर विपरीत असर पड़ता है। वह जिन उद्देश्यों के तहत कार्य करेगा, परिणाम उसी अनुरूप प्राप्त होंगे। आज अपेक्षाएं तथा उद्देश्य दोनों ही परिवर्तित हुए हैं। शिक्षकों के उद्देश्य भी बदले हैं तो समाज की अपेक्षाऐं भी। यहां कार्य कर रहा शिक्षक एक मनोवैज्ञानिक दबाव से ग्रसित है, तथा इस शंसय में है कि क्या वह वास्तव में कार्य कर रहा है? या वह भी अपने को नाकारा समझ कर बैठ जाए, जैसा बहुत से लोग सोचते और चाहते भी हैं। शिक्षा आज आम समाज के न चाहते हुए भी व्यवसायिक रूप ले चुकी है। ट्यूशन को तो सरकार ने गलत कहा, परन्तु कोचिंग सैन्टर को खूब संरक्षण दिया।

शिक्षक को गंभीर होना होगा। इसलिए नहीं कि उनका व्यवसाय खतरे में है, बल्कि वे गरीबों के बच्चों के जीवन की दशा और दिशा तय करने वाले हैं।

Azim Premji Foundation

National Knowledge Commission
Government of India

शिक्षकों का ई–मंच (पोर्टल)

अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन तथा राष्ट्रीय ज्ञान आयोग द्वारा संयुक्त रूप से सभी शिक्षकों, शिक्षक– अध्यापकों एवं अध्यापक–छात्रों के शैक्षिक अनुभवों के आदान–प्रदान करने, शिक्षा नीतियों, कक्षा–कक्ष शिक्षण एवं अन्य महत्वपूर्ण शैक्षिक मुद्दों से रूबरू कराने एवं शैक्षिक विचारों के आदान–प्रदान हेतु ई–मंच (पोर्टल) की स्थापना की गई है जिसकी वैबसाइट है–

www.teachersofindia.org

इसकी सदस्यता निशुल्क है। आप भी इस से जुड़कर इसका लाभ उठा सकते हैं। किसी भी जानकारी हेतु निम्न फोन नम्बर पर सम्पर्क करें–

अम्बरीश बिष्ट	–	9456591201
यशवेन्द्र सिंह रावत	–	9456591203
कैलाश कांडपाल	–	9456591213
डॉ. विपिन चौहान	–	9456591215

समाज, विज्ञान और समाज का विज्ञान

भास्कर

''सिद्धांत, सैद्धांतिक अध्ययन और दर्शन को मानसिक कसरत कर समझने का अपना महत्व है, लेकिन ज्ञान को खुली आँखों से महसूस करना/प्रत्यक्ष समझना कहीं अधिक संतुष्टि देता है।''

30 मई को उत्तरकाशी और उधमसिंह नगर जनपद के शिक्षकों का नैनीताल भ्रमण कुछ इसी तरह की सामूहिक भावाभिव्यक्ति बनकर सामने आया। दरअसल रोज ही नन्हे बच्चों की जिज्ञासाओं का सामना करने वाले इन शिक्षकों की आँखें इस बार खुद भी बालसुलभ उत्कंठा से लबरेज थीं।

भीमताल डायट में आयोजित सामाजिक विज्ञान शिक्षकों की प्रायोगिक शिक्षा के चरण में हम करीब 52–53 सदस्य ठीक 10 बजे नैनीताल डांठ या तल्लीताल में थे। हमें सबसे पहले डी.एस.बी. परिसर स्थित 'हिमालय संग्रहालय' पहुंचना था। लेकिन नैनीताल की ट्रैफिक व्यवस्था ने हमें बस लेकर माल रोड के मार्ग से जाने से रोक लिया। जब हम मेहमान शिक्षकों के लिए छोटी गाड़ियों की व्यवस्था में लगे थे तब शिक्षकों के बीच से ही ट्रेकिंग कर कॉलेज पहुँचने का प्रस्ताव आया। यहाँ से यात्रा का यादगार होना तय हो गया।

हम सब करीब डेढ़ किलोमीटर की तीखी चढ़ाई के बाद परिसर में दाखिल हुए। उत्तराखंड के सबसे खूबसूरत ज्ञान विहार में विचरण का समय। चढ़ाई में हाँफते–हाँफते एक शिक्षक की नजर जब परिसर के माहौल पर गयी तो उनकी सीधी प्रतिक्रिया थी "धन्य हो गए, बड़ा नाम सुना था इस कॉलेज का, पढ़ तो नहीं पाए यहाँ, लेकिन आज दर्शन हो गए"।

हिमालय संग्रहालय के प्रभारी डॉ. एच. एस. भाकुनी हम सब के खैरमकदम को मौजूद थे। वह हमें सभ्यता–पूर्व मनुष्य जीवन से

लेकर समकालीन इतिहास तक की यात्रा में ले गए। इतिहास जानने के वैज्ञानिक उपकरण जैसे लखु उडियार के भित्ति चित्र, कुषाण कालीन अभिलेख, मौर्य, चंद, गोर्खा, कत्युरी राज के दौर के

एतिहासिक साक्ष्य आदि दिखाए। यह जानना रोचक था कि हिंदी का तीसरा अखबार 'समय विनोद' नैनीताल से निकलता था। तब दिल्ली, लखनऊ, पटना, भोपाल, देहरादून से अखबार नहीं शुरू हुआ था। दूसरी चीज संग्रहालय का भवन, 1867 का गोथिक शैली में बना। इसमें अंग्रेजों के समय वेलेजैली गर्ल्स स्कूल था। पहाड़ की कृषि–पशुपालन आधारित अर्थव्यवस्था के भी दर्शन यहाँ हुए। साथ ही नृवंशीय भिन्नता और भौगोलिक वैभव का सचित्र ज्ञान। विविध लोकनृत्यों की जानकारी भी मिली। डॉ. भाकुनी ने बताया कि इस संग्रहालय की स्थापना 1987 में यू. जी. सी. के तत्कालीन चेयरमैन प्रो. यशपाल के द्वारा की गयी थी। अब यह इतिहास का अध्ययन करने वाले लोगों के लिए एक धरोहर की तरह है।

हिमालय संग्रहालय देखने के उपरांत दल दो टीमों में बंट गया। पहला दल, कुमाऊं विश्वविद्यालय के प्रशासनिक परिसर स्थित केन्द्रीय पुस्तकालय और यू. जी. सी. अकादमिक स्टाफ कॉलेज देखने पहुंचा। शिक्षकों के यहाँ नैनीताल के आतंरिक हिस्सों को देखने का अवसर मिला। केन्द्रीय पुस्तकालय के कर्मचारियों ने शिक्षकों का पुस्तकालय में स्वागत किया। यहाँ शिक्षकों ने विभिन्न विषयों से संबंधित पुस्तक दीर्घाओं, वेब लाइब्रेरी, जर्नल

सेक्शन, मैगजीन सेक्शन आदि देखे। एक शिक्षिका की प्रतिक्रिया थी "अगर दूसरा जन्म मिला तो नैनीताल में पढ़ना चाहेंगी। सुरम्य वातावरण के बीच शिक्षा गहरे अर्थ पाती है।" अकादमिक स्टाफ कॉलेज जहाँ डिग्री शिक्षकों का प्रशिक्षण होता है, एक एतिहासिक भवन (हर्मिटेज) में स्थित है। यह चित्ताकर्षक गोथिक क्राफ्ट है।

दूसरे दल ने इस दौरान नैनीताल नगर और यहाँ स्थित ब्रिटिशकालीन अवस्थापनाओं को देखा। यह जानना अच्छा लगा कि नैनीताल का ड्रेनेज सिस्टम जिम कॉर्बेट ने बनाया था और ब्रिटिश काल में बनी नालियां आज भी दुरुस्त हैं। शिक्षकों ने यहाँ ब्रिटिशकाल में स्थापित पम्प हाउस (जो आज भी काम कर रहा है) और गिरजाघर देखे। नैनीताल के खेल मैदान डी.एस.ए. ग्राउंड की खासियत है कि इसके चार कोनों में मंदिर, मस्जिद, गिरिजाघर और गुरुद्वारा अवस्थित हैं, जो नगरवासियों के धार्मिक सद्भाव की निशानी है।

लंच के उपरांत सभी को आर्यभट्ट अंतरिक्ष प्रेक्षण संस्थान (एरीज) जाना था। गंतव्य के लिए मल्लीताल से तल्लीताल को कुछ लोग माल रोड और कुछ ठंडी सड़क के मार्ग से पहुंचे। ठंडी सड़क के मार्ग में झील का एयरेशन सिस्टम देखने को मिला। झील में तैरती हुई सैकड़ों महाशीर मछलियां झील की मौजूदा स्वास्थ्य की संकेतक थीं।

एरीज नैनीताल से 14 किलोमीटर दूर मनोरा पीक पर स्थित है। यह संस्थान 1954 में वाराणसी में वजूद में आया था, लेकिन इसे कुछ ही वर्षों बाद नैनीताल लाया गया। ठीक वैसे ही जैसे पुणे से आई.वी.आर.आई. का मुख्यालय मुक्तेश्वर और कोलकाता से सर्वे ऑफ इंडिया का मुख्यालय अंग्रेज देहरादून ले आये थे। मनोरा पीक की खासियत ये है कि यहाँ से स्वच्छ और खुला आसमान अधिक समय तक मिलता है। एरीज विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय, भारत सरकार का प्रतिष्ठान है। यहाँ मौजूदा समय में करीब 60 वैज्ञानिक कार्यरत हैं। यहाँ एस्ट्रोनॉमी–एस्ट्रोफिजिक्स, वायुमंडल, सन एंड सोलर सिस्टम, स्टेलर एस्ट्रोनॉमी, स्टार फार्मेशन, एक्स–रे एस्ट्रोनॉमी, एस्ट्रोफेरिक साइंसेज आदि का अध्ययन होता है। नियमित वैज्ञानिकों के अलावा यहाँ विभिन्न विश्वविद्यालयों से एडवांस फिजिक्स के छात्र भी शोध करने पहुँचते हैं। वैज्ञानिकों ने हमें बताया कि बेल्जियम की मदद से जल्द ही नैनीताल जिले के देवस्थल (मुक्तेश्वर) में एशिया की सबसे बड़ी दूरबीन (3.6 मीटर) स्थापित की जा रही है। इससे

अंतरिक्ष के बारे में और गहन जानकारियां सामने आ सकेंगीं।

एरीज में हमें पहले एक गुम्बदनुमा भवन में ले जाया गया। यह एक प्लेनेटोरियम यानि तारामंडल था। एक फिल्म के माध्यम से हम आसमान के रहस्य को समझने की कोशिश कर रहे थे। हमें प्राचीन यूनान, भारत और पर्शिया के उन अन्वेषकों के काम से परिचित कराया गया, जब खुली आँखों से आसमान को देखकर ग्रहों की स्थिति और प्रभाव का आकलन होता था। पहले सभी विद्वान मानते थे कि पृथ्वी ब्रह्मांड का केंद्र है और सूर्य इसके चक्कर काटता है। कोपरनिकस ने इस धारणा को चुनौती दी और बताया कि केंद्र सूर्य है। लेकिन वह इस धारणा के पक्ष में कोई ठोस सबूत नहीं दे सका। पहला सबूत गैलीलियो लेकर आये, जिन्होंने दूरबीन की मदद से अंतरिक्ष को देखा था। इसके बाद तो विज्ञान को युग ही शुरू हो गया। केप्लर, न्यूटन और फिर आइन्स्टाइन की महान अवधारणाए, जिनके दम पर आज का सारा तर्क और विज्ञान राज कर रहा है। अपने आर्यभट्ट का भी योगदान हमें पता चला। उन्होंने अंकों की गणना को आसान बनाने का काम किया था।

एरीज के वैज्ञानिकों ने बताया कि बहुत समय तक यह धारणा थी कि ब्रह्मांड में एक ही सौरमंडल है। लेकिन आज की खोजों से पता चला है कि उसमें एक नहीं कई सौरमंडल मौजूद हैं। जिन्हें मिल्की वे कहा जाता है। फिल्म दिखाने के बाद हमें करीब 500 मीटर दूरी पर स्थित सम्पूर्णानंद दूरबीन (104 सेमी.) के कक्ष में प्रविष्ट कराया गया। हमें बताया गया कि इस दूरबीन से रात भर वैज्ञानिक किस तरह अंतरिक्ष के भीतर की हलचल को समझते हैं। रात में 7 से 9 बजे के बीच तारों की गति को सामान्य लोगों को भी दिखाया जाता है।

...और महौल बदलने लगा

अमित कुमार

यह आज से लगभग चार वर्ष पहले की बात है जब रुद्रपुर ब्लॉक मे शिक्षकों का एक अनौपचारिक समूह गठित हुआ इसमे सरकारी विद्यालयों के कुछ शिक्षक किसी छुट्टी के दिन एक साथ बैठते हैं और कक्षा–शिक्षण से जुड़े अपने अनुभव साझा करते हैं। इसी समूह की एक बैठक मे अनीता जी से परिचय हुआ। उन्होंने पुस्तकालय से गेरेथ बी मेथयूज की पुस्तक "बच्चों से बात–चीत" पढ़ने के लिए इशू करवाई । परिचय में पता चला कि अनीता जी रा.प्रा.वि. मल्सी में कार्यरत हैं। बैठक के दो–तीन दिन बाद मैं उनसे मिलने मल्सी गया।

मल्सी गाँव में सिख, मुस्लिम व हरबोला समुदाय के लोग रहते हैं पर स्कूल में ज्यादातर हरबोला व मुस्लिम समुदाय के बच्चे ही पढ़ने के लिए आते हैं। विद्यालय में लगभग 150 बच्चे नामांकित थे और चार शिक्षक जोकि विद्यालय के माहौल को बेहतर करने की पुरजोर कोशिश कर रहे थे। प्रधानाध्यापक श्रीपाल जी से यह मेरी पहली मुलाकात थी। उन्होंने बड़ी सहजता से मुझसे कहा कि अमित जी हमारे विद्यालय तो बहुत से लोग आए पर आज तक किसी ने हमारी कोई मदद नहीं की। क्या आप हमारी कुछ मदद कर सकते हैं ? मैं कुछ कहता इससे पहले ही उन्होंने हरबोला समुदाय व इनके कार्यों के बारे में बताना शुरू कर दिया, जिससे उन्हें विद्यालय संचालन में काफी दिक्कतें आ रही थीं। उन्होंने बताया कि हरबोला समुदाय के लोग भीख मांगने का अपना पुश्तैनी काम करते हैं, जिसमें वे अपने बच्चों को भी साथ रखते हैं और इसकी वजह से उनके बच्चे विद्यालय नहीं आते और आते हैं तो कई कई दिन की छुट्टी के बाद।

यह हमारी पहली मुलाकात थी पर जिस आशा और विश्वास के साथ वे मुझे यह सब बता रहे थे इससे यह तो साफ था कि वे इस समस्या से काफी गंभीर थे और इसका समाधान भी करना चाहते थे। इस पहली मुलाकात और शिक्षकों के हुई बातचीत से मैं काफी प्रभावित हुआ। उस दिन की मुलाकात का अंत इस बात के साथ हुआ कि हम चार–पांच दिन बाद समुदाय के साथ एक बैठक करते हैं और अपनी इस समस्या में उनको भी शामिल करते हैं। इस तरह मल्सी जाने का सिलसिला शुरू हुआ जो

आज तक जारी है। मुझे जब भी वक्त मिलता, मैं मल्सी चला जाता और कभी समुदाय के साथ बैठक करना, कभी विद्यालय में बच्चों के साथ कुछ काम करना या शिक्षक साथियों से चर्चा करना। धीरे–धीरे समुदाय के साथ बैठकों का सिलसिला नियमित होने लगा और कुछ ही समय बाद विद्यालय प्रबंधन सामिति का नया गठन हुआ और शिक्षकों ने समुदाय के सहयोग से 'बाल शोध मेले' का आयोजन हुआ।

इस बाल शोध मेले ने बच्चों, शिक्षकों व समुदाय सभी को एक नई ऊर्जा से भर दिया। जल्दी ही समुदाय के साथ मिलकर शिक्षकों ने 'विद्यालय विकास योजना' का निर्माण किया। ऐसा नहीं है कि मेले के बाद सब कुछ ठीक ठाक हो गया था अभी भी बच्चों की साफ सफाई, उनका पढ़ने–लिखने का स्तर बढ़ाना, विद्यालय प्रांगण में मिट्टी भरान आदि बहुत काम बाकी था, परंतु कुछ–कुछ अलग होने लगा था। बस शिक्षकों की कमी महसूस होती थी। श्रीपाल जी को लगता था कि नई नियुक्तियों में से एक शिक्षक और आ गए तो अच्छा हो जाएगा, परंतु ऐसा हुआ नहीं। बल्कि कुछ समय बाद विभाग में शिक्षकों की पदोन्नति हुई जिसमें अनीता जी पदोन्नति के बाद जूनियर विद्यालय में चली गईं। विद्यालय में पहले ही कम शिक्षक थे उनके जाने से कार्य और प्रभावित होने लगा। अनीस जी को कई बार बीएलओ ड्यूटी करनी पड़ती तो विद्यालय में दो ही शिक्षक रह जाते श्रीपाल जी

और रमा जी। ऐसे में समुदाय के साथ बैठक तो नियमित रूप से चलती रही, परंतु शिक्षकों के अभाव में शिक्षण कार्य बहुत प्रभावित होने लगा। जब शिक्षण कार्य नहीं हो पाता तो बच्चे व समुदाय दोनों की विद्यालय में रुचि कम होती। अनीता जी के जाने के बाद भी कुछ–कुछ हो रहा था परंतु कुछ दिन बाद श्रीपाल जी भी रिटायर हो गए यानि एक सिलसिले का अंत करीब होने जैसा। अनीस जी जब बी.एल.ओ. ड्यूटी से फुर्सत पाते तो चीजों को ठीक करने का भरसक प्रयास करते पर उनकी भी अपनी सीमाएं थीं। इस तरह शिक्षकों ने बदलाव का जो अभियान शुरू किया था तो वह शिथिल पड़ गया। इससे मल्सी जाने की मेरी आवाजाही में भी कमी आई परंतु फोन पर नियमित संपर्क रहा। कुछ समय बाद विभाग में शिक्षकों के तबादले हुए, जिसमें मल्सी में दो नए शिक्षक आ जुड़े। यानि फिर से चार शिक्षक। इस खबर से मैं काफी उत्साहित था परंतु अन्य व्यस्तताओं के चलते विद्यालय न जा सका।

तो मैं लगभग तीन माह बाद मल्सी गया और मैंने जो देखा वह अभी तक नहीं नहीं देखा था। मैं बाइक अक्सर अंदर ही ले जाता था पर आज विद्यालय का दरवाजा झुका हुआ था, इसलिए उसे बाहर ही खड़ा कर दिया और अंदर घुसते ही देखा कि सभी बच्चे लाइन में बैठकर खाना ले रहे थे। भोजन माताएँ बच्चों के पास जाकर उन्हें खाना दे रही थीं। मेरे लिए मल्सी के संदर्भ में यह उत्साहित करने वाली तस्वीर थी। बच्चों के चेहरों पर चमक थी, उनके कपड़े पहले से बहुत साफ लग रहे थे। अधिकांश बच्चे नहाकर आए थे। विद्यालय प्रांगण साफ था, कमरों में जिनमें बहुत धूल रहती थी वे बैठने की हालत में थे। तनु जी और पूजा जी से परिचय हुआ तो पता चला कि मल्सी में अब पाँच शिक्षक हो गए हैं। यानि कि एक नई नियुक्ति और।

इस तरह तीन माह में मल्सी को तीन शिक्षक मिले, जिससे विद्यालय का पूरा माहौल बदलने लगा है। कक्षाएँ लगनी शुरू हो गई हैं। सबमें खूब उत्साह दिखाई दे रहा है। शिक्षकों के आने से कुछ नए बच्चे और आ गए हैं और कुल नामांकन जो पिछले साल 148 था, अब 160 हो गया है। निश्चित रूप से सामजिक–सांस्कृतिक रूप से पिछड़े माने जाने वाले हरबोला समुदाय के लिए यह बड़ी खबर है। दूसरी बात मुझे जो समझ आई वो ये है कि स्कूल में शिक्षक का कोई विकल्प नहीं। स्कूल को जरूरी और पर्याप्त शिक्षक मिलें तब ही शिक्षा में बदलाव की बात हो सकती है।

क्यों हों इतने उदासीन !!!

सीमा नैथानी

प्राणियों में सर्वश्रेष्ठ, मनुष्य
गौरव है इसका, मस्तिष्क
नहीं इस–सा दूजा जगत में
ये सबसे श्रेष्ठ

उपेक्षा, स्वार्थ, ईर्ष्या
ये कैसे आभूषण?
लगते हैं इनसे चार चाँद?
पैसा तो नहीं कहीं कारण?

इतनी मेहनत करते हो मनुष्य
फिर क्यों हो असंतुष्ट?
बात–बात पर रोना रोते
दिखते तो हो ह्यष्ट–पुष्ट

कैसी बात करते हो तुम?
क्या अस्तित्व है तुम्हारा?
दया, मृदुलता, संवेदना
बताते हो इनको दुर्बलता

नन्हे बच्चों के चेहरों को देखो जरा
कैसी सह्यदयता
कैसी निश्छलता
नहीं रखते लेखा–जोखा
वही पाओगे जो बोओगे
सोचोगे क्या खोया, पाया क्या

ऐश्वर्य में होकर लीन
मानवता से दीन–विहीन
अपने दायित्वों के प्रति
क्यों हो इतने उदासीन?
हे मनुष्य !

रा.प्रा.वि., भूरारानी रुद्रपुर, उधमसिंह नगर

शिक्षा का अधिकार और विद्यालय प्रबंधन समिति

विकास खन्ना

भारत के संविधान को देखें तो समझ में आता है कि संविधान में सभी के लिए शिक्षा की बात हुई है। इसके साथ–साथ 14 वर्ष तक के बच्चों के लिए मुफ्त व अनिवार्य शिक्षा का संकल्प हुआ है. संविधान बनने के बाद यह सपना 10 साल में पूर्ण करने की बात थी, जो तय समय में पूरा नहीं हो पाया। इसी सपने को साकार करने के लिए सरकार द्वारा समय–समय पर कार्यक्रम व नीतियां बनायीं, जैसे राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986। इसी क्रम में सरकार ने 73वें संविधान संशोधन के उपरांत शिक्षा के विकेंद्रीकरण की बात की, जिसके तहत पंचायती राज संस्थाओं को गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा और शिक्षा व्यवस्था में बेहतर सुधार हेतु निरीक्षण का काम सौंपा। इसी समय शिक्षा में समुदाय के महत्व को समझते हुए ग्रामीण शिक्षा समिति का भी गठन किया गया। यह सब सर्व शिक्षा अभियान के लागू होने के बाद हुआ।

60 साल पूर्व देखे गए सपने में निरंतर प्रयास के बाद भी जब अपेक्षाजनक परिणाम सामने नजर नहीं आये तब 1 अप्रैल 2010 को सरकार ने 'शिक्षा का अधिकार कानून' लागू किया। जिसमें 6 से 14 वर्ष तक के बच्चे को मुफ्त व् अनिवार्य शिक्षा की बात के साथ विद्यालय में बच्चों का ठहराव, विद्यालय से बाहर रह रहे बच्चे जो अभी भी शिक्षा से वंचित हैं को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा इत्यादि की बात की। संविधान में लिए गए संकल्प को ही मजबूती देने के लिए यह कानून लाया गया। आज तीन वर्ष बाद इस कानून के प्रभाव को देखने की चेष्ठा के साथ अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन के सदस्यों ने रुद्रपुर जिले के काशीपुर, गदरपुर और रुद्रपुर विकास खण्ड के तीन गांवों में एक शोध किया।

इस शोध के पीछे यह मंशा थी कि शिक्षा के अधिकार कानून के तहत बनी विद्यालय प्रबंधन समिति किस सीमा तक कार्य कर पाई? इसी के साथ विद्यालय व् समुदाय के जुड़ाव को भी देखने का प्रयास किया गया। जुड़ाव चाहे बैठकों में शामिल होने के रूप में हो या व्यक्तिगत तौर पर. साथ ही वित्त एवं कार्यों में पारदर्शिता व विद्यालय प्रबंधन समिति के कार्य व दायित्व पर सदस्यों की समझ जानने का भी प्रयास किया गया।

इस कार्य के लिए प्रधानाध्यापकों, पंचायत प्रधान, शिक्षक, अभिभावक, विद्यालय प्रबंधन समिति के सदस्य, ग्रामीण शिक्षा समिति के अध्यक्ष के साथ संवाद किया गया। बातचीत के उपरांत कुछ इस प्रकार के बिंदु उभरकर आए:

- आज भी विद्यालय प्रबंधन समिति के सदस्यों को अपने कार्य व दायित्वों की पूर्ण जानकारी नहीं है या यूँ कहिये कि बहुत ही सीमित जानकारी है। ऐसे में विद्यालय विकास योजना की अपेक्षा अभी दूर की बात है।
- अभिभावकों का विद्यालय के साथ जुड़ाव देखें तो इसमें कुछ सुधार नजर आता है। बैठकों में हो या व्यक्तिगत तौर पर। जिसका नतीजा यह है कि वित्त संबंधी जानकारी भी अब लोगों को मिलने लगी है। साथ ही साथ विद्यालय में नया क्या हो रहा है यह भी पता लगने लगा है।
- विद्यालय में कार्य कर रहे शिक्षक भी अब समुदाय को विद्यालय में आमंत्रित करते हैं।
- बैठकें मुख्यतः निर्माण कार्य और मध्याह्न भोजन तक ही चर्चा तक सीमित हैं। शिक्षा का अधिकार कानून के तहत अपेक्षित बातें अभी भी अछूती हैं। जैसेः गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा, नामांकन, उपस्तिथि, बच्चों का विद्यालय में ठहराव आदि।
- शिक्षा का अधिकार कानून अभी सपना है, लेकिन इस सपने को सच करने के यात्रा शुरू हुई दिखती है। भले अभी कदम कुछ धीमे–धीमे हैं।

समाजसेवी संस्थाओं के बीच साझीदारी की बात

योगेश

अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन (उधमसिंह नगर और कुमाऊं एक्सटेंशन टीम अल्मोड़ा) की ओर से 3–4 अक्टूबर 2013 को मुनस्यारी (जनपद पिथौरागढ़) में 'चौथी एनजीओ मीट' का आयोजन किया गया। मीट में उत्तराखंड के कुमाऊं मंडल के विभिन्न हिस्सों में अलग–अलग मुद्दों को लेकर लम्बे समय से काम कर रही संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। हिमालय की मनोहारी पंचचूली हिमशिखर की जड़ में स्थित मुनस्यारी, उच्च हिमालयी क्षेत्र का सीमान्त है, जो तिब्बत (चीन) के साथ भारत की सीमा बनाता है। मुनस्यारी जाने के लिए थल से पहले रामगंगा नदी किनारे, फिर बिर्थी फाल जैसे अनेकों ऊंचे झरनों को पार कर कालामुनी की चोटी तक पहुंचना होता है। जहाँ से थोड़ा नीचे उतरते हुए मुनस्यारी नाम का छोटा लेकिन बेहद खूबसूरत कस्बा आता है। मुनस्यारी पहुँचने का दूसरा मार्ग पिथौरागढ़ जिला मुख्यालय, ओगला, मदकोट से भी है, लेकिन उत्तराखंड में इस बार आई आपदा में यह मार्ग क्षतिग्रस्त है, सो एनजीओ मीट में प्रतिभाग करने पहुंची सभी टीमें थल–कालामुनी मार्ग से ही मुनस्यारी पहुँचीं। उत्तर–पूर्व दिशा में स्थित घाटी में मिलम ग्लेशियर से निकलने वाली गोरी नदी मुनस्यारी के पैरों को छूती हुई निकलती है। जो काली नदी (बाद में शारदा, घाघरा और गंगा) की सहायक नदी है।

मुनस्यारी में इस बैठक को आयोजित करने में 'माटी' नामक संगठन ने सहयोग किया। ग्रामीणों के आजीविका संवर्धन के लिए माटी यहाँ 'होम स्टे' का अनूठा प्रयोग कर रही है। यहाँ पहुंचे प्रतिभागियों को इन्हीं समुदाय आधारित और समुदाय संचालित होम स्टे में टिकाने का प्रबंध किया गया था। साथ की स्थानीय कृषि उत्पादों पर आधरित भोजन की भी व्यवस्था थी।

बैठक में कुमाऊं मंडल के छह जिलों में से चार उधम सिंह नगर, नैनीताल, अल्मोड़ा, बागेश्वर और पिथौरागढ़ जिलों की 15 संस्थाओं से करीब 22 प्रतिनिधियों ने शिरकत की। माटी संचालिका, वन सरपंच संगठन सरमूली की पूर्व सरपंच और उत्तराखण्ड महिला मंच की मल्लिका विर्दी ने सभी प्रतिभागियों का बैठक में स्वागत किया। माटी की महिला सदस्यों ने इस मौके पर 'तू खुद को बदल, तभी तो ये जमाना बदलेगा, काली की कसम–गोरी की कसम ये जमाना बदलेगा' गाया। शेष सदस्यों ने कोरस में सहयोग किया। इसके बाद संक्षिप्त में पिछली बैठक (चिराग, मुक्तेश्वर, नैनीताल) में हुई बैठक का पुनरावलोकन किया गया।

अजीम प्रेमजी फाउंडेशन के बिजॉय शंकर दास ने कहा कि तीन बैठकों के बाद इस चौथी बैठक में संस्थाओं के बीच भागीदारी की कोई ठोस योजना निर्धारित कर ली जानी चाहिए। साथ ही यह ही तय करने की जरूरत है कि इस बैठक को किस तरह से सबकी जिम्मेदारी में शामिल किया जाये। उन्होंने कहा कि साझा मंच के बारे में फाउंडेशन का अपना दृष्टिकोण स्पष्ट है। हम चाहते हैं कि सभी संस्थाएं और सदस्य साझीदारी की जरूरत को महसूस करें।

'चिराग' संस्था की सदस्य ने कहा कि आपदा के समय यह सवाल सब जगह से आ रहा था कि इस समय एनजीओ कहाँ गयीं। हालाँकि सभी संस्थाओं ने इस बार की आपदा में काफी योगदान दिया, लेकिन अगर यह योगदान सामूहिक रूप में प्रकट होता तो अधिक बेहतर होता। उन्होंने यह भी कहा कि चिराग संस्था ने भी पूर्व में एक साझा मंच बनाया था, जिसमें करीब 18–19 संस्थाओं ने भागीदारी की। लेकिन बाद में यह प्रयास आगे नहीं बढ़ सका। जबकि आज भी संयुक्त भागीदरियों की आवश्यकता महसूस होती है।

'कगास' संस्था के सदस्य ने कहा कि साझा मंच के उद्देश्य और दिशा तय करने जरूरी हैं। शैलनट के सचिव रूपेश कुमार ने कहा कि उनकी संस्था पहली बार बैठक में भाग ले रही है। लेकिन तीन बैठकों के बाद भी साझा मंच का उद्देश्य स्पष्ट करना जरूरी है। हमें कोई साझा कार्यक्रम हाथ में लेने की जरूरत महसूस होती है।

'सैणियों का संगठन' के गोपाल ने कहा कि साझा मंच, एक दूसरे से सीखने में मदद करता है। अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन के राजीव शर्मा ने कहा कि उद्देश्य स्पष्ट होना आवश्यक है, भले ही वह फिर मेल–मिलाप के माध्यम से समझ बढ़ाने तक ही सीमित

हो। उन्होंने कहा कि हम सभी लोग ऐसे काम में इसलिये आये हैं कि कुछ करें। व्यक्ति ही संस्थाओं को बनाते हैं। व्यापक उद्देश्यों में हम सब के रास्ते मिलते हैं। अलग–अलग काम करने या अलगाव में काम करने में कई दुश्वारियां आती हैं। फाउंडेशन के राजू महर ने कहा कि हम सब लोग अलग–अलग प्रयास कर रहे हैं, लेकिन विखरे हुए लगते हैं। जब सबका सपना न्यायपूर्ण और समतामूलक समाज बनाने का है तब हमें इस साझीदारी की गुंजाईश तलाशनी पड़ेगी। कुमाऊं सेवा समिति के इमरान ने कहा साझा मंच हमें ग्रामीण क्षेत्रों में काम करने में मददगार हो सकता है। बिजॉय ने कहा कि साझा मंच को अभी आउटपुट के रूप में नहीं देखा जा सकता। यह जटिल सा काम है। जैसे एक ही ट्रेनिंग से किसी शिक्षक को नहीं बदला जा सकता, ठीक उसी तरह का।

मल्लिका ने कहा कि रचनात्मक काम करने वाले लोगों को कुछ ठोस योजनायें सामने रखनी ही चाहिए। उन्होंने कहा कि कई लोग शिक्षा और कई लोग आजीविका के काम में लगी हैं। सरकारी स्कूलों की चिंता भी आवश्यक है। दूसरे सत्र में माटी की मल्लिका और अन्य सदस्यों ने माटी का परिचय दिया। मल्लिका ने कहा कि वह माटी की संस्था या एनजीओ नहीं कहतीं, इसे संगठन कहती हैं। यह प्रदेश के प्रमुख महिला संगठनों का हिस्सा हैं। महिला मंच से भी हम जुड़े हैं। गैर–सरकारी हैं, लेकिन किसी से फंडिंग नहीं लेते। हम खुद कमाते हैं। होम–स्टे उसका एक जरिया है। उन्होंने कहा की काम करने का एजेंडा समुदाय तय करें और नागरिक करें, यह हमारा विश्वास है। आपदा आये तो हमें क्या करना चाहिए? राशन/आश्रय की व्यवस्था? और हिंसामुक्त जीवन भी हमारा मुद्दा है। संगठन के पास महिला हिंसा के 60–65 मामले आ चुके हैं. ऐसे मामलों को हम पंचायत बुलाकर सुलझाते हैं। जनप्रतिनिधियों को भी ऐसी बैठकों में बुलाते हैं। बड़े मुद्दों में हम दूसरे संगठनों की भी मदद लेते हैं।

संस्था की बसंती ने कहा कि 'अन्न सुरक्षा' के लिए भी संस्था काम कर रही है। कई विलुप्त हो रहे बीजों को एकत्र किया गया है। समूह जो बीज एकत्र करता है, उसे समुदायों में बांटा जाता है. पाली हाउस भी बनाये जा रहे हैं। मशरूम उत्पादन का प्रयोग सफल रहा है। राजमा और आलू उत्पादन का जो भाग बच जाता है, उसे बेच देते हैं। लेकिन, अपना उगाया पहले खुद खाएं, इस बात पर जोर रहता है। साथ ही आय के लिए बुरांश/ नींबू आदि का अचार भी बनाया जा रहा है। बच्चों के लिए 'जंगली स्कूल' चलाया जाता है। वन मुर्गी संरक्षण, हिमाल कला सूत्र मेला, याक ब्रीडिंग जैसे काम भी लिए हैं।

मल्लिका ने कहा कि सतत अर्थव्यवस्था की शैली बनी रहनी चाहिए, यही कोशिश हम कर रहे हैं। बाजार का सामान कम से कम आये। ऊंन उत्पादन यहाँ का पारंपरिक पेशा है। इस पर हम बहुत जोर देते हैं। जो काम मिलता है, वह महिलाएं आपस में बाँट लेती हैं। करीब 300 परिवारों तक हमने पहुँच बनाई है। दूरदराज की महिलाओं का सामान खरीदकर बेचते हैं। पकवानों की सांस्कृतिक धरोहर को बचाने के भी प्रयास हो रहे हैं। खेती का काम महिलाओं का प्रमुख काम है, लेकिन जमीन महिलाओं के नाम नहीं, यह बड़ा सामाजिक मुद्दा है। महिलाओं ने 'दुःख–सुख' जैसी व्यवस्था से एक–दूसरे की मदद का रास्ता निकाला है। जो महिलाएं संघर्षों से जुड़ी हैं, वे अपनी आय का 5 प्रतिशत संगठन को देती हैं। 'होम स्टे' जैसी व्यवस्था से ही संगठन के पांच लोगों का वेतन आता है। 2003 में शुरू हुआ यह प्रयोग अब चौकोड़ी तक जा पहुंचा है। मल्लिका ने कहा कि संगठन ने वन पंचायत को सुगठित करने के भी प्रयोग किये। उन्होंने कहा वन यहाँ के लोगों के लिए सबसे जरूरी संसाधन है, लेकिन सरकार उनसे वनों को छीन रही है। दूसरी तरफ गोरी–काली घाटी में ही कई विद्युत् परियोजनाएं बनने जा रही है। बिजली दिल्ली जाएगी और लोग यहाँ अपने नैसर्गिक अधिकारों से वंचित हो जायेंगे। जबकि जरूरत ये थी कि पर्यावरण संरक्षण की एवज में गैस सस्ती की जाती। संस्था की बीना ने बताया कि सुशासन की

अवधारणा की तहत पंचायतें की गयीं। अब घरों में पानी है और टॉयलेट हैं।

फाउंडेशन के राजीव शर्मा ने माटी के अनुभव सुनने के बाद कहा कि यह प्रयास समुदायों को सशक्त करने का प्रयास है। हम शिक्षा के क्षेत्र में काम करते हैं और महसूस करते हैं कि ऐसे प्रयास से सरकारी स्कूलों को भी मजबूती मिलेगी। इस तरह इस बिंदु पर आपमें और हममें साझीदारी की पूरी गुंजाईश दिखती है। चर्चा में शामिल होते हुए अन्य संस्थाओं के सदस्यों ने भी अपने काम के अनुभव साझा किये। गोपाल ने कहा कि हम गाँवों में स्वाभिमान और स्वावलंबन की जिंदगी जीते थे। अब ऐसा क्या हो गया है कि हम उन्हें छोड़कर पलायन को मजबूर हो रहे हैं ? कगास सदस्य ने कहा कि हम फंडिंग पर डिपेंड संस्था हैं, लेकिन अपनी तरह से समुदायों को आत्मनिर्भर और सशक्त करने के प्रयास कर रहे हैं। स्वास्थ्य/शिक्षा/आजीविका आदि कामों के लिए विभिन्न स्रोतों से फण्ड लेकर काम करते हैं। बिजॉय ने कहा कि हम देश भर के विश्वविद्यालयों में जाकर यूथ फोरम बना रहे हैं। चिराग सदस्या ने कहा कि हम स्वास्थ्य/शिक्षा और पर्यावरण के मुद्दों को लेकर लोगों के बीच जाते हैं. साथ ही आजीविका संबर्धन के लिए अनेकों उपाय कर रहे हैं। जन, जल, जंगल, जमीन और जानवर सब क्षेत्रों में दखल है। रूम टू रीड/दयाल फाउंडेशन आदि के सहयोग से स्कूलों में लाइब्रेरी भी बना रहे हैं। अभी संस्था की ओर से बनाई गयी 200 सेल्फ हेल्प ग्रुप में 80 लाख रूपये संचयित हैं। 160 के स्टाफ के साथ हम तीन जिलों, सात ब्लाकों में काम कर रहे हैं।

अस्कोट (पिथौरागढ़) से आई रेनू ठाकुर ने कहा कि क्षेत्र की वनराजी ट्राइब के लिए वह तीन दशकों से काम कर रही हैं। इनकी कुल तादात 600 के करीब रह गयी है। इस समुदाय के बच्चों को सामान्य हिसाब–किताब (काम का जरूरी ज्ञान) देने के प्रयास उन्होंने किये। साथ ही अस्कोट मृग विहार से पीड़ित गांवों के लिए भी वह लम्बे समय से संघर्ष कर रही हैं। अस्कोट कस्बे में लग रही सोने की खदान से हो रहे नुकसान के खिलाफ भी वह प्रयास कर रही हैं। रूपेश कुमार ने बताया कि उनकी संस्था शैलनट समाज में जागृति लाने के लिए समय–समय पर नाटक करती रहती है। सरल संस्था के संदीप ने बताया कि उनकी संस्था छोटी संस्था है, जो नैनीताल में महिला सशक्तिकरण के लिए काम कर रही है।

माटी के सहयोगी संगठन हिमाल प्रकृति के राम ने गोरी घाटी में बन रही जल विद्युत परियोजनाओं की जानकारी देते हुए बताया कि इसमें बिलकुल भी पारदर्शिता नहीं है। उनकी संस्था ग्रामीणों को विद्युत परियोजना से होने वाले नुकसान के बारे में बता रही है।

अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन के बिजॉय ने फाउंडेशन के उद्देश्य और इरादों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि यह पारदर्शिता पर आधारित संस्था है। भारत के संविधान से प्रेरणा लेकर यह समतापूर्ण, न्यायपूर्ण और सतत विकास पर आधारित समाज के निर्माण का लक्ष्य किये है। शिक्षा क्षेत्र को इसलिए चुना गया है, क्यूंकि यह समाज की विभिन्न क्रियाओं को गहरे से प्रभावित करता है। यह फंडिंग संस्था नहीं है और कोई समानांतर ढांचा भी नहीं खड़ा करेगी। फाउंडेशन की ओर से बंगलौर में स्थापित विश्वविद्यालय का काम शिक्षा के समूचे तंत्र को समझना, सार्वजनिक शिक्षा प्रणाली को अकादमिक मजबूती देना और ऐसे पेशेवर कार्यकर्ता तैयार करना है जो समाज की चुनौती को स्वीकार करें। उनके निदान में योगदान दे सकें। संस्था अपने अनुभव और समझ से यह सोचती है कि शिक्षा व्यवस्था में बदलाव और गुणवत्ता वे अकेले ही नहीं ला सकते। यह समाज में काम कर रही दूसरी संस्थाओं के साथ साझीदारी करके ही संभव हो सकता है। राज्य स्तर पर यह राज्य संस्थान, जिला स्तर पर जिला संस्थान और ब्लोक स्तर पर यह लाइब्रेरी गतिविधि केंद्र के रूप में काम करती है। फाउंडेशन, डाइट और एससीइआरटी के माध्यम से शिक्षक–प्रशिक्षण और पाठ्यक्रम निर्माण में सहयोग देता है। हमारे खुद के पास विषय–विशेषज्ञों की भी एक टीम है और शिक्षकों को प्रेरित और प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से ब्लोक स्तर पर वोलंटरी टीचर्स फोरम गठित किये हैं। इन बैठकों में शिक्षक छुट्टी के समय आते हैं।

दूसरे दिन का पहला हिस्सा माटी संस्था के काम को फील्ड भ्रमण के माध्यम से समझने में लगाया गया। पहली टीम वन पंचायत सरमूली को समझने के लिए ट्रेक पर गयी, जबकि दूसरी टीम माटी संस्था के कार्यालय पहुंची। पहली टीम के साथ मार्गदर्शन को मौजूद रहे हिमाल प्रकृति के राम ने प्रतिभागियों को पहले उत्तराखंड में वन पंचायतों के इतिहास और महत्व से परिचित कराया। दिन के दूसरे सत्र की शुरुआत में दोनों दलों ने अपने अनुभवों को आपस में साझा किया।

हौसला हो, तो खुल जाती है राह...

हरीश रावत

प्रधानाध्यापक, रा.प्रा. विद्यालय, काशीपुर

जहाँ शिक्षा में बदलाव एक, यक्ष प्रश्न की भाँति हम सबके सामने एक महती चुनौती प्रस्तुत कर रहा है, और पूरी शिक्षा व्यवस्था इसके उत्तर को पाने में ऐड़ी चोटी का जोर लगा रही है, वहीं पर कुछ शिक्षकों ने इसे चुनौती के रूप में स्वीकार करते हुए अपने स्तर पर बदलाव लाने के यत्न में लगे हैं। भारत जैसे विविधता वाले देश में शिक्षा का मसला और जटिल है, क्योंकि यहाँ पर कई धर्म, संस्कृतियों, जातियों के रूप में समाज की अलग–अलग मान्यताऐं और विश्वास है, जिसके चलते शिक्षा पर महत्वपूर्ण जिम्मेदारी आ गई है। इसलिए यह शिक्षा नियोजकों और कार्मिकों के सामने एक अलग ही तरह की चुनौती पेश की है। जिससे पार पाने और वांछित समाज की रचना के लिए अपने स्तर पर प्रयास भी किए हैं।

यदि हम पूरी शैक्षिक व्यवस्था को देखें तो शिक्षा में बदलाव की इस पूरी प्रक्रिया में शिक्षक की भूमिका अति महत्व की रही है। शिक्षक ही शिक्षा के वांछित उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए वाहक की भूमिका में है और रहेगा भी। इस पूरी शैक्षिक संरचना का गठन शिक्षक को सबल बनाने के उददेश्य से किया गया था। परन्तु दुर्भाग्यवश शिक्षक इस पूरी संरचना में सबसे निचले पायदान का एक हिस्सा भर बन कर रह गया। शिक्षक सशक्तिकरण के लिए जो प्रयास किए भी गए वह नाकाफी और अपर्याप्त सिद्ध हुए, परिणामस्वरूप शिक्षा से जिस तरह के परिणामों की अपेक्षा शिक्षक साथियों से की गई उसे प्राप्त करना एक दुरूह लक्ष्य बन गया। और शायद इसी के चलते शिक्षक साथी अपना वांछित योगदान देने में असमर्थ रहे। कारण स्वाभाविक थे और अपेक्षाओं के अनुरूप परिणाम ने दे पाने के कारण शिक्षक साथी बचाव की मुद्रा में आ गए और कमोवेश यही हाल शिक्षा के नियोजकों और सरकार का रहा, सरकार भी समाज से देश से किए गए वादे को पूरा न कर पाने का कारण शिक्षक की जिम्मे पर छोड़ दिया। जिसके कारण हमारे संवैधानिक मूल्यों के अनुरूप समाज निर्माण की कल्पना यथार्थ में उतरने के लिए अभी तक राह देख रही है।

एक ऐसे समाज में जहाँ पर सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक विषमताएं इतनी गहरी रही हों, जिसके चलते समाज के कमजोर तबके के लिए शिक्षा कभी आवश्यकता बन ही नहीं पायी । ऐसे में एक स्कूल की जिम्मेदारी और बढ़ जाती है। स्कूल न केवल आए हुए बच्चों को शिक्षा प्रदान करने का काम करता है, वरन् शिक्षा की पहुँच से दूर रहे तबकों के बच्चों को भी समाज निर्माण की मुख्य धारा में शामिल करना सुनिश्चित करता है। लोकतांत्रिक समाजों में स्कूल की स्थापना के उद्देश्य में यह निहित होता है कि समाज के सबसे उपेक्षित या हाशिए पर खड़े तबके के बच्चों को और इनके अभिभावकों को यह विश्वास भी दिलाए कि स्कूल और सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में उनकी बराबर की भागीदारी है। उपरोक्त बातों का जिक्र करने का केवल इतना भर आशय है, कि शिक्षा में बदलाव का मुद्दा एक कठिन चुनौती है। जिस पर छोटे–छोटे प्रयास बदलाव की प्रक्रिया में लगे लोगों के लिए प्रेरणा प्रदान करती है साथ ही निराशाजनक माहौल में सकारात्मक ऊर्जा देने का भी काम करती है। आखिर कहीं से तो शुरूवात होती होगी, कोई तो पहल करेगा। यह सोचकर मेरे मन में यह विचार आया कि क्यों न मैं ही इसकी पहल करूं।

वर्तमान में सरकारी शिक्षा के प्रति समाज में फैली नकारात्मकता के माहौल से ऐसा आभास होता है कि इस व्यवस्था के लिए कोई तो आगे बढ़कर पहल करेगा। एक शिक्षक होने के नाते मेरे मन में हमेशा से इस सबके प्रति एक टीस सी उठती रही है और सोंचता रहता हूँ कि इस माहौल के बनने में कहीं मेरा भी तो योगदान नहीं है। इसी एक सवाल ने मुझे स्वयं के स्तर पर कुछ करने का साहस प्रदान किया। इसी दौरान मुझे पदोन्नति मिली और मैं सहायक अध्यापक से प्रधानाध्यापक बना और काशीपुर के कुण्डेश्वरी संकुल अन्तर्गत प्राथमिक विद्यालय शिवलालपुर डल्लू में पदास्थापित हुआ। शायद मेरी जिन्दगी का सबसे प्रसन्नता वाला दिन था जब मैं प्रधानाध्यापक के तौर पर अपने इस नए विद्यालय में पहुँचा। विद्यालय में मेरे दो और शिक्षक साथी हैं जो पहले से ही यहाँ पर संघर्ष कर रहे हैं।

विद्यालय आकर सर्वप्रथम नामांकन के बारे में अपने साथियों से बातचीत की और जैसा कि मेरा अंदाजा था बच्चों की संख्या कम ही थी, रजिस्टर देखकर पता चला कि यहाँ पर 63 बच्चे नामांकित हैं और भवन के नाम पर कुल दो कक्ष हैं जिसमें बहुत मुश्किल से सभी बच्चे आ सकते हैं। इस विद्यालय की यह पहली चुनौती थी। महीना मई का था और हमें नामांकन को बढ़ाने का लक्ष्य हासिल करना था। मैने सोंचा कि यह काम मुझसे अकेले तो संभव नहीं होगा, जब तक मेरे सभी साथी अपना–अपना सहयोग नहीं देते। साथ ही समुदाय का सहयोग भी जरूरी होगा, नही ंतो यह लक्ष्य भी कोरी कल्पना भर बन कर रह जाएगा। अपने दोनो महिला साथियों के साथ इस मुददे को लेकर चर्चा की और इस काम को लेकर सुझाव मांगे। मेरे साथियों ने खुलकर सुझाव दिए और हर संभव सहयोग करने का वादा किया। उत्साह बढ़ा और विश्वास भी बना कि अब संभावना दिख रही है। हम इस कार्य को योजना बनाकर करना चाहते थे, पर यह समझ में नहीं आ रहा था कि शुरूवात कहाँ से करें? इसी दौरान जिला परियोजना कार्यालय से बालगणना करने का कार्य आ गया। इसको मैने एक अवसर के रूप में लिया और हम सबने तय किया कि हम घर–घर जाकर इस काम को करेगें। जिससे बच्चों की वास्तविक संख्या का पता चल सके, साथ ही अभिभावकों से भी संवाद और परिचय हो जाएगा। सो हम तीनो शिक्षक (अरुणा और अंजू सिंह जी) घर–घर जाकर यह काम करना प्रारंभ किया। और समुदाय से लौटकर स्कूल में इकटठा होते और दिन के अनुभव भी आपस में साझा करते। इससे बडा लाभ यह हुआ कि बातचीत से हम सभी का मनोबल बढ़ता और एक दूसरे को समझने का मौका भी। धीरे–धीरे हमारी मेहनत रंग ला रही थी। आखिर हमें सफलता मिली और हमारे विद्यालय की छात्र संख्या 63 से 105 हो गई। इस बीच एक और घटना घटी हमें विद्यालय प्रबंधन समिति का गठन करना था, हमने सोंचा कि इस प्रक्रिया में सभी अभिभावकों को आमंत्रित किया जाय और पारदर्शिता के साथ समिति का चुनाव किया जाय। हमारी उम्मीदों के अनुरूप अभिभावक बैठक में शामिल हुए और सर्वसम्मति से समिति की कार्यकारिणी का चुनाव हुआ और कोई विवाद नहीं हुआ।

इस पूरी प्रक्रिया से एक सीख मिली कि समुदाय से सहयोग के लिए विद्यालय को ही पहल करनी होगी। साथ ही समुदाय के लोगों को महत्व और सम्मान भी देना होगा। उनके सुझावों को सुनने के साथ उस पर अमल भी करना होगा। तभी हम स्कूल और समुदाय के बीच मजबूत संबंधों को स्थापित कर पाएगें। नामांकन बढ़ने के बाद अब बारी हमारी थी लोगों ने जो हम पर भरोसा दिखाया था उस पर खरा उतरना निहायत जरूरी था, जिससे उनका भरोसा बना रहे । हम सभी शिक्षक बैठे और इस पर विचार किया और अपने विद्यालय में क्या क्या करना है विचार किए। अंत में हम सभी इस सहमति पर आए कि हमें प्रार्थना सत्र से लेकर कक्षाएं बंद होने तक कई बदलाव करने होगें।

प्रत्येक सत्र को रुचिकर बनाना होगा, बच्चों को जिम्मेदारी देनी होगी और सीखने सिखाने की प्रक्रियाओं को रूचिकर तथा बच्चों के अनुकूल बनाना होगा। इस सबके लिए हमें पर्याप्त जगह की भी जरूरत थी, चूंकि बच्चों की संख्या बढ़ चुकी थी । हमने तय किया कि समिति की बैठक बुलाई जाय और इस पर उनकी भी राय ली जाय। समिति के सभी पदाधिकारी बैठक में सम्मिलित हुए और चर्चा कर सामूहिक निर्णय लिया गया कि अतिरिक्त कक्षा–कक्ष की मांग खण्डशिक्षा अधिकारी से की जाय। सो प्रस्ताव बना और खण्डशिक्षा अधिकारी कार्यालय को दिया गया। खण्डशिक्षा अधिकारी और खण्ड़ समन्वयक ने सहयोग किया और हमें तत्काल अतिरिक्त कक्षा–कक्ष के निर्माण की अनुमति मिल गई। कहते हैं कि काम होने लगे तो काम करने का जोश दुगुना हो जाता है और बड़ी–बडी समस्याएं पलक झपकते रास्ते से खुद–ब–खुद दूर हट जाती हैं। धनराशि मिलने के बाद हमने विद्यालय प्रबंधन के साथ मिलकर निर्माण समिति बनाई। निर्माण समिति और प्रबंधन समिति ने जिस प्रकार का सकारात्मक सहयोग दिया वह अविश्वसनीय था, कई बार मैं यह सोचता कि लोग कैसे कहते हैं कि गाँव के लोग अपनी जिम्मेदारी से बचते हैं और स्कूल के साथ अच्छे संबंध नही बना पाते। निर्माण समिति ने जिस सूझबूझ के साथ प्राप्त धन का स्तेमाल किया वह काबिले तारीफ से कम नहीं।

जब माहौल बदला

आज विद्यालय में चहारदीवारी, किचेनशेड और दो कमरों का निर्माण हो गया है, विद्यालय सुन्दर लगने लगा है। अभी हाल ही में 20 बच्चों ने और दाखिला लिया और वर्तमान में संख्या पहुँच गई 124। अब हमने प्रार्थना का स्वरूप बदला और बच्चों

को जिम्मेदारी देनी प्रारंभ की, अब बच्चे ही तय करते हैं कि कौन सी प्रार्थना होगी और कौन से बच्चे बाकी बच्चों को करवाएंगे। प्रार्थना के बाद बड़े बच्चे छोटे बच्चों को उनके कमरों तक पहुँचाने और गतिविधियों में भाग लेने को प्रेरित भी करते हैं। बच्चे ही भोजन बनने के बाद उसे सभी बच्चों को बाँटने में भी मदद करते हैं। बच्चों के बारे में पूर्वमान्यताएं और धारणाओं को गलत करना इन बच्चों ने बेजुबानी ही हमें समझा दिया है। हमने बच्चों से पूछा कि पढ़ने लिखने के अलावा और कौन–कौन से कार्य किए जाएं बच्चों के बहुत मजेदार सुझाव आए। हमने तय किया कि इन पर कार्य अवश्य करेगें।

हम सबने तय किया कि रोज एक घण्टा ऐसा होगा जिसमें बच्चे जो चाहेंगे कर सकेंगे। इसमें हमने तय किया कि निम्न कार्य शुरुवाती दौर में कर सकते हैं। जैसे रंगभरो, चित्रकारी, खेल, कहानी बनाना, अंताक्षरी, कविता आदि। बच्चों में नेतृत्व की भावना आए इसलिए समूहों का निर्माण करना और क्रमवार अलग–अलग बच्चों को जिम्मेदारी देना। इतने भर मात्र से बच्चों की सतत् उपस्थिति बनी रहती है, बच्चों में स्कूल आने के प्रति उत्साह जागा है। पर अभी हमारी चुनौतियाँ यहीं पर खतम नहीं हुईं हैं। अभी हमें विषयों पर काम करना है, बच्चें को वांछित सम्प्राप्ति स्तर तक लेकर जाना है, इसके लिए हमें खुद में भी तैयार होना है। पर जो भी हो माहौल तो बदलेंगे।

इनसे मिलिए

शिक्षा की संवेदना

कविता संवेदनाओं की साझीदारी है। कवि जीवन के महीन मर्म को पकड़ते हैं। 16–17 जून 2013 को पहाड़ पर बरपे प्रकृति के कहर के बाद ढेरों कविताएँ रची गयी हैं। कवियों ने विकास, जीवन–पद्यति और सभ्यता के संकट को अपनी तरह से इन कविताओं में उकेरा है।

अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन सभागार में आयोजित "बारिश और कविता" कार्यक्रम में यह बात कवि–समालोचक डॉ. सिद्धेश्वर सिंह ने कही। डॉ सिंह "बारिश और कविता" कार्यक्रम के मुख्य वक्ता थे। कवि–समालोचक और चित्रकार सिंह, राजकीय महाविद्यालय खटीमा में हिंदी के एसोसियेट प्रोफेसर हैं। उनकी रचनाएँ देश की प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी हैं।

इस मौके पर राज्य में आई प्राकृतिक आपदा के शिकार लोगों को श्रद्धांजलि दी गयी। वरिष्ठ कवि और समालोचक डॉ. पीके जैन 'अनंग' ने कहा कि कविता के बिना जीवन संभव नहीं। जब तक जीवन रहेगा, कविता भी रहेगी। कविता का प्रकटीकरण जीवन की उपस्थिति का द्योतक है। कार्यक्रम के अध्यक्ष और पीजी कॉलेज चौबट्टाखाल में प्राचार्य डॉ सुभाष वर्मा ने कहा कि कविता जीवन के अंतर्विरोध को सामने लाने का मौका देती है। कार्यक्रम में नगर और नगर के आस–पास से आये कवियों ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं।

वरिष्ठ कवि डॉ. शंभू दत्त पांडे की कविता, 'पहाड़ों पर भू–स्खलन न भी होता तो क्या, पहाड़ों का ढहना रुक जाता' ने मौजूदा परिदृश्य पर सवाल खड़े किये। कस्तूरीलाल तागरा ने 'मैं कबके मर चुका होता। कट्टरपंथियों के प्रहारों से, वो तो मेरी माँ की सीख थी कि मैं बचा रहा' ने श्रोताओं को झिझोड़ने का काम किया। नबी अहमद मंसूरी की कविता, 'बादल कहीं फटा तो गाँव के गाँव बह गए', पद्दोलोचन विश्वास ने 'कितने सपने टूटे इस बरसात के बाद', डॉ. आशा शैली ने 'वे पहाड़ के सीने में दबे ज्वालामुखी को भूल जाते हैं', डॉ. अभिजीत मंडल ने 'मैं सोता नहीं, मैं रोता नहीं, मैं बीज बोता हूँ', खेमकरण सोमन ने 'जब भी नया वर्ष लिखना, पहला शब्द संघर्ष लिखना' सुनाई। कार्यक्रम में करीब दर्जन भर कवियों ने अपनी कविताएँ पेश कीं।

फाउंडेशन के उधम सिंह नगर प्रभारी कैलाश कांडपाल (अब बिहार के राज्य प्रभारी) ने कहा कि सरकारी स्कूलों से लोगों का तेजी से मोहभंग हो रहा है। इसके लिए शिक्षक और शिक्षा विभाग को दोष दे देना, समस्या का सरलीकरण है। सरकारी स्कूलों में आ रही गिरावट के लिए समाज भी बराबर का जिम्मेदार है और इस स्थिति से बाहर निकलने के लिए सभी को प्रयास करने होंगे। संचालन भास्कर उप्रेती ने किया।

इस मौके पर डॉ प्रद्युम्न कुमार जैन, ललित तिवारी, हर्षवर्धन वर्मा, निखिल दत्ता, रुपेश कुमार, नवीन चिलाना, डॉ. तरुण पांडे, विधिचंद्र सिंघल, सुनील पन्त, डॉ. विजय श्रीवास्तव, नेहा प्रवीण, शहाबुद्दीन, मोहन उपाध्याय, उषा श्रीवास्तव आदि मौजूद थे।

बालमन का झिलमिल संसार

अनुराग शुक्ला

संकुल संसाधन केंद्र, बाजपुर (प्रथम) और अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन, ऊधम सिंह नगर द्वारा राजकीय प्राथमिक विद्यालय बाजपुर (प्रथम) परिसर में 16 नवंबर को बाल मेले 'झिलमिल–खिलखिलाते बचपन का संसार' का आयोजन किया। मेले में 5 राजकीय और निजी विद्यालयों के लगभग 75 अध्यापकों और 200 छात्र–छात्राओं ने भाग लिया। कार्यक्रम में बाजपुर ब्लॉक के सभी पांच संकुल संसाधन केंद्रों की सकारात्मक सहभागिता रही। मेले में बच्चों ने ही सारे कार्यक्रमों का नेतृत्व किया। इस बात का खास ध्यान रखा गया था कि हर बच्चे को उसकी रुचि के विषयों में कुछ करने को मिले। मेले में विज्ञान, गणित, पहेलियों, मिट्टी के बर्तन, रंगकर्म और पेपर वर्क के स्टॉल लगे थे। कार्यक्रम को आर्कषक बनाने के लिए बच्चों को पहचान पत्र भी दिए गए थे ताकि अलग–अलग विद्यालयों से आए बच्चों की पहचान हो सके। बच्चे कार्यक्रम के पांडाल में प्रवेश करते ही फेश पेंटिंग के स्टॉल की तरफ जा रहे थे। कोई शेर बन रहा था तो कोई बिल्ली। किसी को चूहा बनने में ज्यादा दिलचस्पी थी। किसी ने तिरंगा अपने गालों में चस्पा करवा लिया था। मेले में मुख्य रूप से बच्चों के साथ रचनात्मक कार्यों द्वारा शिक्षकों को बाल केंद्रित गतिविधियों से जोड़ने और बच्चों में व्यवहारिक नेतृत्व क्षमता का विकास करने की जानकारी दी।

विज्ञान के प्रयोगों विद्युत चुम्बकीय शक्ति, ताप एवं दाब, बल और गति से संबंधित गतिविधियों में बच्चों ने बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया। अध्यापकों ने भी बच्चों से खुलकर प्रश्न किए। विज्ञान स्टॉल की खास बात यह रही कि वहां पर बच्चों को प्रयोग करने की स्वतंत्रता दी गई। बच्चे खुद ही सारे प्रयोगों पर हाथ आजमा रहे थे और किसी भी तरह के प्रश्नों के लिए पास में ही खड़े गुरुजनों से सलाह–मशविरा कर रहे थे।

विज्ञान प्रदर्शनियों और गतिविधियों का यह भी उद्देश्य था कि विज्ञान के सिद्धांतों को आसपास के परिवेश से जोड़ा जाए। कई शिक्षकों ने विज्ञान की इन गतिविधियों में खासी रुचि दिखाई और वह इस तरह के प्रयोंगों को अपनी कक्षाओं में ले जाने के लिए उत्सुक दिखे।

गणित के स्टॉल पर भी खेल–खेल में बच्चों को गणित के सिद्धांतों से परिचय कराया गया। बच्चों ने ही इन गणित की गतिविधियों का संचालन किया। गणित की गतिविधियों में सिक्कों को पानी में डालकर कोण और बल के सिद्धांतों से उनका परिचय कराया गया। बच्चों के सिक्कों को अम्लीय पानी में एक निर्धारित स्थान पर डालना था। बहुत सारे बच्चे ऐसा नहीं कर पा रहे थे क्योंकि सिक्का सीधे अंदर जा ही नहीं

रहा था। कैरम बोर्ड में बच्चों को दो बार में क्वीन को खाने के अंदर करना था और इसके लिए कुछ प्वाइंट निर्धारित किए गए थे। बच्चों को एक बॉल में निशाना लगाने के लिए कहा गया और उनसे पूछा गया कि उनके निशाना लगाने में सफल होने और न होने के संभावित कारण क्या हो सकते हैं। बच्चों को एक के ऊपर एक खड़े ग्लासों पर निशाना साधना था और कोशिश करनी थी चारों ग्लास एक साथ गिर जाएं।

बच्चों में कला के प्रति रुझान को अभिव्यक्ति प्रदान करने के लिए मिट्टी के बर्तन बनाना, पेपर वर्क और रंगों से पोस्टरों के भरना जैसी गतिविधियां की गई। चाक से मिट्टी के बर्तन बनाने के लिए बच्चों के बीच होड़ थी। सभी बड़े ध्यान से चाक को चलते देख रहे थे और कुम्हार के हाथों को बड़ी शालीनता से एक के बाद एक आकार के बर्तनों को ढालते देख रहे थे। पहले तो बच्चों ने मिट्टी को छूने में कुछ हिचकिचाहट दिखाई लेकिन कुछ देर बाद ही यह हिचकिचाहट गायब हो गई। बच्चे टूटे–फूटे बर्तन बना रहे थे और कुम्हार से ढेरों सवाल पूछ रहे थे। सभी के अंदर इच्छा थी कि वह अपने हाथ से बना बर्तन लेकर अपने घर जाएं और अपने माता–पिता को भी दिखाएं। कई ने तो अपने हाथ से बनाए बर्तन छुपाकर रख दिए। अध्यापकों ने भी चाक पर अपनी

झिलमिलः खिलखिलाते बचपन का संसार

बाजपुर ब्लॉक में बाल मेले के आयोजन के पीछे की कहानी रुचिकर है। बच्चों की तरफ से लगातार मांग आ रही थी कि बाल मेले पर उनके लिए कुछ कार्यक्रम होना चाहिए, जिसमें उनकी सहभागिता हो। जब बाजपुर टीम अक्टूबर के पहले सप्ताह में मिली, तो बाल मेले की अवधारणा के बारे में विचार किया गया। सबमें एक सहमति बनी कि इस बार के कार्यक्रम में अध्यापकों की बढ़–चढ़कर भागीदारी होनी चाहिए। अच्छा तो यह होगा कि कार्यक्रम की अवधारणा के साथ ही अध्यापकों और बच्चों को शामिल करना चाहिए। कई अध्यापकों से इस संदर्भ में संपर्क किया गया। उनसे विज्ञान, गणित से जुड़ी गतिविधियों पर विचार मांगे गए। अध्यापकों के साथ विचार–विमर्श का यह परिणाम रहा कि विज्ञान और गणित की गतिविधयों की डिजाइन में अध्यापकों की शुरू से ही सक्रियता रही। अध्यापको में मोहन लाला शर्मा और कस्तूरबा गांधी कन्या विद्यालय की दो अध्यापिकाओं ने ही विज्ञान की गतिविधियों को डिजाइन किया। गणित में भी अध्यापकों की तरफ से रुचिकर सुझाव आए।

बाल मेले की अवधारणा जब संकुल संसाधन केंद्र– बाजपुर प्रथम से साझा किए गए तो संकाय संयोजक पंकज रस्तोगी ने इस कार्यक्रम को संयुक्त रूप से करने का विचार रखा और बच्चों के खाने–पीने के बंदोबस्त अपने जिम्मे लेने की बात कही। इस कार्यक्रम के बारे में बाजपुर ब्लॉक के अन्य 4 संकुल संसाधनों को भी सूचित किया गया। उनकी तरफ से भी काफी सकारात्मक सुझाव और प्रोत्साहन सामने आए। अक्टूबर महीने के आखिरी सप्ताह से अध्यापकों और बच्चों ने मिलकर झिलमिल की तैयारी शुरू कर दी।

किस्मत आजमाई और उनके बनाए बर्तन बच्चों से किसी भी मामले में अच्छे नहीं थे। यह देखकर बच्चों को बड़ा मजा आया।

पोस्टरों में रंग भरने की होड़ सी मच गई। कोई कार्टून चरित्र डोरेमोन का पोस्टर चाहता था तो कोई फूल में रंग भरना चाह रहा था। रंग भरने के बाद बच्चों को पोस्टर को प्रर्दशनी के लिए भी लगाया गया और बच्चे सबको पकड़–पकड़ कर ला रहे थे और अपने पोस्टरों के पास खड़े होकर उसके बारे में अध्यापकों और दर्शकों को बता रहे थे। बच्चों के अलावा कई अध्यापकों और आसपास के लोगों ने रंगों और ब्रशों पर अपने हाथ आजमाए। एक बार किसी बच्चे को ब्रश देकर उससे वापस लेना बड़ा मुश्किल हो रहा था। बच्चे आपस में पूछ रहे थे कि कहां पर कैसा रंग भरा जाए। डोरेमोन के बाल कैसे होने चाहिए और घर चमकीला क्यों नहीं होना चाहिए। बच्चों की रंग–बाजी से मजेदार था उनकी चर्चाएं सुनना।

पंडाल में लगे मुखौटों और तमाम तरह के पेपर–वर्क पर बच्चों ने ही मेहनत की थी। शेर, बंदर, भालू, चूहे , कुत्ते के मुखौटों के बाजपुर के बच्चों ने पिछले दो हफ्तों में तैयार किया था। बाल मेले के दिन उन्हें अपने इस कौशल को वहां जमा हुए अध्यापकों और दूसरे विद्यालयों से आए बच्चों के सामने प्रर्दशित करना था। पेपर से मालाएं बनाना, फुलझड़ियां बनाना, विभिन्न प्रकार के कटआउट बनाकर दीवारों को सजाने के काम बच्चों ने बखूबी से किया। बच्चों के पेपर–वर्क के अध्यापक गण भी बड़े ध्यान से सुन रहे थे। अलग–अगल विद्यालयों के अध्यापक अपने–अपने स्कूल के बच्चों के ज्यादा से ज्यादा गतिविधियां करते देखना चाह रहे थे। कई अध्यापकों ने बच्चों से उनके

स्कूल में होने वाले कार्यक्रमों में सपोर्ट करने के लिए भी कहा। कई अध्यापकों ने तो कार्यक्रम समाप्त होने के पहले ही बहुत सारे मुखौटे अपने पास रख लिए।

इस सब गतिविधियों के बीच बच्चे डांस भी कर रहे थे। कुछ ने फोटो खिचाने में खास दिलचस्पी दिखाई। बच्चे फेश–पेंटिंग के बाद खासे आर्कषक लग रहे थे। कुछ को तो पहचानना ही मुश्किल हो रहा था। उछल–कूद करते हुए बच्चों को देखकर लग रहा था कि वह कार्यक्रम को खासा पसंद कर रहे हैं। बच्चों को जब नाश्ते का वितरण किया गया तो सभी बच्चे केलों और समोसे के ढेर पर कूद पड़े। इस बीच कुछ बच्चे माइक में अपील कर रहे थे कि केले के छिल्कों को डस्टबिन में ही डाला जाए। कुछ तो दूसरे बच्चों के छिलकों को उठाकर डस्टबिन में डाल रहे थे। बच्चों ने कार्यक्रम के दौरान ही फीडबैक पोस्टर पर अपनी टिप्पणियां लिखनी शुरू कर दीं। अध्यापकों ने भी बारी–बारी से पोस्टर पर कार्यक्रम की सराहना की। अध्यापक इस कार्यक्रम को दूसरे अध्यापकों से मिलने के लिए एक अनौपचारिक मंच की तरह भी देख रहे थे। कार्यक्रम के दौरान कहीं भी लगा ही नहीं कि किसी चीज को नियंत्रित करने की जरूरत थी। बच्चों को नेतृत्व करता देख सभी ने खुद को सपोर्ट करने तक सीमित कर लिया।

अध्यापक और बच्चे चाह रहे थे कि ऐसे कार्यक्रम नियमित स्तर पर होते रहें। ताकि बच्चों को अपने कौशलों की अभिव्यक्ति का मौका मिल सके। अध्यापकों ने भी बताया कि उन्हें क्रार्यकम से बहुत कुछ सीखने को मिला, खासकर बच्चों के उत्साह को देखकर सभी अध्यापक बहुत खुश हुए।

स्वैच्छिक शिक्षक समूह – एक अनुभव

धर्मपाल गंगवार
प्रधानाध्यापक, रा.प्रा.वि. हल्दी पचपेड़ा, खटीमा

खटीमा ब्लॉक के स्वैच्छिक शिक्षक समूह से जुड़े लगभग तीन साल हो गए हैं। मेरा हमेशा प्रयास रहा है कि इस समूह की बैठक में हर माह जरुर प्रतिभाग करूँ। शुरुआती दिनों में फाउंडेशन के साथी चौबे जी कभी स्कूल में या कभी ब्लॉक में मिल जाते थे। बी.आर.सी.परिसर में जब हम सब मिलते थे मोटर साईकिल के सहारे टेक लगाए दो–तीन शिक्षक साथी और चौबे जी खड़े–खड़े ही बातें होने लगती। इन बातों का दायरा स्कूल में बच्चो की नियमित उपस्थिति, पढ़ने/पढ़ाने की प्रक्रियाएं या मिड डे मील आदि रहता। इसी अनौपचारिक बातचीत के चलते हम सात–आठ साथियों का एक स्वैच्छिक शिक्षक समूह बन गया और यह तय हुआ कि हम सब माह में कम से कम एक बार किसी छुट्टी के दिन बी.आर.सी.के हाल में बैठेंगे। इस प्रकार लगभग हर माह शिक्षकों के स्वैच्छिक समूह की बैठक होनी शुरू हुई। मुझे याद है कि दो–तीन बैठकों में मैं, रंजू शर्मा, ब्लॉक सह समन्वयक राकेश सुमन जी और चौबे जी ही उपस्थित थे। शुरू में लगा कि हम दो–तीन शिक्षक क्या बातें करेंगे? ये भी कोई बैठक है? परंतु जब हम सब चर्चा शुरू करते थे तो दो घंटे कब बीत गए पता ही नहीं चलता था। धीरे–धीरे समूह में शिक्षक साथियों की संख्या बारह हो गई। किन्तु लगभग सात–आठ महीनों की बैठक के उपरांत यह सिलसिला थोड़ा धीमा पड़ गया।

अगले सत्र में एक बड़े समूह के साथ बैठक की शुरुआत फिर जोर–शोर से हुई जिसमें पचीस शिक्षक साथियों, कांडपाल जी व कमलेश जी ने प्रतिभाग किया। कांडपाल जी समूह की बैठक में दो बार प्रतिभाग करने आए। उनकी प्रतिभागिता काफी प्रेरणा देने वाली रही। वर्तमान में इस समूह कुल अठ्ठाइस सदस्य हैं। मेरी इच्छा रहती है कि इस समूह में हमारे शिक्षक साथियों की संख्या और बढे ताकि शिक्षक साथी शिक्षा के नए–नए विचारों से लोग परिचित हो सकें। मुझे यह भी महसूस होता है नए विचारों पर चर्चा, समूह में सहजता के साथ संवाद और एक दूसरे का सम्मान ये सारी बातें हम सबको एक समूह में बांधे रखती हैं। वैसे पढने का मुझे शुरू से ही शौक था। जिसमे मुंशी प्रेमचंद की कहानियां या ऐसी पुस्तकें जो ज्ञान बढ़ाने में मददगार हो मुझे पसंद थी। इन बैठकों में सी.डी. या लेखों पर चर्चाओं के माध्यम से हम कई शिक्षाविदों के विचारों से परिचित हो पाए। इन बैठकों में प्रो.कृष्ण कुमार, रोहित धनकर, प्रो.रमाकांत अग्निहोत्री आदि शिक्षाविदों के लेखों को पढ़ा गया और उन पर चर्चा हुई। इन बैठकों में हमें यह एहसास हुआ कि नए विचार बनाने के लिए हमें अपने पूर्व के अनुभवों/जानकारियों के साथ संघर्ष करते हुए नए विचारों के साथ जद्दोजहद करनी पड़ती है। यह बात सबसे अच्छी बात लगी।

बच्चों को पढ़ना सिखाना वर्तमान समय में जटिल समस्या के रूप हम सबके सामने है। इस पर स्कूल में कुछ काम भी शुरू किया अब पाठ्य पुस्तक के अलावा कक्षा में बच्चों को पढ़ने की सामग्री उपलब्ध कराने कि कोशिश करता हूँ। कक्षा में मुझे यह देखने को मिलता है बच्चे कहानियों की किताबों में खूब रूचि लेते हैं। इसके साथ ही पढ़ने के दौरान बच्चों का अवलोकन करने की भी कोशिश करता हूँ कि कौन बच्चा कैसे पढने की कोशिश करता है? इस तरह लगातार संवाद और चिंतन के उपरांत मैं कुछ नया करने के लिए उत्सुक रहता हूँ। जैसे कि बच्चों को घूमने का बड़ा शौक रहता है। बाल शोध मेला के समय हम कक्षा के बच्चों को स्कूल के पास ही कर्बला शरीफ ले गए जहाँ बच्चों के साथ मैं भी यह जान पाया कि यहाँ आज जो मजार है जिस पर आज इतने बड़े मेले का आयोजन होता है वहां पहले की स्थिति तो कुछ और ही थी।

अब हम प्रत्येक साल अपने स्कूल के बच्चों को नई जगह ले जाने की कोशिश करते हैं। बच्चे भी इस दिन का बेसब्री से इन्तजार करते हैं। इस प्रक्रिया से प्रेरित होकर इसी कैम्पस में स्थित उच्च प्राथमिक विद्यालय की शिक्षिका गीता उपाध्याय जी भी अपने बच्चों को बाल शोध की प्रक्रिया में बच्चों को शामिल कराती हैं। अब इस मिश्रित समूह में बच्चे मिलजुलकर सीखते हैं। आज हम खाली समय में हम अपने स्कूल के साथियों के साथ भी शैक्षिक मुद्दों कभी–कभी बात करते हैं। मुझे ऐसा लगता है कि शैक्षिक मुद्दों पर शिक्षकों के साथ लगातार बातचीत करने की जरूरत है तभी स्कूलों में कुछ बदलाव हो सकता है।

प्राथमिक कक्षाओं में लिखना सिखाना

जयशंकर चौबे

प्राथमिक कक्षाओं में बच्चों को लिखना सिखाने के परिदृश्य पर गौर करें। स्कूल की प्रार्थना के बाद सभी बच्चे अपनी–अपनी कक्षा में बैठते हैं। बच्चों की उपस्थिति ली जाती है। स्कूल में एक शिक्षक और एक शिक्षिका हैं तथा एक अर्ध–शिक्षक भी हैं जिसे शिक्षा मित्र कहा जाता हैं। सभी पढ़ाने के पाबन्द हैं। बच्चों को कुछ न कुछ लिखने का काम जरूर देते हैं। कक्षा एक–दो के बच्चे एक साथ, कक्षा तीन–चार के बच्चे एक साथ और कक्षा पाँच के बच्चे बरामदे में बैठे हुए हैं। कक्षा एक–दो के लिये ब्लैक बोर्ड के आधे भाग में वर्णमाला, आधे भाग में अमात्रिक शब्द लिख दिया गया है। बच्चे इन्हें अपनी कापी में उतार रहे हैं। तीसरी कक्षा के बच्चे हिंदी की किताब से सुलेख लिख रहे हैं। चौथी कक्षा के बच्चे पाठ के अभ्यास कार्य पूरा कर रहे हैं। अभ्यास कार्य में रिक्त स्थानों की पूर्ति, प्रश्नोत्तर, मिलान करना आदि अभ्यास हैं। पांचवी के बच्चे बरामदे में बैठे हैं। यहाँ प्रधानाध्यापक जी अपनी विभागीय काम करने के बाद एक पेज का श्रुतलेख स्पष्ट स्वरों में बोलते हैं तथा बाद में इसकी जाँच करते हैं। उसमें वर्तनी सुधार के शब्दों पर लाल घेरा बना कर वहाँ शुद्ध शब्द भी लिख देते हैं। जिसे बच्चों को अपनी कापी में सुधार कर पाँच–पाँच बार लिखने हैं। कुछ बच्चों का श्रुतलेख के समय सुन्दर लेख नहीं बन पाया था तो उन्हें अखबार से पैराग्राफ चुनकर लिखने का काम दिया गया। इधर दूसरी कक्षा के बच्चे बोर्ड पर लिखे सभी शब्द उतार चुके थे। प्राथमिक कक्षाओं में लिखना सिखाने का ये नियमित क्रियाकलाप लगभग सभी स्कूलों में देखने को मिल जाते हैं।

प्राथमिक कक्षाओं में बच्चों को लिखना सिखाने के इस परिदृश्य को देखकर मन में सवाल यह उभरता है कि बच्चों को लिखना सिखाने का क्या मतलब है? क्या ब्लैकबोर्ड से शब्द उतारना, श्रुतलेख लिखना, सुलेख लिखना, प्रश्नोत्तर लिखना, याद किए हुए निबंध या पत्र लिखने के अभ्यास आदि लिखने की श्रेणी में आते हैं? या लिखने को हम अर्थ निर्माण के रूप में देखते हैं। अपनी अभिव्यक्ति के रूप में देखते हैं। आगे यह भी सवाल उभरता है कि इस तरह लिखने का अभ्यास करने के उपरांत क्या बच्चे लिखना सीख जाते हैं? इसका उत्तर शायद 'नहीं' में है। इस तरह के अभ्यास से देखें तो आगे की कक्षाओं में बच्चे केवल याद किए हुए प्रश्नोत्तर, रटे–रटाए निबंध ही लिख पाते हैं। यदि उनसे यह कहा जाय कि अपने मन से कुछ लिखकर दिखाएं तो उन्हें काफी दिक्कतें आती हैं। लिखने के उक्त क्रियाकलापों से यह भी समझ में आता है कि प्राथमिक कक्षाओं में बच्चों को अपने अनुभवों को व्यक्त करने के मौके प्रदान नहीं किए जाते।

लिखना सिखाने के संदर्भ में एक शिक्षक को सर्वप्रथम यह स्पष्ट होना चाहिए कि बच्चों को लिखना सिखाने का क्या उद्देश्य हैं ? हम उन्हें लिखना क्यों सिखा रहे हैं ? इसके लिए कक्षा में बच्चों के साथ किस तरह के क्रियाकलाप किए जाने चाहिए ? उनकी कक्षा का माहौल होना चाहिए ? आदि प्रश्नों पर विचार करना चाहिए। आगे यह भी सवाल उभरता है कि पांचवीं कक्षा उत्तीर्ण करने के उपरांत आगे की कक्षाओं में बच्चे रटे–रटाए निबन्धों के अलावा अपने मन से कुछ क्यों नहीं लिख पाते? इससे यह भी महसूस होता है कि हमारी प्राथमिक कक्षाओं में बच्चों को लिखना सिखाने के उद्देश्य बहुत हीं संकुचित अर्थों में लिया जाता है। बच्चे अपनी शुरूआती कक्षाओं में शब्दों/वाक्यों को उतारने का ही ज्यादा काम करते हैं जबकि लिखना सिखाने के वर्तमान सन्दर्भ में लिखना एक अर्थ निर्माण की प्रक्रिया है। दूसरी बात लिखने का मतलब पढ़ने की भांति किसी सन्दर्भ में अर्थपूर्ण लिखना से है। यह एक प्रक्रिया है न कि उत्पाद।

जब बच्चे अपनी कापी पर गोदा–गादी करते हैं, लाइनें खींचते हैं, चित्र बनाते हैं तो यह एक तरह से लिखने की शुरुआत है। इस दौरान बच्चों के आँख और हाथ का सामंजस्य भी दिन प्रतिदिन सुद्दृढ़ होता है। अतः शुरूआती दिनों में केवल अक्षर आकृतियों को सुन्दर ढंग से उकेरने पर जोर देने के साथ ही उक्त तरह के अन्य अभ्यास भी करवाए जा सकते हैं जो कि लिखना सीखने की शुरूआती प्रक्रिया का अंग हैं।

लिखने के द्वारा हम अपनी विचारों, अनुभवों, को अभिव्यक्त करते हैं। इसके मौके भी बच्चों को कक्षाओं मे देनी चाहिए। स्कूल भ्रमण के दौरान कभी–कभी यह भी देखने को मिलता है कि कुछ शिक्षक बच्चों को अपने मन से लिखने का काम देते हैं जिसमें वे अपने अनुभवों या आस–पास की घटनाओं पर कुछ

लिखते हैं। वहाँ एक शिक्षक को यह स्पष्ट नहीं होता है कि वे बच्चों के लिखने में किन बातों पर गौर करें, किन चीजों की जाँच करें। अक्सर जाँच का यह काम बच्चों के लेखन में वर्तनी सुधार या व्याकरण सुधार का काम बन जाता है जबकि जरुरी यह है कि बच्चों के लेखन में उनकी कल्पनाशीलता, उनकी स्वाभाविक अभिव्यक्ति को समझने का प्रयास किया जाय तथा इसके नियमित रूप से मौके उन्हें दिए जाएं।

कक्षा में बच्चों को लिखने के मौके देने के लिए कक्षा में बच्चों के स्तर के अनुरूप विभिन्न प्रकार की गतिविधियां करवाई जा सकती हैं जैसे कि पढ़े हुए शब्दों को लिख सकना, सुने हुए प्रश्नों का एक–दो वाक्यों में उत्तर लिख सकना, क्यों, कब, कैसे वाले प्रश्नों के उत्तर पूरे वाक्यों में लिख सकना, चित्र देख कर लिखना, अपने घर या परिवेश के अनुभव लिखना, डायरी लिखना, सुनी हुई कहानी को अपने शब्दों में लिखना, अधूरी कहानी को पूरा करना आदि अभ्यास करवाए जा सकते हैं। इस प्रक्रिया में शिक्षक को ध्यान रखना चाहिए कि बच्चों के लेखन में उनकी कल्पनाशीलता व स्वाभाविक सोच को देखने का प्रयास किया जाए न कि केवल वर्तनी व व्याकरण को देखने का।

बच्चों को इस तरह नियमित रूप से लिखने के मौके देने से उनकी स्वाभाविक प्रवृत्ति का विकास होगा और हम सही मायने में बच्चों को लिखना सिखाने का काम कर रहे होंगे। इन बातों को ध्यान में रख कर यदि कक्षा में लिखना सिखाने का काम हो, तब शायद बच्चे रटे–रटाए निबंध से उबरकर अपने मन से लिखने की ओर अभिप्रेरित हो पाएंगे।

बच्चों की भाषा अपनाने का एक रोचक अनुभव

– दीपक पुरोहित

शक्तिफार्म से करीब दो किलोमीटर कच्चा मार्ग अपनाने के बाद हम एक अनोखे स्कूल में दाखिल हुए, जहां शिक्षक और बच्चे हमारा इंतजार कर रहे थे। आस–पास के स्कूलों से भी करीब 15 शिक्षक यहाँ पहली बार वी.टी.एफ. के लिए जमा हुए थे। बरेली से सटा ऊधमसिंह नगर का शक्तिफार्म क्षेत्र बंगाली समुदाय बहुल है। यहाँ अधिकतर बच्चों की पहली भाषा बंगाली ही है। इस वजह से हिन्दी भाषी शिक्षकों को इन बच्चों को हिन्दी में पढ़ाने में खासी दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। क्षेत्र के स्कूलों में लंबे समय से शिक्षण कार्य कर रहे शिक्षकों के अनुभव सुनना रोचक भी था और आँख–कान खोलने वाला भी।

पाँच–छह साल घर में बांग्ला बोलकर स्कूल में प्रवेश लेने वाले बच्चे को जब शिक्षक स्कूल में हिन्दी में बोले और उसके पल्ले कुछ भी न पड़े तो इससे माजरा समझ आ सकता है। शिक्षकों ने शुरू में बच्चों को उनकी भाषा के लिए डपटना शुरू किया लेकिन इसका असर ये हुआ कि बच्चों का ड्रॉप–आउट रेट बढ़ने लगा। बहुत दिनों तक यह सब चलता रहा तो कुछ शिक्षकों ने तय किया कि वे ही बांग्ला सीखेंगे। इसके लिए रेल और बस स्टेशनों मे मिलनी वाली 'हिन्दी–बांग्ला सीखिये' किताब पढ़ने लगे। लिपि दुष्कर थी सो पूरे के पूरे वाक्य ही रटना शुरू कर दिया। अब वे बांग्ला के वाक्यों में बच्चों से बात करने लगे। लेकिन मानक बांग्ला बच्चों को पूरी समझ नहीं आती थी। लेकिन इस अभ्यास का परिणाम ये निकला कि बच्चे शिक्षकों को अपने जैसा ही मानने लगे। असर शिक्षकों पर भी पड़ा। अब तय हुआ कि जो बांग्ला ये बच्चे बोल रहे हैं, वही पहले सीखी जाए। इस बोली जाने वाली बांग्ला, जिसका कोई साहित्य नहीं था, को बोलकर और सुनकर ही सीखा जा सकता था। तय हुआ कि जो बच्चे थोड़ी हिन्दी जानते हैं, उन्हें इसका माध्यम बनाया जाए तो ये बच्चे गुरुजी की बात बच्चों और बच्चों की बात गुरुजी तक संप्रेषित करें।

यह फॉर्मूला काम कर गया और बच्चों और शिक्षकों के लिए स्कूल अब एक रोचक जगह बन गयी। शिक्षक भी बार–बार रिपीट हो रहे शब्दों को समझने लगे और उन्होंने माध्यम बने इन दुभाषिए बच्चों को अपना गुरू मान लिया। कई स्कूल ऐसे हैं जिनमें बच्चों की संख्या बढ़ी हैं और ऐसे स्कूल इक्का–दुक्का ही हैं, जहां बच्चे सरकारी स्कूल छोड़ प्राइवेट स्कूल गए हों या स्कूल छोड़ दिया हो। कुछ उत्साही शिक्षकों की बांग्ला भाषा सीखने की ललक और स्कूल में उसके प्रयोग का एक सुखद परिणाम ये भी हुआ कि पहले शिक्षा के प्रति उदासीन रहने वाला बंगाली समाज भी स्कूल और शिक्षकों के करीब आया है। शिक्षक राम जनम चौहान, सुधारानी, निखिल रंजन, यशपाल चौहान, अरुण कुमार, अनिल बताते हैं मेहनत कर बांग्ला बोलना सीखी है। यहीं का होकर रह गया हूँ। घर में भी कई बार पत्नी को भी बांग्ला में जवाब देने लगता हूँ। वह कहती है, ऐसे तो एक दिन तुम हिन्दी भूल ही जाओगे। अपनी भाषा में बच्चों को पढ़ाने का मायना ही कुछ और होता है। बच्चे का आत्म–विश्वास कई गुना बढ़ जाता है। बच्चे का ध्यान भाषा पर नहीं, विषय पर केंद्रित होता है।

बाल मन की अभिव्यक्ति

दिव्य प्रकाश

बच्चों में लेखन कौशल को बढ़ावा देने की मकसद से तीन दिवसीय 'रचनात्मक लेखन कार्यशाला' पुस्तकालय एवं गतिविधि केंद्र (खटीमा) में आयोजित की गयी। पहले दिन कार्यशाला में कुल बीस बच्चे शामिल हुए। परिचय बच्चों के नाम, कक्षा, विद्यालय का नाम, क्या अच्छा लगता है और कोई मजेदार घटना जो आपको याद हो के साथ हुआ। परिचय सत्र के बाद 'नाव चली नाव चली' कविता को कोरस के रूप में गाया गया। बच्चों ने अपनी पाठ्य पुस्तक से याद की हुयी कविताएँ भी सुनायीं।

इसके बाद बाल पत्रिकाएं, चित्र कथाएँ, कहानियाँ, कवितायें और लोक कथाओं की पुस्तकें बच्चों के बीच रखी गयीं। अपने मन पसंद की पुस्तकें छांट कर पढनी थीं। शुरू में बच्चे चित्र कथा ,पंचतंत्र की कहानियां और एकलव्य प्रकाशन द्वारा छोटी कहानियों की संग्रह जैसे छींका छींक, अक्ल बड़ी या भैंस आदि पुस्तकें तथा चंपक, बाल प्रहरी, चकमक आदि पत्रिकाएं पढना शुरू किये। बच्चों ने आपस में अदला–बदली कर अन्य पुस्तकें भी पढ़ीं।

बड़े समूह में चर्चा की गयी कि हम सबने क्या–क्या पढ़ा? यदि उसके बारे में भी बताना चाहें तो बता सकते हैं कि उस पुस्तिका में क्या रहा या कैसा लगा इत्यादि। बच्चे जो कुछ बता रहे थे उसे ब्लैक बोर्ड पर लिखा जा रहा था। जैसे पुस्तक में कहानी, कविता (नाम और पात्रों का जिक्र), चित्र, पहेली, चुटकुला आदि। इसी क्रम में यह पूछा गया कि क्या हम सब भी इस तरह की पुस्तिका बना सकते हैं जिसमें ये सब चीजें हों। बच्चों ने एक स्वर में कहा 'हाँ हम बना सकते हैं''। इस 'पत्रिका' का नाम क्या होगा? बच्चों ने कई नाम सुझायेः जैसे– बच्चों का कमाल, नटखट भालू, नई उमंग, बच्चों का संग्रह, साहसी बच्चे, हमारा योगदान, फूलों का संसार, कलाकार, बड़ों का सम्मान आदि।

तय हुआ कि इन नामों में से ही कोई एक नाम चुना जायेगा। इसका नामकरण अगले दिन किया जायेगा तब तक और नाम भी यदि कोई सुझाये तो उसको भी शामिल किया जायेगा। अब बात यह आई कि पत्रिका का नाम तो लगभग तय है उपरोक्त नामों में से ही कोई एक नाम होगा किन्तु उसमें क्या–क्या सामग्री रहेगी? निम्न सुझाव आये। कहानी, कविता, चुटकुले, पहेलियाँ, चित्र, मुहावरे, शायरी, कुछ घटनाएँ, दोहे, बच्चों का परिचय आदि। इसके बाद चार छोटे समूह बनाये गये। समूह एक (कहानी, कुछ घटनाएँ), समूह दो (कविता, दोहे, मुहावरे) समूह तीन चुटकुले, पहेलियाँ और समूह चार (चित्र बनाने का काम)। रुचि के अनुसार बच्चों को चार छोटे समूहों में विभक्त किया गया। बच्चे अपनी समूहों में बैठकर बातचीत करना शुरु किये। दूसरे दिन की योजना यह थी कि शुरुआत में एक–दो गीत कराने के बाद कल के बारे सामान्य बातचीत कर समूह में काम के लिये कहा जाएगा। किन्तु उनकी तन्मयता को देखते हुए ऐसा कुछ भी नहीं किया गया। मध्यावकाश के पहले तक केवल लिखने का काम किया गया। मध्यावकाश के बाद दो इन डोर गेम (शेर–बकरी, प्यारी पुशी) कराया गया।

इसके बाद लिखी गयी कहानी/कविता/चुटकुला को सुनाये और इस पर बातचीत भी हुयी। जैसे यदि हमें कहानी को कविता के रूप में लिखना हो तो क्या–क्या करने होंगें? इस पर बच्चों ने बताया कि हमें कुछ शब्दों को हटाना पड़ेगा, कुछ नये शब्दों को जोड़ना भी पड़ सकता है तथा इस तरह से लिखना पड़ेगा कि हम उसे गा भी सकें। चित्र समूह ने कुछ इस तरह के चित्र बनाए थे कि उन चित्रों के आधार पर कुछ कहानियाँ या कविताओं को गढा जा सके। इसके अलावा यह समूह कहानी/कविता समूह के साथ बैठ कर कहानी/कविता में आये पात्रों/घटनाओं के आधार पर चित्रों को बनाने कि कोशिश भी किये। इसके बाद अपने लिखे हुए सामग्री को पुनः पढ़कर उसमें स्वयं सुधारने का काम किये। बच्चे मात्राओं के अलावा वाक्यों के बनावट को भी सुधारने का काम किये।

तीसरे दिन बच्चे अपने कामों को अंतिम रूप देकर घर से पूरी तैयारी के साथ आये थे। अब इस हस्तनिर्मित पत्रिका के नामकरण को अंतिम रूप देना बाकी था। पहले तो 'नई उमंग' नाम एक साथ सामने आया। इसके बाद एक बच्ची ने सुझाया कि यदि केवल 'उमंग' रखा जाय तो कैसा रहेगा? इस पर सभी बच्चों ने तुरंत कहा कि बिल्कुल ठीक रहेगा। हमारी पत्रिका का नाम 'उमंग' रहेगा। अब मुख्य पृष्ठ के चित्रांकन की बारी आई. इस दौरान बच्चों ने कई पुस्तिकाओं को उलटे–पलटे। अंत में एक कार्टून (बच्चे का) एक पौधा रोपता हुआ तय किया गया कि यहीं चित्र रहेगा। इस चित्र को बनाने का जिम्मा रोहित (कक्षा 9) ने लिया।

मध्यावकाश के बाद इसका समापन समारोह रखा गया। इस मौके पर बी.आर.सी. राकेश सुमन, थारु राजकीय इण्टर कालेज के प्रधानाचार्य सुदर्शन वर्मा जी तथा शिक्षक एनएस रौतेला शामिल रहे। आगे भी इस तरह की कार्यशाला को आयोजित करने का आग्रह किये। प्रधानाचार्य सुदर्शन वर्मा जी अपनी कॉलेज में भी जाड़े की छुट्टियों में कराने का आग्रह किये। इसी के साथ 'उमंग' का उमंग के साथ समापन हुआ।

समुदाय और स्कूल का संवाद

दशरथ पटेल

19 और 20 मई को हमारी टीम को खटीमा के दो स्कूलों में जाने का अवसर मिला। मौका विद्यालय प्रबंध समिति (एस.एम.सी.) की बैठक का वीडियो डॉक्यूमेंटेशन का था। जो बात छू गयी वह ये थी कि सार्वजनिक शिक्षा प्रणाली को बचाने और सजाने का काम समुदायों के सहयोग के बिना संभव नहीं। यह भी कि जब शिक्षक और समुदाय साथ मिलकर काम करते हैं तो बच्चों को गुणात्मक शिक्षा की राह वैसी मुश्किल नहीं रह जाती।

पहला दिन

हम खटीमा से पांच किलोमीटर दूर स्थित थारू बहुल इलाके में स्थित रा.प्रा.वि. गुर्खुड़ा (इंग्लिश मीडियम) पहुंचे। धरती का ताप 38–39 डिग्री सेल्सियस और तेज गर्म आंधी कम वजन के बच्चों को उड़ा डालने के लिए काफी थी. हमारे पैर बार–बार उखड़ रहे थे। स्कूल के बंद कमरों के अंदर भी बाहर की हलचल का पूरा कम्पन महसूस हो रहा था। मगर यहाँ के बच्चों के लिए यह सामान्य सी घटना थी/या है।

स्कूल में 99 फीसद बच्चे थारू जनजाति के हैं। इनमें से 70 फीसद बच्चे फर्स्ट जनरेशन लर्नर्स हैं। शेष 30 फीसद दूसरी पीढ़ी के लर्नर्स हैं। हाल के दिनों में आये आर्थिक और सामाजिक बदलाओं के कारण अब यहाँ कुछ–कुछ पक्के घर दिखने लगे हैं, जबकि फूस से बने कच्चे घर अब भी खासी तादात में हैं। लेकिन ज्यादातर घरों में टीवी आ गया है। थाडू समुदाय के कुछ लोगों ने थोड़े पैसे के लोभ में अपनी जमीनें बेचना शुरू किया है। हालाँकि जनजाति भूमि संरक्षण कानून की वजह से इन जमीनों का मालिकाना खरीदने वालों को नहीं मिल सकता। प्रभावशाली होने के कारण ही खरीददार व्यावहारिक रूप से वास्तविक मालिक हो जाते हैं।

बच्चों के सहज रूप से गाये जाने वाले गीतों में हमें इसकी आहट भी मिली। बाहरी प्रभावों और चारों ओर से पनप आये उपभोक्तावादी प्रतिष्ठानों के बावजूद थाडू समुदाय आज भी अपनी पहचान और संस्कृति को कायम किये हुए है। इसका परिचय हमें तब मिला जब स्कूल के बच्चों ने हमें पारम्परिक वेशभूषा में अपना गीत सुनाया। नृत्य के माध्यम से प्रस्तुत गीत में

प्राइमरी स्कूल के इन नन्हे–मुन्ने बच्चों के स्टेप देखने लायक थे. निश्चित रूप से यह ज्ञान समुदाय की शिक्षा से ही संस्कार रूप में आ सकता होगा। बच्चों के बाद हमें थाडू समुदाय की महिलाओं ने भी मधुर लोकगीत सुनाये।

स्कूल की दो शिक्षिकाओं और भोजनमाता का समुदाय से सघन जुड़ाव खुद ही प्रकट हो रहा था। स्कूल में शिक्षक का भय जैसा दुस्वप्न यहाँ कल्पनातीत था। बच्चे हेड टीचर रंजना शर्मा की उंगली पकड़कर ले जा रहे थे और दूसरी शिक्षिका रेनु जो थाडू समुदाय से ही हैं, स्कूल के हर बच्चे की खासियत आपको एक ही बार में बता देने को उत्सुक थीं।

एक बच्चा, फिर एक–एक कर कई बच्चे मेरे पास आ गए। उनके लिए हैंडीकैम और ट्राईपौड आकर्षण थे। एक बच्चे ने कैमरे के सामने खड़े होकर मुझे आदेश दिया, सर इसके बारे में बताईये? मैंने कहा क्या आप सब वाकई इस यन्त्र के बारे में जानना चाहते हैं? बच्चों के एकस्वर में जवाब दिया। जीईईईईईई ! उन्हें कैमरे और कैमरे के काम के बारे में बताना एक आनंददायी अनुभव था। मैंने बच्चों से वादा किया कि एक दिन मैं उनके स्कूल में आकर उन्हें फिल्म बनाना सिखाऊंगा। ये बच्चे छोटे थे लेकिन सीखने की लगन से बहुत बड़े थे। मुझे विश्वाश है कि जो मैं इन्हें ट्रांजेक्ट कर पाऊंगा वह वे जरूर समझ लेंगे।

स्कूल की हेड टीचर रंजना का बच्चों के साथ थाडू समुदाय से भी गहरा लगाव है। रंजना जी देहरादून में पढ़ी–लिखी हैं और

ऋषिकेश की रहने वाली हैं। लेकिन पहली जॉइनिंग के बाद से ही वह इस समुदाय के बीच हैं. कहती हैं, "शुरू में घर से इतना दूर और नए समाज में आना काफी दुखदायी था. लेकिन धीरे–धीरे यहाँ मन लगने लगा। अब तो रम ही गया है। थाडू समुदाय के लोग बहुत भले लोग हैं। और इनके बच्चों के साथ कुछ भी कर पाना पुण्य का काम है। सच तो यह है कि इनके साथ अब लम्बा काम करने के बाद ही मुझे शिक्षक होने पर गर्व होता है।"

एस.एम.सी. की बैठकें यहाँ प्रतिमाह होती हैं। इनमें महिलाओं का प्रतिभाग ही अधिक रहता है। पुरुष काम पर चले जाते हैं, इसलिए नहीं आ पाते। बातचीत से महसूस हुआ कि जो पुरुष उपलब्ध हैं जैसे बुजुर्ग तो वे एस.एम.सी. की बैठक को महिलाओं के ही मतलब का अधिक मानते हैं। महिलाएं एस. एम.सी. की बैठक में दो वजहों से आती हैं। एक तो मैडम जी ने संदेश भिजवाया है। दूसरा, इसमें बच्चों के वजीफे की जानकारी दी जाती है। लेकिन कुछ महिलाएं धीरे–धीरे मुखर भी हो रही हैं। वे संक्षिप्त में ही सही अपनी राय जरूर रखती हैं। सामान्य महिलाओं के दब्बू होने की वजह समझी जा सकती है। रंजना जी बताती हैं, "इनमें से ज्यादातर पढ़ी–लिखी नहीं हैं, भले कुछ महिलाएं अंगूठा लगाने की बजाय हस्ताक्षर करने के का शब्द ज्ञान प्राप्त कर चुकी हैं. दूसरा, एस.एम.सी. जैसी समितियों के महत्व को लेकर अभी उतनी जागरूकता नहीं दी जा सकी है। यह काम स्कूल के बस की बात नहीं। लेकिन जैसे–जैसे पंचायतें सशक्त होंगी वैसे–वैसे इस तरह का सशक्तिकरण सामने आएगा. जो महिलाएं सामाजिक रूप से थोड़ा सक्रिय हुई हैं, उनके व्यवहार से ऐसा प्रकट होने भी लगा है।"

औपचारिक बैठक की शुरुआत में हेड टीचर रंजना ने प्रमुख सचिव विद्यालयी शिक्षा एस. राजु की ओर से एस.एम.सी. को संबोधित पत्र पढ़ा। उन्होंने इस बात को जोर देकर कहा कि यह पत्र विद्यालय की बजाय आपको संबोधित है. एस.एम.सी. ऐसा मौका है जो आपको अपने गाँव के स्कूल में हस्तक्षेप का अधिकार देती है। यह हस्तक्षेप अकादमिक और निर्माण संबंधी कुछ भी हो सकता है। रंजना जी ने बताया आप एस. एम.सी. में जितने सक्रिय होंगे उतना ही स्कूल को बेहतर बनाने में मदद मिलेगी।

एक महत्वपूर्ण चर्चा प्राइवेट बनाम सरकारी स्कूल की

गुणवत्ता को लेकर हुई। एक महिला ने बताया कि उसने पहले अपने दो बच्चों को प्राइवेट स्कूल में डाला। स्कूल प्रबंधन उन्हें किसी न किसी बहाने परेशान करने लगा। चाहे फीस का मामला हो या बच्चों ड्रेस बनाने का। बच्चे भी मायूस से रहने लगे थे। परेशान होकर वे अपने बच्चों को गाँव के सरकारी स्कूल में ले आयीं। लेकिन अब पछता रही हैं कि उन्होंने ऐसा पहले क्यों नहीं किया। उन्होंने बताया सरकारी स्कूल हर मायने में बेहतर है। न सिर्फ इसलिए कि यहाँ सब कुछ मुफ्त है, बल्कि शिक्षकों का व्यवहार और पढ़ाई भी अच्छे हैं। बच्चे अब स्कूल से वापस घर नहीं आना चाहते। सरल स्वभाव की एस.एम.सी. अध्यक्ष सावित्री देवी शिक्षिकाओं की बात को बाल दे रही थी और सदस्यों से अधिक सक्रिय और प्रतिभागी होने के लिए कह रही थीं।

स्थानीय वार्ड मेंबर और सामाजिक कार्यकर्ता रुबई देवी ने बताया कि उन्होंने इस स्कूल में नामांकन बढ़ाने के लिए गाँव के लोगों को प्रेरित किया और आठ बच्चे प्राइवेट स्कूल छोड़कर इस स्कूल में दाखिल हुए. रंजना जी ने बताया कि इस बार वे चुनाव ड्यूटी की वजह से प्रवेश प्रक्रिया के समय गाँव में अधिक नहीं जा सकीं। अगर उस समय प्रचार हुआ होता तो छात्र–संख्या और बेहतर होती। रंजना जी ने समुदाय से आई महिलाओं के सामने अपनी एक अपेक्षा रखी। उन्होंने बताया की स्कूल की पश्चिम दिशा में स्थित खाली भूमि में बड़ी–बड़ी झाड़ियाँ उग आई हैं। इसलिए समुदाय की कुछ महिलाएं यदि किसी दिन श्रमदान कर इन्हें साफ कर दें तो बच्चों को बिच्छू–सांप के भय से मुक्त रक्खा जा सकेगा। सदस्यों ने इस बात पर हामी भरी और ऐसे किसी और प्रस्ताव पर आगे के लिए भी सहयोग का आश्वासन दिया।

रंजना जी ने एस.एम.सी. सदस्यों से अपील की कि वे मिड डे मील के बारे में अपने सुझाव अवश्य दें। उन्होंने बताया कि यदि किसी को कोई शिकायत है तो मन में न रक्खे। यह समाधान का मंच है और हम एस. एम.सी. के माध्यम से मिलकर उसका निदान करेंगे। सभी सदस्यों ने

मिड डे मील की गुणवत्ता पर संतुष्टि जताई।

इस बैठक को देखकर हमें चीजें समझ आई। एक, इस स्कूल के शिक्षक एस.एम.सी. का दिल से सम्मान करते हैं. उसे व्यवहार में लागू करने के लिए गंभीरता से प्रयासरत हैं। दो, उनके प्रयास अकेले इस आवश्यकता की पूर्ति के लिए नाकाफी हैं। जब तक समाज विकेंद्रीयकृत लोकतंत्र को नहीं अपना सकेगा तब तक वह स्कूल जैसी संस्थाओं को अपनाने में सक्षम नहीं हो सकेगा। यानी, लोकतंत्र का प्रसार और शिक्षा की गुणवत्ता परस्पर निर्भर चीजें हैं।

दूसरा दिन

हम इलेक्ट्रिक स्कूटी में बैठकर खटीमा नगर के दक्षिण–पूर्व में स्थित पूर्व माध्यमिक स्कूल भूड़ई पहुंचे। दूरी करीब छह किलोमीटर। यहाँ एस.एम.सी. में शामिल होने के लिए औरतों के साथ मर्द भी मौजूद थे। हालाँकि अनुपात 30/70 का था। एस.एम.सी. बैठक में शामिल होने ग्राम विकास अधिकारी भी आयीं थीं। इस स्कूल में थाडू जनजाति के अलावा पिछड़ा जाति, अनुसूचित जाति और सामान्य जाति के बच्चे पढ़ते हैं।

स्कूल बहुत व्यवस्थित लगा। हर कक्ष में पंखे लगे थे। दीवारों पर संविधान और इतिहास संबंधी रोचक कोट्स। एक कोना बच्चों की रचनात्मक गतिविधि को समर्पित। स्कूल में स्वच्छ पेयजल के लिए आर.ओ. लगा है। अनाउंसमेंट के लिए माइक। नोटिस बोर्ड पर दो समाचार लिखे थे। एक, अमृता रावत मंत्री पद से बर्खास्त। दूसरा, आज राष्ट्रपति भवन में बैठक करेंगे मोदी. प्रत्येक कक्ष के बाहर कक्ष्याध्यापकों के नाम लिखे हुए हैं। बाहर क्यारियों में सब्जियां और फूल लगे थे। शिक्षकों ने बताया कि स्कूल के पास अब जो बड़ा सा मैदान दिख रहा है, वह पहले नहीं था। यह मैदान एस.एम.सी. के सक्रिय सदस्यों की मदद से बन सका है। स्कूल भवन की जगह पहले एक छोटा बाग था। और चारों तरफ अलग–अलग लोगों के खेत थे। लेकिन अब पूरा स्कूल चतुर्भुज के आकार में है और चहारदीवारी लग गयी है। स्कूल में ज्यादातर बच्चे साइकिल से आते हैं, लेकिन 30 प्रतिशत बच्चे पैदल भी आते हैं। स्कूल गाँव और आबादी से दूर होने के कारण शांत और सौम्य लगता है। स्कूल में बाल सरकार भी गठित है, जिसमें छात्राओं का प्रतिनिधित्व अच्छा है। इसके पदाधिकारियों में राशन मंत्री, स्वास्थ्य मंत्री, शिक्षा मंत्री आदि पद आवंटित हैं। स्वास्थ्य मंत्री ने हमें बताया कि उनका काम बच्चों को सरकारी अस्पताल से मिली वैक्सीन पिलाने का है। यहाँ प्रत्येक बच्चे को अंग्रेजी स्कूलों की तर्ज पर आईडी कार्ड दिए गए हैं।

अभिभावकों को बच्चों की प्रतिभा से परिचित कराने के लिए हेड टीचर भानु प्रकाश गुप्ता जी ने बॉक्स फाइल खोल दी। ये देखिये आपके बच्चे कितना जानते हैं। किसी ने अपने परिवार का इतिहास लिखा था तो किसी ने गाँव के भूगोल के बारे में। किसी ने गाँव की कृषि का ब्यौरा दिया था और किसी ने गाँव का सुन्दर स्केच खींचा था। सहायक अध्यापक रामनरेश मिश्र अभिभावकों को बच्चों की सुलेख की फाइल दिखाने को आतुर थे। हालाँकि मिश्र जी ने पठन–पाठन में सहयोग न करने वाले बच्चों को बुलाकर उनकी शिकायत उनके अभिभावकों से कीं। इसमें उनके बच्चों के लर्निंग लेवल की चिंता उजागर हो रही थी। उनके इस तरीके पर बहस जरूर हो सकती है। मिश्र जी हमें सगर्व बताया कि उनके सारे बच्चे (शायद चार) इसी स्कूल से पढ़े। भानु प्रकाश जी ने हमें बताया कि एस.एम.सी. अध्यक्ष संगीता जी इस बैठक में नहीं आ पा रही हैं, क्योंकि वह मजदूरी करती हैं। बैठक में न आने से वह आजीविका खो देतीं। इस संबंध में वह सहानुभूति जताते लगे।

बैठक में मौजूद पूर्व एस.एम.सी. अध्यक्ष रमेश सिंह चौहान ने कहा कि जूनियर स्कूल को फीड करने वाले प्राइमरी स्कूल की हालत ठीक नहीं। वहां से कमजोर बच्चे आगे आयेंगे तो जूनियर स्कूल उन्हें डील नहीं कर सकते। चौहान जी ने बताया कि एस.एम.सी. का दायित्व है कि वह प्राइमरी स्कूल को ठीक करने की भी जिम्मेदारी ले। उन्होंने कहा, एक ही स्कूल में सरकारी स्कूल के दो उदाहरण हैं। एक, जो अपनी गुणवत्ता के कारण लोकप्रियता हासिल कर रहा है। दूसरा, अपनी लापरवाही के कारण बदनाम है। उन्होंने चिंता व्यक्त की कि प्राइमरी स्कूल कमजोर होने से लोग अपने बच्चों को प्राइवेट स्कूलों में डाल रहे हैं। परिणाम यह होगा कि कुछ दिन बाद जूनियर स्कूल में भी बच्चे कम रह जायेंगे।

गुप्ता जी ने एस.एम.सी. के अधिकारों को बार–बार दोहराया. उन्होंने कहा, यह समिति आपकी है, यह स्कूल आपके गाँव का है। हम इस निम्मित्त माध्यम भर हैं। विभिन्न अनुदान आपके सामने हैं। आपको ही तय करना है, इसका प्रयोग कैसे किया जाय। उन्होंने सदस्यों को प्रेरित किया कि स्कूल एक बिल्डिंग भर नहीं है। यह गाँव के ज्ञान का केंद्र है। यह केंद्र

पल्लवित–पुष्पित होगा तो गाँव को नाम और सम्मान मिलेगा। गाँव के बच्चे सरकारी स्कूल में पढेंगे या प्राइवेट में जाएंगे, यह भी तो आप ही जन तय करते हैं। शिक्षकों को भी उनका दायित्व याद दिलाना आपका काम है। और जो शिक्षक अपना दायित्व निभा रहे हैं, उन्हें अकादमिक क्रियाओं में सहयोग का दायित्व भी आपका है।

गुप्ता जी ने बताया कि हम बच्चों को हमेशा होम वर्क नहीं देते. इसका मतलब यह नहीं है कि उनकी ज्ञान–क्रिया आगे नहीं बढ़ रही है। बच्चे तरह–तरह से सीखते हैं. कुछ बच्चों को हमने अपने घरों की रसोई के बारे में जानकारी लाने का काम दिया था। उससे हमें पता चला कि इस गाँव के लोग किस तरह के खान–पान के आदी हैं और उसमें कितनी विविधता है। उन्होंने महिला सदस्यों को संबोधित करते हुए कहा कि आप बच्चे को होशियार बनाने में बड़ी भूमिका निभाती हैं। यह भूमिका क्या है, यह पता चल जाने पर आप शायद और लगन से यह काम करने लगेंगी। गुप्ता ने कहा कि स्कूल घर से घर और शिक्षक माता–पिता से माता–पिता के बीच की कड़ी हैं। शिक्षा का सच ये है कि बच्चे के निर्माण में हम आपकी मदद भर कर रहे होते हैं। जो बच्चे घर से सीखकर आते हैं, वह हमारे भी ज्ञान में वृद्धि करते हैं। एस.एम.सी. की संभावनाओं को खोलते हुए उन्होंने कहा कि स्कूल में पानी की समस्या थी, आपके सहयोग से उसका निदान हुआ। एक बड़ा टैंक छत पर है। शुद्ध पेयजल, पंखे, स्कूल को मिली पर्याप्त भूमि, बाउंड्री वाल, साउंड सिस्टम यह सब ऐसे काम है जो टुकड़ों–टुकड़ों में हुए हैं। इन्हें एक साथ रखकर गिनने लगें तो समझ आएगा, हम सब सामूहिक रूप से कितने ताकतवर हो सकते हैं। इसी तरह बच्चों का अकादमिक स्तर ऊपर उठाने के लिए भी ऐसे ही प्रयास हो सकते हैं।

इस स्कूल की एस.एम.सी. इस मायने में केस–स्टडी का विषय है कि उन भावनाओं, प्रयासों और उपायों की पहचान हो सकती है, जो दूसरे स्कूलों को सुझाई जा सकती हैं। शिक्षक और एस. एम.सी. सदस्य आखिर किस मोड़ पर आकर एक तरह से सोचने लगते हैं। इस तरह से भी सोचा जा सकता है कि शिक्षक यदि समुदाय के साथ घुलेमिले हों तो समुदाय का सहयोग लेना आसान हो जाता है। अभिभावकों को यह अहसास कराना कि जो हो रहा है, वह आपके बच्चों की बेहतरी के लिए है तो वे उत्साह से सहयोग को सामने आने लगते हैं। ●

मेरी आवाज सुनो

कलावती भट्ट

अभी तो मेरी देह का आकार बाकी है,
अभी तो मुझमें श्वासों का संचार बाकी है,
अभी तो मेरे होंठों में पुकार बाकी है,
अभी तो मेरे आँखों में प्रकाश बाकी है,
अभी तो मेरी ममता का संसार बाकी है,
अभी तो तुझमें ऋण की मार बाकी है,
अभी तो मुझको जननी का वरदान बाकी है,
अभी तो मुझमे जीने का अधिकार बाकी है,
अभी तो इनको पूजूं, मेरा अरमान बाकी है,
अभी कुरीतियों से मेरा संग्राम बाकी है,
अभी मेरे भाग का सम्मान बाकी है,
अभी तो मेरी देह का आकार बाकी है,
अभी मुझे मत मार माँ अभी तो .....

राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय, भदईपुरा

अंधेरे को भेदती एक किरन...

हरेन्द्र बिष्ट

पश्चिमी काशीपुर में स्थित कचनाल गाजी प्राथमिक विद्यालय ऐसे स्कूलों में शामिल है जो ध्यानाकर्षण की मांग करता है। आँगन में आस–पड़ोस के घरों का सीवर रिसकर आ जाता है। स्कूल के ठीक पीछे मटर की प्रोसेसिंग फैक्ट्री है। अधिकतर बच्चे मजदूर परिवारों के हैं। अल्पसंख्यक, ओबीसी और घुमंतू। घर के खर्चे जुटाने को बच्चे भी मजदूरी करते हैं। बचे हुए समय में ही स्कूल आना होता है। पढ़ने–लिखने के नाम पर जो हो पाता है, वह स्कूल में ही होता है।

हाल में इस स्कूल की शिक्षिका से मिलने का मौका आया। वह यहाँ पिछले चार साल से हैं। शिक्षिका स्कूल के भीतर जो कर रहीं हैं, उसकी गूँज बाहर आ रही है। समाज में, अभिभावकों में उनके प्रयोगों और परिश्रम का चरचा है।

पहले बच्चों से मिलते हैं

नासिरा एक ऐसी बच्ची है जो पूरा एक महीना स्कूल नहीं आई। पढ़ने–लिखने में खूब रुचि लेती हैं, लेकिन स्कूल नहीं आई. घर में मालूम किया तो पता चला, नानी के घर रहती हैं। आप समझ सकते हैं, नानी के घर गयीं तो स्कूल क्यों नहीं आ पायीं। घर में काम बहुत था। सेवादार ही हो गयीं। किसी तरह से उसे दोबारा स्कूल लाया गया। अब वह नियमित स्कूल आ रही हैं। नासिरा से हमने पूछा स्कूल कैसा लगता है? बोली, 'कभी घर जाने का मन ही ना करे, मन करे रात को भी यई रैया जावें'।

सोहेल और अमित फड़ पर काम करते हैं। जब भी थोड़ा समय मिल जाता है, स्कूल चले आते हैं। अपनी मर्जी से आते हैं। टैम–बेटैम कभी भी। उन्हें भी स्कूल आना अच्छा लगता है। कहते हैं, मैडम जी का दिल बहुत बड़ा हैं। हालात समझती हैं।

आरिफ जब से छुट्टी मांगकर गया, लौट ही नहीं पाया। अब्बा जान गुजर गए। मगर वह अपने चार छोटे भाई–बहनों को पढ़ाने के लिए मजदूरी करता है और अब अभिभावक के रूप में ही सही कभी–कभार मैडम जी से मिलने चला आता है। शाहीन के पिताजी की भी असमय मृत्यु हो गयी। माँ दूसरों के घरों में चूल्हा–चौका करती हैं, मगर पगार कम पड़ने से शाहीन को हाथ बंटाना पड़ता है। बहन की शादी हो गयी तो उसका भर कुछ ज्यादा ही बढ़ गया। मैडम जी से हमारी मुलाकात के दिन ही वह परीक्षा देने अचानक स्कूल आ गयीं। मगर उसका नाम उपस्थिति पंजिका से कट चुका था। मैडम जी ने उसे आश्वस्त किया कि

वह उसकी परीक्षा लेगी, लेकिन अलग से। बांकी बच्चों के साथ ली तो वह भी खाली परीक्षा के दिन ही आएंगे। मगर शाहीन की जिजीविषा देखकर उनकी आंखें नम हो आईं।

नावेद भी मजदूरी का काम करता है। मगर उसके लिए मैडम जी से छुट्टी लेता है और छुट्टी पूरी होने पर स्कूल आ जाता है। मैडम जी ने उसे स्कूल का लायब्रेरियन बनाया है। नावेद जिन बच्चों को किताब इशु करता है, उनसे पिछली किताब के बारे में पूरा बातचीत करता है। नयी किताब तभी देता है, जब पुरानी ठीक से पढ़ी हो। 'ओए उल्लू न बनय्यो, मैंने जे किताब पूरी पढ़ी है'।

नासिरा, शिवानी और कामिनी मैडम जी के काम में पूरा हाथ बंटाती हैं। उन्हें मालूम है व्याकरण का टीएलएम कहाँ रखा है और भाषा का कहाँ। गणित के किस टीएलएम को छोटे बच्चों के लिए बनाया है। वह मेहमानों के स्कूल में आने पर चाय–पानी बिना कहे पेश करती हैं और सबसे पहले स्कूल में झाड़ू बुहारती हैं। नासिरा आपको स्कूल आना क्यूँ अच्छा लगता है? वह तपाक से जवाब देती हैं, 'मैडम जी के साथ बहुत कुछ सीखने को मिलता है'। शिवानी जोड़ती हैं, 'पढ़ने से अच्छा आदमी बनते हैं'। कामिनी हमें पढ़ने–लिखने का महत्व बताती हैं, 'पढ़ने से ज्ञान मिले है। दुनिया भर के बारे में जानने की अकल आती है।'

मैडम जी से मुखातिब होते हैं

(किरन शर्मा, हेड टीचर, राजकीय प्राथमिक विद्यालय, कचनाल गाजी, काशीपुर, उधमसिंह नगर)

इतनी बदबू क्यों है यहाँ? अभी तो गर्मी दूर है लेकिन यहाँ मक्खियाँ और मच्छर?

स्कूल के ठीक पीछे मटर की प्रोसेसिंग फैक्ट्री है। वह सारे

छिलके और गंदगी खुले खेत में फेंक देते हैं। वर्षों से वह वैसा ही पड़ा है। शुरू में दिक्कत हुई, सर चकराता था। रुमाल नाक पर रखती थी। और मच्छर–मक्खियाँ बाहर मैदान में सीवर का पानी भरने से पैदा हो जाते हैं। स्कूल गहरे में है, भरान नहीं हुआ और घर ऊंचे में हो गए हैं। स्कूल के बाहर से नाला भी गुजरता है, वह भी एक वजह है। आस–पास डेरी का भी काम होता है। और हमारे स्कूल में चूहा भी खूब उछल–कूद मचाता है। मेरे कई अच्छे–अच्छे टीएलएम खा गया, जहाँ तक इन परिस्थितियों में काम करने की बात है, वह तो हो ही रहा है। यह सब बच्चे इन्हीं हालातों में रहते हैं, दिन–रात। इन्हीं से हौंसला मिलता है। 118 बच्चे हैं मेरे स्कूल में। हम दो शिक्षक हैं और एक प्रेरक। हेड टीचर मैं हूँ लेकिन मैंने सारे कागजी काम हमारे सहायक अध्यापक शोहेल सर को दिए हैं। वह बहुत मेहनती शिक्षक हैं और ये प्रेरक मैडम भी बच्चों को खूब मन लगाकर पढ़ाती हैं। अब तो यहाँ मन रम गया है।

कब से आप यहाँ हैं? अब तक का अनुभव कैसा रहा?

2010 में हेड–टीचर के रूप में प्रमोट होकर यहाँ आई। इससे पहले बड़खेड़ा पांडे स्कूल में रही, 1996 में नौकरी में आने के समय से। बड़खेड़ा पांडे बड़ा सुन्दर स्कूल था। पहले कालागढ़ में प्राइवेट स्कूल में पढ़ाया तो था, लेकिन चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में बड़खेड़ा में ही पढ़ाना सीख पायीं। हरीश रावत, आभा जोशी, अनुकिरण जैसे शिक्षकों का साथ मिला। सब बहुत पॉजिटिव थे। वहां एक ही कक्षा में 90 बच्चे होते। हमारे टीएलएम को बड़ी सराहना मिली और हमारा स्कूल तीन बार देहरादून में हुए 'सपनों की उड़ान' कार्यक्रम में प्रतिनिधित्व कर पाया।

इस स्कूल में आई तो बहुत कम बच्चे थे, मात्र 64, बड़ी निराशा हुई। स्कूल का परिवेश भी ठीक नहीं था। आधे बच्चे स्कूल आते ही नहीं थे। स्कूल के बारे में धारणा थी कि यह लंगर की जगह है, जहाँ बच्चे बस खाना खाने आते हैं। तो पहला विचार तो यही आया कि इस धारणा को बदला जाये। यह कैसे हो? इसके लिए सबसे पहले हम ग्राम प्रधान की शरण में गए। स्कूल मैनेजमेंट कमिटी को सक्रिय किया गया। इसमें कुछ सफलता मिली। लेकिन असल चुनौती अभिभावकों का मन परिवर्तित करने की थी। वे जब तक यह नहीं मानेंगे कि उनके बच्चों का स्कूल जाना जरूरी है, काम नहीं बनना। यह बहुत कठिन काम था, जिसमें सफलता की उम्मीद बहुत कम थी। अधिकतर बच्चे माता–पिता के लिए पैसा कमाने का जरिया थे। यह मजबूरी हो सकती है उनकी, लेकिन मैं मानती हूँ कि वह अगर पढ़–लिख नहीं पाए तो

मजदूरों की अगली पीढ़ी भी निम्न–जीवन स्तर से ऊपर नहीं उठ पायेगी। फिर भी मैं और सहायक अध्यापक हर अभिभावक के दर पर गए। माताओं से भी बात की। दूसरी तरफ स्कूल बच्चों को रुचिकर लगे, आनंददायी लगे इसके लिए कई उपाय किये। बच्चे मैले–कुचैले बनकर आते थे। मैं स्कूल में कंघा, आरसी, तेल, साबुन, पाउडर सब लेकर आई। जिसकी ड्रेस फंट चुकी थी, उनको हमने अपनी जेब से पैसे लगाकर नयी ड्रेस दिलाई। यह साबित हुआ कि स्कूल बच्चों के प्रति गंभीर है। अब अभिभावक स्कूल के कामों में और किसी हद तक बच्चों की पढाई में रुचि दर्शाने लगे। आज के दिन मैं दावे के साथ कह सकती हूँ कि अधिकांश अभिभावक बच्चों को स्कूल भेजना जरूरी मानने लगे हैं। कुछ मजबूरी में नहीं भेज पाते यह भी सच है। लेकिन हमने जो ड्राइव चलाया उससे बच्चों का नामांकन 130 तक पहुँच गया।

जिस पृष्ठभूमि से बच्चे आ रहे हैं, जैसा आपने बताया, क्या उनका मन किताबों में लगता है?

मैं किताब को उन पर थोपती भी नहीं हूँ। उनका किताबों में मन नहीं लग सकता यह जाहिर है। वे मुक्त वातावरण में रहने के आदी हैं। हमारे स्कूल की प्राथमिकता पहले तो इस बात में है कि बच्चे पूरे समय स्कूल में बने रहें। हम एकदम साधारण स्कूल हैं। जिंदगी के लिए न्यूनतम और जरूरी स्किल उनमें आ जायें, पढ़ना–लिखना सीख जाएँ, तो यह उनके काम आएगा। वैसे सच ये है कि इन बच्चों में जिंदगी का बड़ा अनुभव है। ये रोज जोखिमों में रहते हैं। इनके परिवारों में लड़ाई–झगड़ा आम बात है। ये शादियों में जाते हैं, बैंड–बाजा पार्टी के साथ। धान की कटाई के समय अधिकतर खेतों में जाते हैं, अपने अभिभावकों या परिजनों के साथ। यहीं से साल भर की कमाई का जुगाड़ होता है। हम उन्हें यह काम करने से नहीं रोक सकते। और ज्यादातर बच्चे शाम को आपको चाय की दुकानों और रेहड़ियों में काम करते हुए मिलेंगे। कुछ लड़कियां घरों में काम करती हैं, झाड़ू–पोछा, बर्तन–भांडे मांजने का। आधे बच्चों के माता–पिता रिक्शा चलाते हैं, कईयों के सब्जी की ठेली लगाते हैं। कुछ के

माता–पिता बढई हैं। लेकिन हम उनके इस अर्जित अनुभव को किताबों से जोड़ने का प्रयास करते हैं। उनके अनुभवों और कष्टों को सुनते हैं, उनसे कहानियां बुनते हैं।

हमारे बच्चे टीएलएम बनाने में माहिर हैं। इनसे आप कुछ भी बनवा सकते हैं। देखिये एक बच्चा पत्थरों में एबीसीडी लिखकर ले आया। कितना शानदार है ना। आप इधर हमारी दीवारों में देखिये कुछ न कुछ मिलेगा। ये शादी के कार्ड पर क्या कमाल कर दिखाया है। और यहाँ देखिये मिट्टी के घड़े पर। हां एक उदाहरण और बताती हूँ, ये हमारी प्रेरक मैडम हैं, जिन्होंने बच्चों को बीज से लेकर पेड़ बनने तक की पूरी कहानी समझने में मदद की। स्कूल के आँगन में बीज डाला, जब वह अंकुरित हुआ तो बच्चे बहुत खुश हुए। सबने उसकी सुरक्षा का जिम्मा उठा लिया। फिर उसका तना आया, टहनियां खुलनी शुरू हुई। बच्चे बड़े कौतुहल से देखते। आप इनसे पूरा पौधा बनने की कहानी सुन सकते हैं। सब बता देंगे। जब वह सूख गया तो बड़े उदास हुए। फिर और बीज रोपे गए। और पौधे बने। यह क्यारी उसका उदाहरण है। जो पहला पौधा था, उसके फोटो यहाँ लगे हैं।

परीक्षा भी ऐसे लेने का प्रयास करते हैं कि बच्चों को पता ही न लगे। हर बच्चे के लर्निंग लेवल का ब्यौरा मेरे रजिस्टर में है। कौन कहाँ पंहुचा, कौन पीछे छूट रहा। किसे कैसी मदद चाहिए। यह सब। बड़े बच्चों को जो आता है, उसे छोटों को बताने के लिए कहते हैं। इससे उनमें आत्मविश्वास आता है। जो बच्चे पिछड़ रहे हैं, उनके लिए मैं एक कुटिया अलग से बनाना चाहती हूँ। उनमें हीन भावना न आये और वे समूह में सीख सकें। सीसीई से कई शिक्षक घबराये हुए हैं, हमारे यहाँ तो यह पहले से ही हो रहा है। हमें कोई प्रॉब्लम नहीं। अच्छा ये लग रहा कि विभाग में इस तरह के विचार आ रहे हैं।

यह जो वाटर प्योरिफाइर दिख रहा है, यह नयी चीज दिख रही सरकारी स्कूल में?

इसके पीछे एक कहानी है। कई बच्चे पानी नहीं पीते थे, जिनसे पेट की बीमारियाँ बहुत आम थीं। मैं वाटर प्योरिफाइर खरीद लायी और बच्चों से कहा, इस मशीन का पानी पीने से पेट के कीड़े गायब हो जाते हैं। बच्चे धीरे–धीरे पर्याप्त पानी पीने लगे हैं। बच्चों को टीचर के साथ बैठना अच्छा लगता है। मैं घर से यह मेज उठा लायी हूँ। पांच और टेबल बनाने का आर्डर दिया है, किताबें रखने के लिए। अभी 35 बच्चों के बैंक अकाउंट खुलवाने जाना है। स्कूल के बाद जाउंगी।

आप दिल से काम करती हैं, विभाग से कोई प्रोत्साहन नहीं, कोई गिला शिकवा ?

हैं, बहुत शिकायतें हैं। पर क्या करेंगे शिकायतें गिनवाने से? क्या हासिल होगा। हमारे स्कूल में चार शिक्षक होने चाहिए, हम दो ही हैं। बच्चों के साथ कुछ क्रिएटिव करना हो तो 30 बच्चों पर एक शिक्षक जरुरी है। देखिये मैं आज अकेली हूँ। हमारे दूसरे शिक्षक बीएलओ ड्यूटी पर हैं। पर यह चीजें वश में नहीं। हम इन पर बात करेंगे तो बहुत सारी बातें हो सकती हैं। फिर अंततः शिक्षक का काम पढ़ाना है। पढ़ाने की कोशिश करने का है। प्राथमिक शिक्षा कठिन और जटिल तो है ही। यहाँ बच्चे के जीवन का आधार तैयार होता है। हम सबसे अधिक कोशिश इस बात की करते हैं कि बच्चों में पढ़ने की लालसा पैदा हो जाय। पढ़ने–लिखने का महत्व समझ आ जाय। इनका जीवन बहुत ही कठिन है। आंसू आ जाते हैं सोचकर। पता नहीं ये यहाँ से आगे क्या करेंगे! मेरी दो बेटियां हैं, एक बीटेक कर रही देहरादून से, दूसरी बी.ए. मेरे पति आईटीआई में पढ़ाते हैं। हम दोनों पति–पत्नी इन बच्चों के बारे में सोचते रहते हैं। और कोशिश करते हैं, इनको कैसे शिक्षा के करीब लाया जाये। मैं तो हिमाचल की हूँ, ऊना जिले के धुसाडा की। एकदम नयी भूमि है मेरे लिए यहाँ उधम सिंह नगर। मगर मन लग गया है यहाँ। इन बच्चों के कारण। इनमें बहुत ललक है।

मेरा ध्यान इसी बात में लगा रहता है कि मैं इनके लिए क्या अधिकतम कर सकती हूँ। शिक्षा और वो भी प्राथमिक शिक्षा के काम में हूँ, इस बात का मुझे बहुत गर्व है। यह बहुत पवित्र काम है। बचपन में बहुत दब्बू थी। मेरी टीचर मेरी बड़ी उपेक्षा करती थी। बहुत बुरा लगता था तब। मैं आज खुद ऐसा कुछ न करूँ, जिससे कोई पौधा मुरझा जाए। देखिये मेरे स्कूल के बच्चे मुझसे कितने घुले–मिले हैं। यह मेरा परिवार है। मैं स्कूल आते हुए बड़ी खुशी महसूस करती हूँ। मुझे इन फूलों से बड़ी अच्छी खुश्बू आती है।

मीडिया की नजर से

विस्थापन का दर्द सुन छलक पड़े आंसू

बंगाली उत्सव में बिखरी समृद्ध बांग्ला संस्कृति की झलक

अमर उजाला ब्यूरो

शक्तिफार्म। अजीम प्रेमजी फाउंडेशन और किरन चंद्र मंडल बंग सेवा समिति के संयुक्त तत्वावधान में बंगाली सांस्कृतिक उत्सव का आयोजन किया गया। वक्ताओं ने विस्थापित होकर आए बंगाली परिवारों की संघर्ष गाथा बयां की तो सुनने वालों के आंसू छलक पड़े। स्थानीय लोगों ने सामाजिक, सांस्कृतिक व धार्मिक कर्मकांडों पर आधारित समृद्ध बांग्ला संस्कृति की झलकियां प्रस्तुत की।

टैगोरनगर दुर्गा मंदिर प्रांगण में आयोजित कार्यक्रम का आगाज अतिथियों ने मां सरस्वती के सम्मुख द्वीप प्रज्जवलित व पुष्प अर्पित कर किया। बंग सेवा समिति अध्यक्ष जीके मंडल ने बसावट के बाद समुदाय के लिए समर्पित सामाजिक कार्यकर्ताओं की जीवनी पर प्रकाश डाला। बंगाली कर्मचारी समिति के पूर्व प्रदेश महासचिव शंकर चक्रवर्ती ने बंग्लादेश से विस्थापित होने एवं व्यथा का व्याख्यान किया। कर्मचारी मंच के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष समीर राय ने कहा कि तत्कालीन सरकार ने बंगाली शरणार्थियों के साथ दोयम दर्जे का व्यवहार किया। अध्यक्षता करते हुए बंगाली कल्याण समिति प्रदेश अध्यक्ष तारक बाछाड़ ने अनुसूचित जाति का दर्जा न मिलने के पीछे राजनीतिक साजिश को दोषी गया। कार्यक्रम का संचाल मंडल व प्रताप दत्ता ने किए इस मौके पर फाउं दीपक पुरोहित, भास्कर कुम मंडल, अनुराग कुमार, वि सुरेश सरकार, अजीत सुधांशु सिकदार, अरविंद रा मल्लिक, निखिल हालदार, सरकार, शिवदास मजूमदा

बंगाली सांस्कृतिक महोत्सव में कार्यक्रम प्रस्तुत करते कलाक

पेज -7 दिनांक - 6/6/2013

www.jagran.com

एक नजर

उमंग का हुआ विमोचन

खटीमा : रचानात्मक लेखन कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमें बच्चों द्वारा रचित पत्रिका उमंग का विमोचन भी हुआ। थारू राजकीय इंटर कालेज में अजीम प्रेमजी फाउंडेशन की ओर से तीन दिवसीय एक कार्यशाला हुई। इसमें बच्चों द्वारा लिखी गयी मौलिक कहानी, कविताओं को लोगों ने खूब सराहा। ब्लाक समन्वयक राकेश सुमन ने कहा कि लेखन से ही हमें तमाम जानकारी मिलती है बाद में कार्यशाला में बच्चों ने लिखी पुस्तक उमं का विमोचन प्रधानाचार्य एससी वर्मा व एनएस रौतेला ने किया। इस मौके पर दिव्य प्रकाश जोशी, कुलवंत सिंह, जयशंकर, बलजीत कौर, अनम, सायरा, पीटर विश्वासी, सुजीत धीमर, समीर, नदीम, विदुशी, रोहित, साजिद अदनान, उमंग गुप्ता आदि मौजूद थे।

विचारों से मिलता है शैक्षिक ज्ञान : राटा

रुद्रपुर : प्रो. एलीजबेथ को सम्मानित करते डायट के प्राचार्य विनोद कुमार।

रुद्रपुर (एसएनबी)। शैक्षिक भ्रमण पर आई प्रो. एलीजबेथ राटा ने कहा कि शैक्षिक ज्ञान अनुभव से नहीं मिलता विचारों से मिलता है। प्रोफेसर राटा ने यह बात रुद्रपुर डायट सभागार में आयोजित एक व्याख्यान में कही।

जिला शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान और अजीम प्रेमजी फाउंडेशन के संयुक्त कार्यक्रम में 'ज्ञान और शैक्षिकी : क्या और कैसे पढ़ाया जाए' विषय पर अपना व्याख्यान देते हुए ऑकलैंड यूनिवर्सिटी न्यजीलैंड से आई

बदलाव हो रहे हैं, हम उन्हें भी जानना समझना चाहते हैं। एक दूसरे के अनुभवों को साझा करना चाहते हैं। यह आयोजन इसी प्रयास की एक कड़ी है।

कार्यक्रम की शुरुआत प्रो. राटा ने दीप जलाकर किया। अपने विशेष भारतीय सम्मान और अभिवादन को प्रो. एलिजाबेथ राटा ने विशेष तौर पर सराहा। संचालन और प्रो. राटा का स्वागत डायट की

अमर उजाला

रविवार नैनीताल | 18 मई 2014

प्राइमरी शिक्षा में सुधार क

अमर उजाला ब्यूरो

रुद्रपुर। न्यूजीलैंड की ऑकलैंड यूनिवर्सिटी की प्रो.एलिजाबेथ राटा ने कहा कि शिक्षा खासकर प्राइमरी शिक्षा में बेहतर और सार्थक सुधार की नितांत आवश्यकता है। इसके लिए प्रयास की जरूरत है। प्रो. राटा अपने शैक्षिक भ्रमण के तहत शनिवार को नगर में पहुंची थी। वह जिला शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान और अजीम प्रेमजी फाउंडेशन के संयुक्त तत्वावधान में डायट परिसर में आयोजित

शिक्षा, कैसे पढ़ाया जाए विषय पर

अमर उजाला

नैनीताल | शुक्रवार | 14 जून 2013

न्यूज डायरी

समर कैंप में बच्चों ने बनाये चित्र

बाजपुर। अजीम प्रेम जी फाउंडेशन के ब्लाक गतिविधि केंद्र राजकीय प्राथमिक विद्यालय प्रथम में समर कैंप का आयोजन किया गया। जिसमें बच्चों ने चित्र बनाए। समर कैंप का आयोजन बच्चों के मानसिक विकास के उद्देश्य से किया गया। बृहस्पतिवार को राजकीय प्राथमिक विद्यालय में पांच दिवसीय समर कैंप के दूसरे दिन बच्चों ने कहानी को सुना और उन्हें चित्र बनाए। बच्चों ने हाथों के अंगूठों से कई चित्र बनाकर उनमें रंग भी भरा। समर कैंप में अध्यापिका आशू शर्मा और मोहन लाल ने बच्चों को चित्र और कागज से फूल का निर्माण करने के टिप्स दिए। इस मौके पर आशीष, विजय पांडे, अश्वनी पाटिल, राकेश धीमान, हरेंद्र सिंह बिष्ट, पांडे, जर्फताज आदि थे।

विंटर कैंप में बच्चों

शिक्षकों को दिये रचनात्मक कार्यों के जरिए बच्चों से जुड़ने के टिप्स

बाजपुर। अजीम प्रेम फाउंडेशन के तत्वा दिवसीय विंटर किया गर

बाजपुर : मेले में कला का प्रदर्शन करते छात्र-छात्राएं।

पांडे, पंकज विश्नोई, कमर इस्लाम, मोहन लाल शाह, रेनुका, सुखवीर, संजना, निकिता, शिवानी, कपिल, सचिन आदि थे। ब्यूरो

इस बच्चों बनाने सावधानि

धीमान, इस मौके पर डायट

क्या तुम मुझको बाँध सकोगे ?

–स्वाति मेलकानी

क्या तुम मुझको बाँध सकोगे ?
ऐसे
जैसे कली बंधी है
उस पौधे से
खिलने की सभी संभावनाओं के बीच
और बंधी है नदी
धरती से
बहने की आजादी के साथ
या
पानी बंधा है नदी से
सूरज से आँख मिलाने
और बादल बनकर
उड़ जाने के साहस को
स्वयं में जिलाए हुए
और बंधा है सूरज
आसमान से
गोले में ही सही
पर
अपने स्वतंत्र अस्तित्व को समेटे हुए
क्या तुम मुझको बाँध सकोगे
दूर क्षितिज में
आसमान से बाँधा है धरती को
और दोनों के बीच
जगह बची है
जीवन के खिलने की
बहने की
उड़ने की ..

युवा कवियत्री स्वाति मेलकानी, जीजीआईसी बेतालघाट में विज्ञान शिक्षिका हैं। यह कविता उनके कविता संग्रह जब *मैं जिंदा होती हूँ* संकलन से। स्वाति का यह कविता संग्रह भारतीय ज्ञानपीठ के नवलेखन पुरस्कार के अनुशंसित है और भारतीय ज्ञानपीठ से ही प्रकाशित भी।

अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन द्वारा प्रकाशित
उत्तराखण्ड स्टेट इंस्टीट्यूट, 53 ई.सी. रोड, देहरादून-248001 (उत्तराखण्ड) फोन/फैक्स : 0135- 2659864